जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 20 संख्याः 28 प्रभात जालोर, मंगलवार 6 मई, 2025 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

'जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए सरकार को'

सेना का यह मत है, जिससे भारत की सरकार को अवगत कराया गया है

- हालांकि, सोशल मीडिया, टेलिविज़न बहस व विपक्ष का पूरा दबाव है कि भारत को जल्दी ही मजबूती से पहलगांव के बदले की कार्यवाही करनी चाहिए।
- भारतीय थल, वायु व नौसेना अध्यक्ष इस बात पर लगभग एक मत हैं, भारत की कोई भी बदले की सैन्य कार्यवाही एक दीर्घकालीन रणनीति का हिस्सा होनी चाहिए, केवल जल्दबाजी में बदले की भावना से कार्यवाही नहीं होनी चाहिए।
- रिटायर्ड ले. जनरल, सर्वजीत सिंह ढिल्लों का इस बारे में कहना है, कि, आक्रमण कब और कैसे करने का निर्णय, भावना या दबाव में नहीं लेना चाहिए।

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 5 मई। पहलगाम के घातक आतंकी हमले को दो सप्ताह हो गये। इस दौरान, देश की जनता का आक्रोश जहां दिनों-दिन बढ़ रहा है, वहीं ऐसा प्रतीत हो रहा है कि भारतीय सशस्त्र सेनाओं तथा केन्द्र सरकार ने जल्दबाजी में कोई एक्शन नहीं लेने का फैसला किया है। बताया जाता है कि इसके बजाय, वे कश्मीर में आतंकवाद को प्रेरित-पोषित करने में पाकिस्तान की कथित लिप्तता से निबटने के लिए एक व्यापक और दीर्घकालिक रणनीति पर काम कर रहे हैं।

इस हमले, जिसमें देशभर के कई निर्दोष पर्यटक मारे गये, के बाद मोदी सरकार पर बदला लेने के लिए दबाव बढ़ता ही जा रहा है। सोशल मीडिया, टेलिविजन की बहसें तथा राजनैतिक विपक्ष, बार-बार एक ही बात कह रहे हैं-जल्दी और निर्णायक कार्यवाही करो।

तथापि, उच्च स्तरीय सूत्रों के अनुसार, सरकार सभी विकल्पों का आकलन बड़ी सावधानी के साथ कर रही है तथा वह पूरी और सुस्पष्ट योजना के बिना कोई सीधी सैन्य कार्यवाही करने की जल्दबाजी में नहीं है।

पिछले पूरे पखवाड़े में, शीर्ष-स्तरीय सुरक्षा मीटिंग हुईं। बताया जाता है कि थल सेना, नौसेना तथा वायुसेना प्रमुखों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह तथा कैबिनेट कमेटी ऑन सिक्योरिटी (सी सी एस) को संभावित सैन्य एवं रणनैतिक विकल्पों के बारे में जानकारी दे दी है। इन चर्चाओं के जानकार सूत्रों का कहना है कि सैन्य नेतृत्व में इस बात, पर व्यापक सहमति है कि कोई भी कार्यवाही, तात्कालिक एवं अल्पकालीन बदले के बजाय, किसी दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा होनी चाहिए।

एक वरिष्ठ रक्षा-अधिकारी ने, उसका नाम न बताये जाने के अनुरोध के साथ, बताया, "यह तीनों सेनाओं का सर्वसम्मत विचार है कि आतंकी इन्फ्रास्ट्रक्चर को तोड़ने तथा गहरी जड़ें जमा चुके विद्रोही नैटवर्क, जो कथित रूप से पाकिस्तानी सेना तथा उसकी खुफिया एजेंसी आई एस आई द्वारा रचित एवं नियंत्रित है, को प्रभावहीन करने के लिए स्थायी एवं दीर्घकालिक प्रयासों की जरूरत है, सिर्फ एक एक्शन की नहीं।"

इन्हीं विचारों को दोहराते हुए, पुराने युद्ध-विशेषज्ञ लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत) सरबजीत सिंह ढिल्लों जोर देते हुए कहा कि सैन्य कार्यवाही समयबद्धता एवं राजनैतिक अत्यावश्यकता से निर्देशित नहीं हो सकती। ढिल्लों ने कहा, "जमीनी हकीकत के आकलन का काम सशस्त्र सेनाएं करती हैं तथा कोई भी मिशन शुरू करने से पहले, सेनाएं सभी भू-रणनैतिक तत्वों, भू भाग (टेरेन) तथा सम्पूर्ण सैन्य भंगिमा को ध्यान में रखती हैं, उन पर विचार करती हैं। -- हमले का आव्हान भावना या दबाव से निर्देशित एवं नियंत्रित नहीं हो सकता।"

रविवार को पत्रकारों से बात करते समय, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह इसी विचार के समर्थन में दिखाई दिये। सिंह ने कहा, "सरकार सभी विकल्पों को खंगाल रही है। हम भारत की जनता की भावनाओं से पूरी तरह परिचित हैं। राष्ट्र हमारे बहादुर सैनिकों के बलिदान को कभी नहीं भूलेगा। लेकिन इसके साथ ही, हम कोई भी कार्यवाही इस तरह करेंगे कि वह रणनैतिक तथा प्रभावी हो।"

भारतीय नेतृत्व की यह सजग, किन्तु दृढ़ सोच भावावेशपूर्ण कार्यवाही की बजाय, दीर्घकालिक रोग निवारण को प्राथमिक देने का संकेत देती दिखाई दे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'राजनीतिक आधार पर सरकारी वकीलों की नियुक्ति नहीं होनी चाहिए'

जयपुर, 5 मई। राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता और सरकारी वकील सहित लोक अभियोजकों की नियुक्ति में योग्यता की अनदेखी कर उनकी राजनीतिक आधार पर नियुक्ति के खिलाफ हाईकोर्ट में जनहित याचिका पेश की गई है। मुख्य न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस मुकेश राजपुरोहित की खंडपीठ ने पूनम चंद भंडारी की जनहित याचिका पर राज्य सरकार को इस मुद्दे पर पूर्व में निस्तारित अन्य याचिका में दिए आदेशों

- हाईकोर्ट में पेश जनहित याचिका में पूर्व में दिये गये आदेशों की प्रति पेश करने के लिए राज्य सरकार को निर्देश दिये गये।

की कॉपी पेश करने को कहा है।

जनहित याचिका में अधिवक्ता टीएन शर्मा ने कहा कि बीते कई सालों से राज्य सरकार की ओर से हाईकोर्ट सहित अन्य अदालतों में सरकार का पक्ष रखने के लिए राजनीतिक विचारधारा वाले वकीलों को नियुक्त किया जाता है। इनमें से कई वकील ऐसे नियुक्ति हो जाते हैं, जो वास्तव में उस पद के योग्य ही नहीं होते हैं। जिसके चलते न्यायिक प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न होती है। हाईकोर्ट पूर्व में इस संबंध में गंभीर टिप्पणी भी कर चुका है। याचिका में कहा गया कि यदि वकीलों की नियुक्ति उनकी योग्यता को ध्यान में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जयपुर पुलिस ने नीट में डमी कैंडिडेट बैठाने वाली गैंग पकड़ी

एस.ओ.जी. तथा ए.टी.एस. की इनपुट पर हुई कार्यवाही में पांच बदमाश गिरफ्तार हुए

- करणी विहार थाना पुलिस ने जगदम्बा नगर आवास स्थित एबीडी प्रिसटाईन के फ्लैट में दबिश देकर फर्जीवाड़े की फिराक में लगे आरोपियों को पकड़ा।

जयपुर, 5 मई। करणी विहार थाना पुलिस ने एक महत्वपूर्ण कार्रवाई करते हुए नीट परीक्षा में डमी कैंडिडेट बैठाने वाली गैंग का भंडाफोड़ किया और पांच बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने कार्रवाई के दौरान, इनके पास से परीक्षा के फर्जी दस्तावेज, ब्लूटूथ डिवाइस, सिम कार्ड सहित एडवांस में लिए पचास हजार रुपए भी बरामद किए। जानकारी के अनुसार, नीट परीक्षा के फर्जीवाड़े के संबंध में स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) और एंटी टेररिस्ट स्क्वॉड (एटीएस) को इनपुट मिला था। इसके बाद जयपुर पुलिस ने कार्रवाई को अंजाम दिया है। पुलिस की प्रारम्भिक जांच में सामने आया कि डमी के रुप में परीक्षा में बैठने वाला कैंडिडेट एमबीबीएस फर्स्ट ईयर का स्टूडेंट है। इसके अलावा अन्य दो आरोपी भी मेडिकल के स्टूडेंट हैं।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) अमित कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी नई दिल्ली की ओर से नीट यूजी परीक्षा-2025 का आयोजन रविवार दोपहर 2 बजे से 5 बजे तक हुआ था। पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि करणी विहार इलाके के जगदम्बा नगर धावास स्थित एबीडी प्रिसटाईन के फ्लैट में तीन-चार लड़के रहते हैं और वे नीट में फर्जीवाड़ा करने की फिराक में हैं। इस पुलिस टीम ने फ्लैट पर दबिश देकर अजीत कुमार बराला (26) निवासी चिमनपुरा चौमूं, जयपुर, सोहन लाल चौधरी (26) निवासी कुशलपुरा सामोद, जिला जयपुर और जितेन्द्र शर्मा (24) निवासी बिचपडी हरमाड़ा, जयपुर सहित, असली कैंडिडेट्स रोहित गोरा (20) निवासी मंगलम सिटी चौमूं, जयपुर और संजय चौधरी (19) निवासी गोविंद देवजी का रादा सामोद, जिला जयपुर को गिरफ्तार किया। पुलिस ने इनके पास से तीन ब्लूटूथ, दो इयरबड, मोबाइल, चार सिमकार्ड,पचास हजार रुपए और स्कॉर्पियो गाड़ी बरामद की।

पुलिस पूछताछ में सामने आया कि आरोपी सोहन और अजीत फर्जी तरीके से परीक्षा में पास कराने के लिए पैसे लेते हैं। डमी कैंडिडेट के तौर पर जितेन्द्र को तैयार किया गया है। इसके लिए डमी कैंडिडेट की फोटो एआई टूल से एडिट की गई। उसी फोटो को फॉर्म पर लगाया जाता है। वहीं, अजीत और सोहन ने जितेन्द्र को 4 मई को हुए नीट परीक्षा में रोहित गोरा की जगह और 27 मई को होने वाली पैरा मेडिकल एग्जाम में संजय की जगह डमी कैंडिडेट के रूप में तैयार किया था। पुलिस ने जितेन्द्र के कब्जे से फेक एडमिट कार्ड और एडवांस के तौर पर दिए 50 हजार रुपए बरामद किए हैं। जितेन्द्र कोप्पल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस कर्नाटक में एमबीबीएस फर्स्ट ईयर का स्टूडेंट है। उसका चयन 2024 में हुआ था। सोहन और अजीत राष्ट्रीय आयुर्वेदिक संस्थान (एनआईए) जोरावर सिंह गेट जयपुर से पीजी कर रहे हैं और दोनों जगदम्बा नगर स्थित फ्लैट लेकर साथ रहते हैं। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

'अपने चैनल पर पाकिस्तानी नागरिकों को आमंत्रित न करें'

द इण्डियन डिजिटल ब्रॉडकास्टिंग एसोसिएशन ने भारतीय ब्रॉडकास्टर्स व प्लेटफार्म को सलाह दी

- रजत शर्मा, जो कि एक जाने-माने टेलीविजन एंकर हैं, वर्तमान में इस डिजिटल ब्रॉडकास्टिंग के अध्यक्ष हैं, तथा सरकार के नज़दीकी माने जाते हैं, वैचारिक दृष्टि से।

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 5 मई। इंडियन डिजिटल ब्राडकॉस्टिंग एसोसिएशन (आई डी बी ए), जो भारतीय टीवी चैनलों, डिजिटल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स का प्रतिनिधि संगठन है, तथा जिसके प्रमुख रजत शर्मा हैं, ने इंडियन ब्रॉडकास्टर्स व सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के लिए एडवायजरी जारी की है कि पाकिस्तानी मेहमान को चर्चा के लिए न बुलाएं, खासकर अगर वह भारत विरोधी है तो आई डी बी ए के अधिकृत बयान के अनुसार, यह एडवायज़री सूचना व प्रसारण मंत्रालय के निर्देशानुसार मौजूदा स्थिति में सुरक्षा हालात व जनभावनाओं पर आधारित है।

पर्यवेक्षकों के अनुसार, यह एडवायज़री पाकिस्तान के विशेषज्ञों, यहां तक कि तटस्थ लोगों पर भी प्रतिबंध लगाने की दिशा में पहला कदम है। दिल्ली के एक इंडिपैंडेंट मीडिया सर्कल ने कहा, ऑनलाइन जर्नलिज्म के इस युग में ऐसे प्रतिबंध व्यवहार्य नहीं है क्योंकि फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और ए आई पावर वाली ऐसी सामग्रियां हैं, जिन पर पारंपरिक तरीके से प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता है।"

यह एडवायज़री भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव की वजह से जारी की गई है। भारत सरकार द्विपक्षीय संबंध तोड़ने की दिशा में पहले ही कई कदम उठा चुकी है, जिसमें सिंधु का पानी रोकना और व्यापार प्रतिबंध शामिल किए गए हैं। पता चला है कि अप्रत्यक्ष व्यापार व बैक चैनल ट्रेड के रास्ते भी बंद कर दिए गए हैं।

आलोचकों का तर्क हैं कि मीडिया एडवायज़री का उद्देश्य केवल विदेशी भागीदारी को रोकना ही नहीं, बल्कि स्थानीय असंतोष पर भी कड़ा नियंत्रण करना है। एक वरिष्ठ संपादक, जो मोदी सरकार के प्रति आलोचनात्मक रुख के लिए जाने जाते हैं, ने इस कदम के समय व इरादे पर सवाल उठाया और कहा, हमें नहीं पता इससे कौनसा खतरा कम होगा, यह कदम सामरिक की बजाय, सांकेतिक ज्यादा है।

आई डी बी ए के अध्यक्ष रजत शर्मा जाने-माने एंकर हैं और सत्तारूढ़ पार्टी के निकट माने जाते हैं। यह निर्देश प्रसारित करने में उनकी भूमिका को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एस.आई.भर्ती : 15 तक सरकार निर्णय ले, वरना कोर्ट तय करेगी

जयपुर, 5 मई। राजस्थान हाईकोर्ट ने एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में भर्ती के अस्तित्व को लेकर राज्य सरकार को अपना रुख स्पष्ट करने के लिए अंतिम मौका देते हुए मामले की सुनवाई 15 मई को रखी है। अदालत ने कहा कि यदि राज्य सरकार ने कोई फैसला नहीं दिया तो अदालत पक्षकारों को सुनकर अपने स्तर पर निर्णय देगी। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश कैलाश चन्द्र शर्मा व अन्य की

- जस्टिस समीर जैन ने पेपर लीक से हुई भर्ती पर राज्य सरकार को रूख स्पष्ट करने का अन्तिम मौका दिया।

ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान अतिरिक्त महाधिवक्ता विज्ञान शाह ने अदालत को बताया कि भर्ती पर निर्णय करने के संबंध में किन्हीं कारणों से मीटिंग नहीं हो पाई है। अब सब कमेटी की यह मीटिंग 13 मई को होनी है। ऐसे में राज्य सरकार को अपना रुख स्पष्ट करने के लिए समय दिया जाए। वहीं ईडी की ओर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राज्य भंडारण निगम ने श्री शुभम लॉजिस्टिक और सहायक कंपनी के खिलाफ चल रहे मामले में "सोल आरबिट्रेटर" को हटाने की याचिका दायर की

राज्य भंडारण निगम का इन दोनों कंपनियों के खिलाफ 202 करोड़ रुपये के दावे का मामला "आरबिट्रेशन" में है

- सोल आरबिट्रेटर को हटाने के मामले में दायर याचिका में राज्य भंडारण निगम का कहना है कि सेवा निवृत्त पूर्व न्यायाधीश के.एस.सिंह को एक ही वर्ष में, एक ही मामले से जुड़ी पार्टियों के बीच सात मामलों में "सोल आरबिट्रेटर" नियुक्त किया गया।
- जबकि नीति यह है कि दो कंपनियों या दो व्यक्तियों के बीच चल रहे सिर्फ दो मामलों में ही एक व्यक्ति विशेष को सोल आरबिट्रेटर बनाया जा सकता है।
- उल्लेखनीय है कि के.एस.राठौड़ ने मध्यस्थता के लिए नियुक्त होने से पूर्व दिये गये "डेक्लेरेशन" (कानूनी घोषणा) में भी इस तथ्य को उजागर नहीं किया।

- यादवेन्द्र शर्मा -

जयपुर, 5 मई। राजस्थान राज्य भण्डारण निगम ने श्री शुभम लॉजिस्टिक और उसकी सहायक कम्पनी ओरिगो कमॉडिटीज़ इण्डिया के विरूद्ध चल रहे "आरबिट्रेशन", यानि मध्यस्थता के मामले में, नियुक्त "सोल आरबिट्रेटर" (मध्यस्थता करने के लिए नियुक्त एक मात्र अधिकारी) सेवानिवृत पूर्व न्यायाधीश के.एस. राठौड़ को हटाने और किसी अन्य रिटायर्ड जज या कानून के विशेषज्ञों को नियुक्त करने के लिए वाणिज्यिक कोर्ट में याचिका दायर की है। राजस्थान राज्य भण्डारण निगम ने अपनी याचिका में कहा है कि के.एस. राठौड़ श्री शुभम लॉजिस्टिक और आरिगो कमॉडिटीज़ इण्डिया बनाम राज्य भण्डारण निगम के बीच चल रहे सात विवादों में "सोल आरबिट्रेटर" नियुक्त किये जा चुके हैं, जबकि नीति और नियम कहता है कि एक व्यक्ति विशेष को दो कंपनियों या व्यक्तियों के बीच चल रहे सिर्फ "दो" मामलों में ही सोल आरबिट्रेटर नियुक्त किया जा सकता हैं।

भण्डारण निगम का कहना है कि नीति और नियम के विरूद्ध नियुक्त किये गये "सोल आरबिट्रेटर" को हटाने के संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की बैंच ने ऐतिहासिक फैसला दिया है, और यह फैसला मध्यस्थता कर रहे व्यक्ति विशेष की योग्यता और इसकी प्रक्रिया व संचालन निष्पक्ष रखने की दृष्टि से दिया गया है।

जैसा कि विदित है कि पिछली गहलोत सरकार के कार्यकाल के दौरान राजस्थान राज्य भण्डारण निगम और श्री शुभम लॉजेस्टिक तथा उसकी सहायक कम्पनी ओरिगो कमॉडिटीज़ इण्डिया के बीच कृषि उपज के भण्डारण के संबंध में हुए अनुबंधन को लेकर भारी भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर पिछले एक वर्ष से खबरें सुर्खियां बटोर रही हैं। इस मामले में कृषि मंत्री किरोडी लाल मीणा ने मुख्यमंत्री भजन लाल को शिकायती पत्र

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

महाकाल मंदिर में आग

उज्जैन, 05 मई। मध्यप्रदेश के उज्जैन में स्थित बाबा महाकाल मंदिर परिसर में आज दोपहर अचानक आग लग गयी, जिसे दमकल वाहनों ने मौके पर पहुंचकर काबू में ले लिया।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, दोपहर लगभग 12 बजे महाकाल मंदिर के गेट नंबर एक पर आग की लपटें उठीं और देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। इस घटना से पूरे मंदिर

- सोमवार दोपहर 12 बजे उज्जैन के महाकाल मंदिर के गेट नम्बर एक पर आग लग गई। आग की वजह शॉर्ट सर्किट बताई जा रही है।

परिसर में हड़कंप मच गया। घटना की सूचना पर मौके पर पहुंचे दमकल वाहनों ने घटना के कुछ देर बाद आग पर काबू पा लिया। बताया गया है कि महाकाल मंदिर में बने फैसिलिटी सेंटर के पास प्रदूषण बोर्ड का कंट्रोल रूम है। यह कंट्रोल रूम मंदिर के गेट नंबर एक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आई.एम.एफ. के आंकलन के अनुसार भारत की इकॉनमी, जापान से आगे निकल जायेगी 2025 में

अगर यह ट्रैंड जारी रहा, तो आई.एम.एफ. के अनुसार, 2028 में, भारत की इकॉनमी जर्मनी से भी आगे निकल जायेगी

- भारत के पक्ष में सबसे बड़ी बात यह है कि, भारत की इकॉनमी, अन्य देशों की भांति, "निर्यात" पर निर्भर नहीं है, बल्कि उसकी स्वयं की आतंरिक (इन्टरनल डिमांड) खपत इतनी है कि ट्रम्प की टैरिफ नीतियों का भी उस पर उतना प्रभाव नहीं पड़ा, जितना अन्य देशों पर पड़ा। और ये देश "टैरिफ वॉर" की मार से तिलमिला गये हैं।
- यह बात अलग है कि, 2028 में संभावना है कि भारत की इकॉनमी 5.5 ट्रिलियन डॉलर होकर, जर्मनी की 5.2 ट्रिलियन की इकॉनमी से आगे निकल जायेगी। पर फिर भी, अमेरिका की 30 ट्रिलियन डॉलर की इकॉनमी व चीन की 14 ट्रिलियन डॉलर की इकॉनमी से काफी पीछे है।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 मई। डॉनल्ड ट्रंप की टैरिफ -युद्ध नीतियों के कारण जब दुनिया आर्थिक उथल-पुथल के दौर में प्रवेश कर रही है, ऐसे में कहा जा रहा है कि 2025 में भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ) ने अपनी "वर्ल्ड इकनॉमिक आउटलुक 2025" रिपोर्ट में अनुमान लगाया है कि भारत इस वर्ष जापान को पीछे छोड़ देगा और 4.187 ट्रिलियन डॉलर की जी.डी.पी. के साथ दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

आई.एम.एफ. की यह रिपोर्ट आगे बताती है कि सन् 2028 तक भारत की अर्थव्यवस्था 5.5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँच जाएगी, जो कि उस वर्ष जर्मनी की 5.2 ट्रिलियन डॉलर जी.डी.पी. से अधिक होगी। इस तरह 2028 में भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा, यदि वर्तमान विकास दर जारी रही। भारत यह उपलब्धि इसलिए भी हासिल कर पा रहा है क्योंकि उसकी अर्थव्यवस्था अन्य प्रमुख देशों की तुलना में निर्यात पर कम निर्भर है।

यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है, क्योंकि 2010 में भारत विश्व की दसवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था। हालांकि, यह ध्यान रखना जरुरी है कि अमेरिका की जी.डी.पी. 30 ट्रिलियन डॉलर से अधिक और चीन की 14 ट्रिलियन डॉलर है। ऐसे में भारत को चीन से मुकाबला करने में अभी लंबा समय लगेगा, अमेरिका की तो बात ही अलग है।

तथापि, वर्तमान विकास दर को देखते हुए, आने वाले कुछ दशकों में भारत दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है।

जहाँ, कई देश अमेरिका की रैसिप्रोकल (जवाबी) टैरिफ पॉलिसीज़ के कारण गंभीर आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं, भारत अब तक अपेक्षाकृत अप्रभावित रहा है। चीन सहित, कई देशों की अमेरिकी बाजार पर निर्भरता भारत की तुलना में कहीं अधिक है, जिससे वे अधिक प्रभावित हुए हैं।

यह स्थिति वैश्विक फंड मैनेजरों और निवेशकों का ध्यान भारत की ओर खींच रही है, और अब वे भारत को एक "सुरक्षित ठिकाने" के रुप में देखने लगे हैं। इसके परिणामस्वरुप भारतीय वित्तीय बाजार भी लगातार ऊँचाइयों को छू रहे हैं। भारत को लेकर लगातार सकारात्मक खबरों के बीच यह जरुरी है कि कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा किए गए आतंकी हमलों के प्रति जवाबी रणनीति को सोच-समझकर तैयार किया जाए, ताकि देश किसी लम्बी और थकाऊ लड़ाई में न उलझे।

पाकिस्तान के आतंकी हमलों के प्रति आकस्मिक व बिना सोची समझी प्रतिक्रियाएं भारत की आर्थिक स्थिति और नीतिगत वातावरण को प्रभावित कर सकती हैं। एक लंबा युद्ध न केवल इन्फ्लेशन (महंगाई) बढ़ाएगा, बल्कि इससे निपटने के लिए कठोर मौद्रिक उपाय भी अपनाने पड़ सकते हैं। लंबे युद्ध से देश के वित्तीय साधन तितर-बितर होंगे, इससे "फिस्कल कन्सॉलिडेशन" को भी धक्का लगेगा तथा वित्तीय नीतियों में ऐसे परिवर्तनों से भारत में जो उछाल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्रदेश में लू से निपटने का एक्शन प्लान दें

जयपुर, 5 मई। राजस्थान हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को प्रदेश में लू के हालातों से निपटने के लिए बनाए गए एक्शन प्लान की जानकारी देने को कहा है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में केन्द्र सरकार सहित अन्य से जवाब पेश करने को कहा है। चीफ जस्टिस एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस मुकेश राजपुरोहित की खंडपीठ ने यह आदेश

- हाईकोर्ट ने राज्य सरकार से एक्शन प्लान की जानकारी देने को कहा।

प्रकरण में लिए गए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर सुनवाई करते हुए दिए। वहीं अदालत ने समान बिंदु पर एकलपीठ की ओर से गत दिनों लिए प्रसंज्ञान को रद्द कर दिया। अदालत ने कहा कि जब मामले में स्वप्रेरित प्रसंज्ञान लेकर मामला खंडपीठ में सुनवाई के लिए भेजा गया है तो उस विषय पर पुनः स्वप्रेरित प्रसंज्ञान लेने का कोई औचित्य नहीं है।

सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

अज्ञान जैसा शत्रु दूसरा नहीं। –चाणक्य

विपक्ष सरकार के साथ है, लेकिन सरकार कहां है?

पहलगाम की जघन्य आतंक वादी घटना के बाद देश के सभी विपक्षी दलों ने लगातार यह बयान दिए हैं कि वे हत्यारे आतंकवादियों और पाकिस्तान के विरुद्ध कड़ी से कड़ी कार्रवाई करने में पूरी तरह सरकार के साथ खड़े हैं। विपक्ष, विशेषकर राहुल गांधी ने, प्रेस कांफ्रेंस के जरिए यह बात दोहराई है कि देश, सरकार द्वारा की जाने वाली कार्यवाही की प्रतीक्षा कर रहा है। इस प्रकार की एकता राजनीतिक दलों के मध्य बहुत कम ही दिखाई देती है ।

एक ओर जहां विपक्ष पूरी तरह सरकार के साथ खड़ा है, वहीं आश्चर्य की बात है कि सरकार ने इस घटना के 12 दिन बाद भी आतंकवादियों के विरुद्ध कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं की है। केवल प्रधानमंत्री के बयान ही आए हैं, जहां उन्होंने कहा है कि वे आतंकवादियों को और आतंकवादियों के आकाओं को पृथ्वी के किसी भी कोने से ढूंढ निकालेंगे और उन्हें मिट्टी में मिला देंगे। यदि बयानों के आधार पर आतंकवाद समाप्त हो जाता, तो अब तक शायद कभी का हो चुका होता।

भारत ने सिंधु जल समझौते को एक तरफा स्थगित करके पाकिस्तान पर दबाव बनाने का प्रयास किया है, लेकिन उसका भी धरातल प्रभाव कुछ वर्षों बाद ही दिखाई देगा। दोनों ही देशों ने अपने उच्चायोगों में स्टाफ को आधा कर दिया। दोनों ने अपने-अपने हवाई क्षेत्र में एक दूसरे की वायु उड़ानों को प्रतिबंधित कर दिया। सभी पाकिस्तानी नागरिकों को भारत में एक निश्चित समय सीमा में भारत छोड़ने और पाकिस्तान जाने के आदेश दे दिए हैं। पाकिस्तान ने भी इसी प्रकार भारतीयों को पाकिस्तान छोड़ने के लिए कह दिया है। इन सब कदमों से जनता संतुष्ट नहीं दिखाई दे रही है। जनता चाहती है कि आतंकवादियों को पकड़ कर उनके नेटवर्क को नेस्तनाबूत किया जाए।

इस प्रकार की घटना होने के संबंध में कई पूर्व सैन्य अधिकारियों और विपक्षी दलों द्वारा सुरक्षा में चूक का प्रश्न उठाया गया एवं जांच की बात की गई, तो यह सरकार को पसंद नहीं आया। हद तो तब हो गई, जब कई प्रमुख सोशल मीडिया चैनलों को सरकार ने अपने अधिकारों का प्रयोग करके प्रतिबंधित कर दिया। इससे पूर्व उन्हें नोटिस तक नहीं दिया गया। इनमें 4 पीएम चैनल प्रमुख है जिसे लाखों लोग देखते हैं। जब लोकगायिका नेहा सिंह राठौड़ ने सरकार द्वारा सुरक्षा में चूक होने की बात कही और घटना स्थल पर किसी भी प्रकार के सुरक्षा बलों की अनुपस्थिति पर प्रश्न उठाए तो उत्तर प्रदेश में उन पर एफ आई आर दर्ज करा दी गई। सरकार को ऐसा लगने लगा कि सुरक्षा में कमियों की बात उठाकर लोगों ने देशद्रोह किया है। वास्तव में देशद्रोह तो वह है जिसके चलते, सुरक्षा व्यवस्था में ढिलाई बरती गई और जहां 2000 पर्यटक जाते हों ,वहां कोई सुरक्षा की व्यवस्था नहीं हो । कहा गया है 'समरथ को नहीं दोष गोसाई'। राष्ट्रीय मीडिया पर तो सरकार का एक प्रकार से एकाधिकार है । वही खबरें चलाई जाती हैं जो सरकार का गुणगान करें। सोशल मीडिया के कुछ साहसी पत्रकार अवश्य बार-बार सरकार से सवाल पूछ रहे हैं किंतु कहीं से उत्तर नहीं मिल रहा है।

सामान्यतया, प्रधानमंत्री जी छोटी से छोटी घटना पर देश को संबोधित कर देते हैं, किंतु कई गत कई वर्षों की सबसे बड़ी आतंकवादी घटना के संबंध में प्रधानमंत्री जी ने नागरिकों को अभी तक संबोधित नहीं किया है। जब प्रधानमंत्री सऊदी अरब की यात्रा बीच में छोड़कर आए थे तो लगा था कि वे कश्मीर जाएंगे तथा उन परिवारों से भी मिलेंगे जिनके परिजनों ने इस आतंकवादी घटना में अपने प्राण गंवाए। ऐसा कुछ नहीं हुआ । इस दर्दनाक घटना के दो दिन बाद ही, प्रधानमंत्री चुनावी रैली को संबोधित करने बिहार पहुंच गए। उस रैली में नीतीश कुमार के साथ हंसी मजाक करते हुए उनका वीडियो खूब वायरल हुआ। उस समय तक तो शहीदों का अंतिम संस्कार भी नहीं हुआ था। यह दृश्य, मृत पर्यटकों के परिजनों के घाव पर नमक छिड़कने जैसा ही था।

इसके बाद प्रधानमंत्री ने मुम्बई में 'वेव्स' (world Audio Visual and Entertainment Summit) नाम से आयोजित एक कार्यक्रम में कई घंटे बिताए, जिसमें देश और विदेश की कई फिल्मी हस्तियों ने भाग लिया। प्रधानमंत्री से, जब देश यह अपेक्षा कर रहा था कि पहलगाम की घटना की गंभीरता को देखते हुए उनकी ओर से कोई वक्तव्य आएगा, वहीं मनोरंजन के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री का इतने लंबे समय तक उपस्थित रहना देशवासियों को अच्छा नहीं लगा । क्या प्रधानमंत्री इतने संवेदनहीन हो गए हैं?

बात केवल यहीं पर नहीं रुकी। सरकार के मुखिया के तौर पर प्रधानमंत्री जी गौतम अडानी के साथ केरल में आयोजित एक समारोह में देखे गए, जहां अडानी के बंदरगाह का उद्घाटन प्रधानमंत्री जी ने किया। वहां भी वह विपक्ष पर कटाक्ष करना नहीं भूले और यहां तक कह दिया कि इस कार्यक्रम में शशि थरूर आने से विपक्षियों की नींद उड़ गई होगी। प्रधानमंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद पर विराजमान व्यक्ति के द्वारा इस प्रकार की हल्की भाषा का उपयोग कतई उपयुक्त नहीं है, विशेष कर ऐसे संवेदनशील समय में, जब पूरे देश में पहलगाम की आतंकी घटना के बाद भयंकर आक्रोश है ।

आश्चर्य का विषय तो यह भी है की सारी तकनीकी प्रगति के बावजूद, अभी तक सरकार चार आतंकी जो इस घटना में सम्मिलित थे, का कोई पता नहीं लगा पाई है। सरकार की ओर से यह कहा गया था कि आतंकियों के डिजिटल फुटप्रिंट, जांच एजेंसी एन आई ए को प्राप्त हो गए हैं जिसके आधार पर उन्हें ढूंढ निकालना आसान होगा। घटना के 12 दिन बाद भी, अभी तक चारों आतंकवादी सरकार की पहुंच से बाहर हैं । क्या यह सरकार के लिए शर्म की बात नहीं है? क्या प्रधानमंत्री जी भूल गए कि कैसे वे प्रत्येक आतंकवादी घटना के बाद तत्कालीन सरकार और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह पर शक प्रकट करते हुए तंज़ कसते थे? आज का विपक्ष कम से कम, सरकार के साथ पूरी तरह खड़ा तो है। जब विपक्ष अपनी भूमिका जिम्मेदारी के साथ निभा रहा है तो सरकार क्यों जिम्मेदारी से भाग रही है और देश का ध्यान भटकाने का काम कर रही है?

अब भी, सरकार को अविलंब देशवासियों के समक्ष यह स्पष्ट करना चाहिए कि यह घटना क्यों हुई और अब तक आतंकवादी क्यों नहीं पकड़े गए हैं? पाकिस्तान के विरुद्ध कार्रवाई में क्या अमेरिका का दबाव काम कर रहा है? अमरिकी दबाव को मानने का कारण कहीं गौतम अडानी के विरुद्ध अमेरिका में चल रहे न्यायिक कार्रवाई में वहां की सरकार से सहायता प्राप्त करना तो नहीं है?

सरकार द्वारा अब तक पाकिस्तान के आतंकियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही नहीं किए जाने के पीछे, कहीं अमेरिका का दबाव तो नहीं है? अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जिन्हें प्रधानमंत्री मोदी अपना व्यक्तिगत मित्र बताते हैं, ने तो यहां तक कह दिया कि भारत और पाकिस्तान को मिल बैठकर शांति के प्रयास करना चाहिए ताकि सीमा पर किसी प्रकार का तनाव न बढ़े। क्या प्रधानमंत्री जी देश के आक्रोश की परवाह किए बिना अमेरिका द्वारा दी गई सलाह को मान रहे हैं? पाठकों को यह पता होगा कि एक बार पहले भी अमेरिका ने भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता की बात कही थी। उल्लेखनीय है कि भारत ने कभी इस प्रकार के प्रयासों को स्वीकार नहीं किया और सदैव सिरे से खारिज कर दिया है ।

आश्चर्य की बात तो यह है कि जो मीडिया चैनल सरकार को उसकी जिम्मेदारी याद दिला रहे हैं, वह उन्हीं पर प्रतिबंध लगा रही है। वह उन व्यक्तियों पर भी एफआईआर दर्ज करके उनके विरुद्ध कार्रवाई कर रही है, जो सरकार की नाकामियां गिना रहे हैं और जिम्मेदारी याद दिला रहे हैं। क्या नागरिकों को यह जानने का अधिकार नहीं है कि आतंकवादी अभी तक पकड़े क्यों नहीं गए एवं यह घटना किस प्रकार संभव हो पाई? क्या गृहमंत्री अमित शाह ने बार-बार यह आश्वासन नहीं दिया था कि कश्मीर में सुरक्षा पूरी तरह चाक चौबंद है और वहां पर स्थिति सामान्य है? इसी विश्वास के सहारे पर्यटक इतनी बड़ी संख्या में कश्मीर जाने लगे थे । उन्हीं में से 26 लोगों ने इस घटना में अपनी जान गंवा दी ।

सत्ताधारी दल के कई नेता, विपक्षी दलों पर यह आरोप लगा रहे हैं कि सरकार से सुरक्षा में चूक के बारे में प्रश्न पूछ कर वे, एक प्रकार से पाकिस्तान की सहायता कर रहे हैं। यह विचित्र बात है, क्योंकि अपनी सरकार से प्रश्न पूछना, किसी भी शत्रु देश की सहायता करना किस प्रकार हो सकता है? मारे गए व्यक्तियों के परिवार भी बार-बार यह कह रहे हैं कि सुरक्षा में चूक क्यों हुई? यदि वहां पर सुरक्षा बल होता तो उनकी जान बच जाती ।

जब देश, प्रधानमंत्री से पहलगाम की घटना के बदले की प्रतीक्षा कर रहा था, तभी अचानक एक सरकार के प्रवक्ता कैबिनेट मंत्री अश्विनी वैष्णव ने यह घोषणा कर दी कि केंद्र सरकार आगामी जनगणना के साथ ही जातिगत जन गणना भी करवाएगी। न केवल यह, उन्होंने इसका पूरा श्रेय सत्ताधारी दल को देते हुए इसे सरकार का ऐतिहासिक कदम बताया। इसी प्रकार की बात सत्ताधारी दल के अन्य सभी नेता भी करने लगे हैं। जो लोग अब तक जातिगत गणना की मांग करने वालों को पानी पी-पी कर कोस कर रहे थे, वे ही अब जातिगत गणना के निर्णय की प्रशंसा करते नहीं थक रहे हैं। पाठकों के लिए यह जानना दिलचस्प होगा कि गत कई वर्षों से जब राहुल गांधी जातिगत जनगणना की बात पुरजोर ढंग से संसद एवं बाहर उठा रहे थे, भाजपा के नेता इसका घोर विरोध करते रहे थे । प्रधानमंत्री मोदी ने तो एक पॉडकास्ट में जाति गत जनगणना की मांग करने वालों को 'अर्बन नक्सल' तक कह दिया था। भाजपा के प्रमुख नेता नितिन गडकरी ने तो एक सार्वजनिक भाषण में यहां तक कह दिया "जो करेगा जाति की बात, उसे मारूंगा कस कर लात"। ऐसी पृष्ठभूमि में अचानक जाति गत जनगणना का निर्णय लेना सबको आश्चर्यचकित करने वाला है । ऐसा लगता है कि इस निर्णय से, पहलगाम की घटना से, देश का ध्यान भटकाने का प्रयास तो नहीं किया गया है ?

हम इस लेख में जातिगत जनगणना के गुणवगुण पर विचार नहीं कर रहे हैं, बल्कि यह कहना चाह रहे है कि जाति गत जनगणना की बात करने वालों को अर्बन नक्सल की संज्ञा देने वाले अचानक जातिगत जनगणना की बात क्यों करने लगे? हमारे नेता शायद यह मानकर चलते हैं कि यहां के देशवासियों की याददाश्त बहुत कमजोर है और उन्हें कुछ नहीं पता कि कुछ दिन पहले वे इसी विषय पर क्या कह रहे थे? हां, यह अवश्य है कि इसका राजनीतिक लाभ बिहार के आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा लेने का प्रयास करेगी।

अब भी, सरकार को अविलंब देशवासियों के समक्ष यह स्पष्ट करना चाहिए कि यह घटना क्यों हुई और अब तक आतंकवादी क्यों नहीं पकड़े गए हैं? पाकिस्तान के विरुद्ध कार्रवाई में क्या अमेरिका का दबाव काम कर रहा है? अमरिकी दबाव को मानने का कारण कहीं गौतम अडानी के विरुद्ध अमेरिका में चल रहे न्यायिक कार्रवाई में वहां की सरकार से सहायता प्राप्त करना तो नहीं है?

यह कभी कभार ही होता है, जब पूरा विपक्ष मजबूती के साथ सरकार के साथ खड़ा हो, किंतु सरकार अपने कर्तव्य से विमुख होती हुई दिखाई दे ।

समय रहते सरकार को, विशेष कर प्रधानमंत्री जी को अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय देते हुए यह सिद्ध करना चाहिए कि वे किसी विदेशी दबाव के आगे झुकने वाले प्रधानमंत्री नहीं हैं, चाहे वह अमेरिका ही क्यों न हो?

फिलहाल तो देश वासी एक ही सवाल पूछ रहे हैं, "विपक्ष तो सरकार के साथ है, पर सरकार कहां है?"

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

"कार्ल मार्क्स और वर्तमान दुनिया"

कार्ल मार्क्स जयंती के अवसर पर....

डॉ. रमेश बैरवा

5 मई को विश्वविख्यात क्रांतिकारी चिंतक कार्ल मार्क्स का जन्मदिन मनाया गया। ऐसे मार्क्स जिन्हें बीबीसी ने सहस्त्राब्दी का सबसे प्रभावशाली दार्शनिक माना है। जिन्होंने साम्यवाद का आदर्श दुनिया के सामने रखा। ऐसा साम्यवाद जिसमें निजी संपति के पूर्ण उन्मूलन के साथ समाज वर्गविहीन, राज्यविहीन हो जाता है। जहां विषमता, भेदभाव, बेरोजगारी, जाति, जेंडर, धर्म, रंग-रूप, भाषा, राष्ट्र के आधार पर लोगों में वैमनस्य नहीं रहता। हर प्रकार के शोषण,अन्याय से समाज मुक्त हो जाता है। मजदूर, मेहनतकशों के शोषण और प्राकृतिक संसाधनों के बेरहमी से दोहन पर आधारित मुनाफे से संचालित पूंजीवादी समाज के स्थान पर साम्यवादी समाज की स्थापना होगी जो "एक ऐसा संघ होगा, जिसमें प्रत्येक का स्वतंत्र विकास सभी के स्वतंत्र विकास की शर्त होगी।"

ऐसे कार्ल मार्क्स का जन्मदिवस है जिन्होंने सबसे पहले मानव समाज के विकास के नियमों की वैज्ञानिक व्याख्या की। द्वंदात्मक भौतिकवाद का दर्शन दिया जिसके आधार पर इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या की। वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तक है कार्ल मार्क्स। मार्क्स ने पूंजीवादी समाज में अंतर्निहित मानव शोषण एवं व्यवस्था के संकट के बारे में वैज्ञानिक विश्लेषण दिया। अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत को प्रस्तुत किया। पूंजीवादी समाज में अंतर्निहित मानव अलगाव के बारे में बताया। पूंजीवाद के साम्राज्यवादी स्वरूप के बारे में भी बताया। मार्क्स ने यह भी बताया कि पूंजीवादी आर्थिक शोषण को कायम रखने एवं इसको बढ़ाने के लिए कैसे सामाजिक भेदभाव का उपयोग किया जाता है। कैसे महिलाओं का शोषण बरकरार रखा जाता है। कैसे जाति, रंगभेद, राष्ट्रवाद का इस्तेमाल मेहनतकश तबके के आर्थिक शोषण को कायम रखने के लिए किया जाता है।

कार्ल मार्क्स का जन्म प्रशिया के राइन प्रांत के ट्रियर नगर में 5 मई, 1818 को हुआ था। मार्क्स के पिता एक वकील थे एवं उनकी प्रारंभिक शिक्षा एक स्थानीय स्कूल जिमनेजियम में पूरी हुई। बोन विश्वविद्यालय से उन्होंने कानून की शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् बर्लिन विश्वविद्यालय से दर्शन एवं इतिहास का अध्ययन किया। जेना विश्वविद्यालय से उन्होंने डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। कार्ल मार्क्स हीगेल के विचारों से भी बहुत प्रभावित थे। जर्मनी में जन्में लेकिन अपने क्रांतिकारी विचारों के कारण अपनी मृत्यु तक निर्वासित, तकलीफों का जीवन जीने वाले ऐसे महान अर्थशास्त्री मार्क्स का जन्मदिन है, जिन्होंने पूंजीवादी व्यवस्था की कार्यप्रणाली के सबसे बेहतरीन तथ्यपरक, वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'दास कैपिटल' की रचना की थी। मार्क्स ने अपने विश्लेषण में बहुत सटीक तरीके से समझाया है कि समाज में असमानता व्यक्ति के लालच के कारण नहीं जैसा कि अनेक आदर्शवादी, धार्मिक विद्वान मानते हैं, बल्कि स्वयं इस पूंजीवादी उत्पादन की प्रक्रिया-अतिरिक्त मूल्य में ही निहित है। पूंजीवाद मूलतः शोषण और अन्याय पर आधारित व्यवस्था है जिसे उखाड़ फेंकने के लिए इसने अपने विरोधी सर्वहारा वर्ग को पैदा कर लिया है। मार्क्स ने लिखा है कि "मजदूर वर्ग द्वारा क्रांति में पहला कदम लोकतंत्र की लड़ाई जीतने के लिए सर्वहारा वर्ग को शासक वर्ग के पद पर उठाना है।" ऐसे कार्ल मार्क्स का जन्मदिन है आज जिनका मानना था कि "कोई भी राष्ट्र स्वतंत्र नहीं हो सकता यदि वह दूसरे राष्ट्रों का शोषण करता है।" मार्क्स ने पूंजीवाद की वैश्वीकरण की प्रक्रिया के बारे में 1848 की रचना 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' में ही बता दी थी।

मार्क्स लिंग समानता के प्रबल पक्षधर थे। उनका कहना था कि कोई भी व्यक्ति जो इतिहास की थोड़ी भी जानकारी रखता है, वह यह जानता है कि महान सामाजिक बदलाव बिना महिलाओं का उत्थान किये असंभव है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति को देखकर किसी समाज की सामाजिक प्रगति मापी जा सकती है। 1848 में ही मार्क्स के विचार इतने दूरदर्शी थे,वे चाहते थे कि "सरकारी स्कूलों में सभी बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा। वर्तमान स्वरूप में बच्चों के कारखाने में काम करने का उन्मूलन। शिक्षा का औद्योगिक उत्पादन के साथ संयोजन" किया जाए। देश भर में जनसंख्या के अधिक समतापूर्ण वितरण द्वारा शहर और गांव के बीच के सभी भेदों को धीरे-धीरे समाप्त हो।

वैज्ञानिक समाजवाद के जन्मदाता, संस्थापक, मजदूरों, किसानों एवं पीड़ितों के मसीहा कहे जाने वाले मार्क्स को दुनिया आज भी याद करती है। जब कई पूंजीवादी विद्वान तो 'इतिहास का अंत' बताकर समाजवाद पर पूंजीवाद की अंतिम विजय की घोषणा कर चुके हैं। मार्क्सवाद की मृत्यु की घोषणा कर चुके हैं ! लेकिन स्मरण रहे जब तक दुनिया में शोषण है, अन्याय है, विषमता, भेदभाव, बेरोजगारी है तब तक कार्ल मार्क्स प्रासंगिक रहेंगे। तेजी से बढ़ती आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, प्राकृतिक संसाधनों के बेरहमी से दोहन के मौजूदा दौर में तो मार्क्स और भी ज्यादा प्रासंगिक हैं। मार्क्स की मूल रचनाओं का अध्ययन विद्यार्थियों को जरूर करना चाहिए।

–डॉ. रमेश बैरवा,
राज. विज्ञान के प्रोफेसर हैं।

शादियों में फीकी पड़ने लगी बैंड-बाजे की गूंज

- **बेरोजगारी का दंश झेलने को मजबूर बैंड व्यवसायी**
- **डीजे के बढ़ते चलन से बंद होने की कगार पर पहुंचे बैंड-बाजे**

बदलते दौर में बैंड व्यवसायी काम नहीं मिलने से बेरोजगारी का दंश झेलने को मजबूर हैं।

डीडवाना, (निसं)। शादी-विवाह का नाम आते ही जेहन में शहनाई की गूंज और बैंड की मधुर धुन का ही ख्याल आता है। शादी जैसे खुशी की रौनक बैंड-बाजा ही बढ़ाता है। कुछ सालों पहले तक हर बारात में बैंड की धुनें ही गूंजती थी। धार्मिक आयोजनों और उत्सवों में भी बैंड-बाजों का विशेष महत्व था, मगर बदलते दौर में बैंड-बाजों की धुन अब गुमनामी के अंधेरे में खोती जा रही है।

बैंड वादक सिराज और गुलाम रसूल बताते हैं कि आधुनिक डीजे के चलन में आने के बाद बैंड का चलन अब कम होने लगा है। जिसका सीधा असर बैंड व्यवसाय से जुड़े लोगों और उनके परिवारों पर पड़ने लगा है और वे बेरोजगारी का दंश झेलने को मजबूर हैं। एक समय था जब शादी के मौके पर बैंड बाजे की बुकिंग के लिए महीनों पहले से लाइन लगानी पड़ती थी। बैंड वालों के पास इतना काम होता था कि उन्हें दिनभर में कई कई शिफ्टों में काम करना पड़ता था। शादी-विवाह के अनेक उत्सव में एक उत्सव बारात में बैंड भी होता था। जब कही बैंड की आवाज आती थी तो सहज ही लोग यह अनुमान लगाते थे कि आसपास शादी समारोह का आयोजन चल रहा है। बैंड में गूंजती शहनाई की मधुर आवाज और बैंड का शालीन संगीत मन को सुकून देता था।

बैंड पर बाराती अपने आप झूमने नाचने लगते थे। कुछ सालों पहले तक हर शादी में बैंड की धुनें ही गूंजती थी। बैंड भारतीय संस्कृति और कला की जीवंत झांकी दर्शाते थे। मगर यह बैंड बाजा आधुनिक भारत में न केवल लुप्त होता जा रहा, बल्कि इससे जुड़े एक पूरे वर्ग पर रोजी रोटी का भी संकट आ खड़ा हुआ है। अब इन शादियों में शहनाई की गूंज की बजाय डीजे का तेज आवाज वाला संगीत बजने लगा है। बदलते दौर में बैंड-बाजों की धुन अब गुमनामी के अंधेरे में खोती जा रही है और आधुनिक डीजे के चलन में आने के बाद अब बैंड-बाजा संचालकों का कारोबार बुरी तरह प्रभावित हो रहा है, जिससे इस परंपरा और रोजगार दोनों पर संकट उत्पन्न होने लगा है। बदलते वक्त के साथ शादियों में बैंड बाजे की गूंज अब कम सुनाई देने लगी है।

अब बैंड के स्थान पर डीजे का चलन तेजी से बढ़ने लगा है। हालात ऐसे बन गए हैं कि अबूझ सावे के खास अवसर पर भी बैंड बाजों का काम ठप है। जिन बैंड वादकों को बाजा बजाने से फुर्सत नहीं मिलती थी, वो आज एकाध बुकिंग को भी तरसने लगे हैं। काम की कमी से बैंड व्यवसाय से जुड़े दर्जनों परिवारों पर इसका सीधा असर होने लगा है।

कभी 11 से लेकर 31 लोगों तक को रोजगार देने वाले इस कार्य से जुड़े लोग बेरोजगारी का सामना कर रहे हैं। इसके चलते इस परंपरागत व्यवसाय का धीरे-धीरे दम टूट रहा है। काम नहीं होने के कारण इन परिवारों में रोजगार का संकट है।

मार्क्सवाद की अन्तर्राष्ट्रीयता

रामनिवास बैरवा

कार्ल मार्क्स के समय पूंजीवाद की स्थिति एकाधिकार-मोनोपोली तथा कार्टेलों के निर्माण में अभिव्यक्त होती थी। तब उपनिवेशों के लिए पूंजीवादी देशों में संघर्ष होते थे, लंबे समय तक चलने वाले युद्ध होते थे। आज पूंजीवाद अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय पूंजी के माध्यम से अपनी साम्राज्यवादी गतिविधियों को पूरा करता है। यह दुनिया का अन्तर्राष्ट्रीयकरण है। इस अन्तर्राष्ट्रीयकरण के संबंध में मार्क्स के अर्थव्यवस्था, राजनीति तथा समाज व्यवस्था के संबंध में वे निष्कर्ष हैं जो स्थानीय, राष्ट्रीय विशेषताओं को संरक्षित रखते हुए उन्हें उनके अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप में अभिव्यक्त करते हैं।

कार्ल मार्क्स मानव इतिहास के पहले ऐसे दार्शनिक थे जिन्होंने दर्शन शास्त्र के परम्परागत विषय -आत्मा-परमात्मा और धर्म से अलग हटकर समाज के ऐतिहासिक एवं भौतिक तथ्यों को केन्द्र बनाकर दर्शन शास्त्र को नया मोड़ दिया है। उन्होंने पहली बार तीन अलग-अलग एकांतिक बनाकर रखी गयी व्यवस्थाओं के अन्तर्संबधों को स्थापित किया। ऐसा करके उन्होंने मानव-समाज के भूतकाल और वर्तमान की व्याख्या करके मानव-समाज के भविष्य की व्यवस्था की रूपरेखा प्रस्तुत की है, जिसे अन्तिम रूप में साम्यवाद या "कम्यूनिज्म" नाम दिया है। उस समय और वर्तमान समय में भी देशों और राष्ट्रों की अलग-अलग व्यवस्थाओं को कम्यूनिज्म का प्रस्थान बिंदु नहीं बनाकर अन्तर्राष्ट्रीयता के स्वरूप को प्रतिपादित किया था।

इसका आधार है-"दुनिया के मजदूरों, एक हों।" जब "दुनिया के मजदूरों, एक हों" का नारा दिया गया था तब इस नारे का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ही दिखाई देता है। आज हम देखते हैं कि पूरे विश्व की व्यवस्था अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था बन चुकी है। ग्लोबलाइजेशन के दौर में मुद्रा व्यापार और उत्पादनों का अन्तर्राष्ट्रीयकरण हुआ है। पूंजीवाद की परम्परागत उत्पादन व्यवस्था एकाधिकार और कार्टेल व्यवस्था अब बेमानी हो गई है। छोटे-बड़े सभी ब्रांडों का उत्पादन पहले की तरह एक ही देश में, एक ही जगह पर नहीं किया जा रहा है बल्कि फ्रेंचाइजी और कॉपीराइट के उपयोग के आधार पर किया जा रहा है जो एक ही देश में सीमित नहीं है बल्कि एक से अधिक देशों में उनकी उत्पादन प्रक्रिया को पूरा किया जा रहा है। इससे कोई भी उत्पादन एक देशीय न होकर अन्तर्राष्ट्रीय हो गया है।

सामाजिक संरचना में सबसे बड़ा परिवर्तन यह है कि कुछेक बड़े पूंजीपतियों को छोड़कर लगभग पूरी दुनिया की पूरी मानव जाति अपने जीवन को निर्वाह करने के लिए वेतन के लिए काम करते हैं। यह भी एक स्थापित सत्य है कि मानवसमाज का प्रत्येक सदस्य जीवनयापन के लिए सामाजिक सुरक्षा का कवच चाहता है और वह सामाजिक सुरक्षा शिक्षा-चिकित्सा के अलावा जीवन-यापन के लिए नियमित रोजगार और उसके बदले में मिलने वाले वेतन में ही निहित है अतः पूरी दुनिया में सभी वेतन के लिए काम करने वाले, श्रम करने वाले वकर्स ही हैं, श्रमिक ही हैं, मजदूर ही हैं। अतः कार्ल मार्क्स का आह्वान कि "दुनिया के मजदूरों, एक हों" नयी सामाजिकता क ताने-बाने का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप है। देशों की सीमाएं पूंजीवादी शासन व्यवस्था वाले देशों की हैं-मजदूरों-श्रमिकों की शासन व्यवस्था के लिए नहीं है।

1917 में सोवियत क्रान्ति के बाद दुनिया के ऐसे देश जो किसी पूंजीवादी यूरोपीय देश के उपनिवेश नहीं थे, उनमें समाजवादी, कम्यूनिस्ट क्रान्तियों का दौर आया था-लेकिन जो किसी यूरोपीय पूंजीवादी देश के उपनिवेश थे उनमें समाजवादी आंदोलन हो रहे थे लेकिन उपनिवेशवादी देशों के कम्यूनिस्ट-विरोधी, समाजवादी विरोधी कार्रवाइयों, नीतियों के चलते उनमें समाजवादी क्रान्तियां तो सफल नहीं हो सकी, अपितु उनमें सत्ता के लिए संघर्ष निरन्तर चलते रहे। चीन, वियतनाम, कम्यूचिया, कोरिया, तुर्की, यमन, दक्षिण अमरीकी देश समाजवाद के लिए एसे संघषों के उदाहरण हैं।

भारत भी मार्क्सवादी समाजवाद के सैद्धान्तिक एवं राजनीतिक प्रभाव से मुक्त नहीं है। जब दक्षिणपंथ की बात सामने आती है तो वामपंथ अपने आप ही राजनीतिक और सामाजिक सत्य के रूप में उभर कर सामने आता है। यही कारण है कि भारत की राजनीतिक व्यवस्था दक्षिणपंथ और वामपंथ के बीच हिचकोले ले रही है।

दक्षिणपंथ का उभार वामपंथ की आक्रामकता का कारण है तथा दक्षिणपंथ की पराजय वामपंथ की विजय तो नहीं कही जा सकती लेकिन सामाजिक संरचना के अनुसार राजनीतिक संतुलन का प्रयास है। कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, श्रीलंका आदि दक्षिणपंथ पर वामपंथ को एक अंकुश के रूप में देखा जा सकता है। दक्षिणपंथ की विजय अन्ततः तानाशाही को जन्म देती है और उस तानाशाही पर वामपंथ ही पूर्ण विजय प्राप्त कर सकता है, जैसे हिटलर पर सोवियत संघ की सेनओं ने विजय प्राप्त की थी। अगले सप्ताह रूस में उसी का 80वां विजय दिवस मनाने की तैयारी है जिसमें भारत को भी आमंत्रित किया गया है। वामपंथ, कम्यूनिज्म या समाजवाद कार्ल मार्क्स के निष्कर्षों की राजनीतिक व्यवस्था का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ही थे जो अन्ततः मानवजाति की स्वतंत्रता, मानवजाति की मुक्ति का मार्ग बनने का रास्ता दिखता है।

रामनिवास बैरवा
पूर्व क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त

राशिफल मंगलवार 6 मई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, मघा नक्षत्र दिन 3:52 तक, धुव्र योग रात्रि 12:30 तक, कौलव करण प्रातः 8:39 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। कुमार योग प्रातः 8:39 से दिन 3:52 तक है। आज बुध मेष राशि में रात्रि 4:07 से प्रवेश करेगा। आज हरि जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:06 से 10:45 तक, लाभ अमृत 10:45 से 2:02 तक, शुभ 3:41 से 5:19 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:49, सूर्यास्त 6:58

मेष

परिवार में शुभ-मांगलिक एवं रचनात्मक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

सिंह

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

धनु

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष

घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। भाई-बंधुओं के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

तुला

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी।

कुंभ

घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में मांगलिक एवं रचनात्मक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

फ्लैगशिप योजनाओं की प्रभावी मॉनिटरिंग करें : डॉ. गावंडे

जालोर, (कासं)। जिला कलैक्टर प्रदीप के. गावंडे की अध्यक्षता में सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में साप्ताहिक समीक्षा बैठक संपन्न हुई। जिसमें उन्होंने जिले में केन्द्र व राज्य सरकार की विभिन्न फ्लैगशिप योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए विभागीय अधिकारियों को प्रभावी मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार जिला कलैक्टर डॉ. प्रदीप के. गावंडे ने स्वामित्व योजना, कुसुम योजना, लाडो प्रोत्साहन योजना, अमृत 2.0, प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण), राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, एन.एफ.एस.ए. की समीक्षा करते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को इन योजनाओं के माध्यम से अधिक से अधिक पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए।

जालोर के कलैक्ट्रेट में कलैक्टर डॉ.प्रदीप के. गावंडे ने अधिकारियों की बैठक ली। फोटो-राष्ट्रदूत

जिला कलैक्टर प्रदीप के. गावंडे ने ग्रीष्म ऋतु को देखते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को जिले में निर्बाध विद्युत आपूर्ति एवं आमजन हेतु पर्याप्त मात्रा में जलापूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

उन्होंने समर कंटीजेंसी प्लान के तहत जल परिवहन, ट्यूबवेल, हैंड पंप मरम्मत आदि कार्यों को पूर्ण करने की बात कही। जिला कलैक्टर ने कहा कि आगामी वर्षा ऋतु को देखते हुए मिशन हरियालो राजस्थान का आयोजन किया जायेगा जिसके तहत वृक्षारोपण के आवंटित लक्ष्यों की समयबद्धता के साथ प्राप्ति सुनिश्चित करें।

जिला कलैक्टर ने संपर्क पोर्टल पर प्राप्त हुए प्रकरणों की विभागवार समीक्षा की तथा विभागीय अधिकारियों को संपर्क पोर्टल पर प्राप्त आमजन की परिवेदनाओं का त्वरित रूप से निस्तारण करने के निर्देश दिए।

इस अवसर पर उप वन संरक्षक जयदेव सिंह चारण, जिला परिषद की अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी चिदंबरा परमार, डिस्कॉम के अधीक्षण अभियंता धर्मेंद्र प्रजापति, जिला रसद अधिकारी आलोक झरवाल, सीएमएचओ डॉ. भैराराम जाणी, मुख्य जिला शिक्षाधिकारी गंगा कलावंत सहित कई अधिकारी व कार्मिक उपस्थित रहे।

प्रगतिशील उपशाखा के चुनाव निर्विरोध

सायला, (निसं)। राजस्थान शिक्षक संघ प्रगतिशील उपशाखा सायला का वार्षिक अधिवेशन एवं कार्यकारिणी के चुनाव राउमावि सायला में प्रदेश महामंत्री मेघसिंह और सेवानिवृत शिक्षक हबताराम मेघवाल की उपस्थिति में आयोजित हुआ।

प्राप्त जानकारी के अनुसार जिलाध्यक्ष लुंबाराम चौधरी ने बताया कि शिक्षक संघ प्रगतिशील शिक्षा, शिक्षार्थी और शिक्षक हितों के लिए संघर्ष करने वाला संगठन है। अकबर खान ने पुरानी पेंशन योजना को जारी रखने, आठवें वेतन आयोग के गठन, निजीकरण को लेकर जागरूक रहने एवं संघ को मजबूत करने की बात रखी। वार्षिक अधिवेशन में ब्लॉक मंत्री अशोक लुहार द्वारा प्रतिवेदन एवं आय व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया।

इसके बाद उपशाखा की नवीन ब्लॉक कार्यकारिणी के निर्विरोध चुनाव सम्पन्न हुए। जिसमे ब्लॉक अध्यक्ष अमराराम चौधरी, मंत्री कांतिलाल मेघवाल, सभाध्यक्ष अजीतसिंह, उप सभाध्यक्ष मुकनाराम, वरिष्ठ उपाध्यक्ष हिन्दू खान, उपाध्यक्ष महेश चौधरी और बलबीर डाबली, कोषाध्यक्ष अशोक लुहार, माध्यमिक शिक्षा प्रतिनिधि कवराराम रिणवा, वरिष्ठ अध्यापक प्रतिनिधि वालाराम चौधरी को नियुक्त किया गया। अरविंद पारंगी द्वारा नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को शपथ दिलाई गई। इस दौरान डूंगराराम राणा, प्रदेश मंत्री ओमप्रकाश जीनगर, भंवरसिंह, छगनलाल जीनगर, बलबीर, गुलाम खान, सुरेंद्र, जितेंद्र कुमार, महेश चौधरी सहित शिक्षक उपस्थित रहे।

वीर वीरमदेव सोनगरा चौहान का बलिदान दिवस मनाया

जालोर, (कासं)।वीर शिरोमणी, हिन्दू कुलभूषण, जालोर की आन बान शान के प्रतीक महारावल वीर वीरमदेव सोनगरा चौहान के 713 वें बलिदान दिवस (वैशाख शुक्ल षष्टी) एवं जालोर पराक्रम दिवस की वर्षगांठ पर हिन्दू युवा संगठन संस्था व दी जनरल मर्चेंट एसोसियेशन की ओर से वीरमदेव चौक में उनकी प्रतिमा के समक्ष पुष्पांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के नाते भाजपा जिला कोषाध्यक्ष महेंद्र मुणोत उपस्थित थे। वही अध्यक्षता हिन्दू युवा संगठन संस्थापक अध्यक्ष सुरेश सोलंकी ने की।विशिष्ठ अतिथि के नाते दी जनरल मर्चेंट एसोसिएशन अध्यक्ष जालमसिंह नरावत,भाजपा नेता दिनेश महावर,दिनेश बारोट उपस्थित थे। महेंद्र मुणोत ने वीर वीरम देव के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वीरमदेव (मृत्यु 1311) जालोर राजा कान्हड़देव के पुत्र थे। अलाउद्दीन खिलजी की जालौर पर विजय दौरान उन्हें ताज पहनाया गया था, और ढाई दिन संघर्ष करते हुए अन्त में वीरगति को प्राप्त हो गए थे।

सुरेश सोलंकी ने कहा कि वीरमदेव दिल्ली अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में समझौता करने पहुंचे तब पहली बार शहजादी फिरोजा ने उन्हें अपने दरबार में देखा और देखते ही उनकी वीरता और सुंदरता पर फिदा हो गई और जिद कर बैठी थी कि अगर वह शादी करेगी तो जालोर राजा वीरमदेव के साथ वरना जीवन भर कुंवारी ही रहेगी।

इस अवसर पर जालमसिंह नरावत ने कहा कि वीर वीरमदेव सोनगरा के बलिदान को पराक्रम दिवस के रूप में मनाते है।

कार्यक्रम के दौरान मूलसिंह, रमेश सेठ, सुरेश जैन, कैलाश लखारा,धर्मेंद्र पटवा, हेमेंद्रसिंह बगेडिया,मयंक देवडा, मुकेश सिंधी,सुरेश रामावत सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित थे।

वीर वीरमदेव सोनगरा चौहान के 713 वें बलिदान दिवस पर वीरमदेव चौक में पुष्पांजलि कार्यक्रम हुआ। फोटो-राष्ट्रदूत

पक्षियों के लिए परिंडे लगाए

जालोर के पास स्वरूपपुरा महादेव मंदिर में पक्षियों के लिए परिंडे लगाये। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। बेजुबान पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए जालोर शहर के नजदीक स्वरूपपुरा महादेव मंदिर परिसर में परिंडे लगाए गए।

कार्यक्रम संयोजक शहजाद खान ने बताया कि परिंडे सीनियर सेकेंडरी स्कूल वीराना के प्रधानाचार्य फिरोज खान की उपस्थिति में लगाए गए और उन परिंडे को नियमित पानी देने का संकल्प लिया गया।

पर्यावरण प्रेमी कानदास वैष्णव ने कहा कि पक्षियों के लिए दाना पानी ढूंढ पाना मुश्किल होता है ऐसे में कई बेजुबान पक्षी दाना पानी नहीं मिलने की वजह से अपनी जान गवा देते हैं। बस एक परिंडे लगाकर पक्षियों के जीवन को बचाना अपना कर्तव्य है। सभी लोग इस मुहिम में शामिल होकर पक्षियों के लिए परिंडे लगावे बेजुबान पक्षियों की सेवा ही परम सेवा है, के ध्येय को रखते हुए सभी को पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए परिंडे लगाने के लिए प्रेरित करना चाहिए और अधिक से अधिक परिंडे लगाना चाहिए।

कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण के बारे में भी जानकारी दी गई।

इस अवसर पर वसनाजी महाराज, कानदास वैष्णव, फिरोज खान, प्रवीण कुमार खत्री, छगनलाल टाक, हितेश कुमार आदि उपस्थित थे।

चौराऊ को सायला पंचायत समिति में ही रखने की मांग

सायला, (निसं)। सायला के निकट ग्राम पंचायत चौराऊ को मूल पंचायत समिति सायला में यथावत रखने की मांग को लेकर ग्रामीणों द्वारा जिला कलेक्टर के नाम उपखण्ड अधिकारी सूरजभान बिश्नोई को ज्ञापन सौंपा गया।

ज्ञापन में बताया कि उपखण्ड क्षेत्र सायला का ग्राम चौराऊ पंचायत समिति सायला के अन्तर्गत आता है। लेकिन राज्य सरकार द्वारा पोषाणा को नवीन पंचायत समिति बनाया जाना प्रस्तावित है। जिसमे चौराऊ को भी सम्मिलित किया जा रहा है। लेकिन चौराऊ के ग्रामीण पंचायत समिति पोषाणा में शामिल नही होना चाहते है।

ज्ञापन में बताया कि ग्राम पंचायत चौराऊ के रहवासीयो का सायला क्षेत्र में व्यावसायिक संबंध है और चौराऊ ग्राम की सीमाएं भी सायला से लगती हुई है। चौराऊ और सायला की भौगोलिक परिस्थितिया भी समान व एक दुसरे से एकदम जुडी है तथा चौराऊ से सायला करीबन 8 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है। ऐसे में चौराऊ को प्रस्तावित पोषाणा पंचायत समिति में शामिल नही करने व सायला में यथावत रखने की मांग की।

सचिन पायलट का स्वागत

जालोर के औद्योगिक ततीय चरण क्षेत्र में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सचिन पायलट का स्वागत किया। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर , (कासं)। राजस्थान के वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट का जालोर से माण्डोली में आयोजित कार्यक्रम में जाते समय पूर्व सहवृत सदस्य फिरोज मेहर ने औद्योगिक ततीय चरण स्थित गरीब नवाज कॉम्प्लेक्स में स्वागत किया।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पायलट करीब 15 से 20 मिनट तक कॉम्प्लेक्स में रुके और इस दौरान उन्होंने अल्पाहार भी किया।

स्वागत कार्यक्रम के दौरान पूर्व मंत्री हेमाराम चौधरी, विधायक समरजीत सिंह, विधायक मुकेश भाकर, विधायक अभिमन्यु पुनिया, जोधपुर के करण सिंह उचियारा, पूर्व विधायक हीरालाल बिश्नोई, जालोर वक्फ बोर्ड के पूर्व सदर पहाडू खां, अजीज खान, एडवोकेट सकील खां, इकतार खां, विनोद चौधरी, गनी खां, वली शाह, एडवोकेट संजय खां सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। स्थानीय लोगों ने नेताों का आभार व्यक्त किया और क्षेत्र की समस्याओं से भी अवगत करवाया। उनके आगमन पर भाद्राजून, आहोर, कानीवाडा मोड, सर्किट हाउस, भागली प्याऊ, बागरा और मांडोली सहित विभिन्न स्थानों पर स्वागत समारोह आयोजित किए गए।

इस अवसर पर विनय व्यास, अमीन मोयला, सलीम मोयला, मुरीद खां, मुरीद खान मेहर एडवोकेट रज्जब खोखर, जितेन्द्र कसाना सहित अनेक कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जालोर शहर के सर्किट हाउस और आसपास के क्षेत्रों में उनका स्वागत किया।

डॉ. गिरिजा व्यास को कांग्रेसजनों ने दी श्रद्धांजलि

जालोर, (कासं)। जिला कांग्रेस कमेटी की आर से सोमवार को पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं कांग्रेस की पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ गिरिजा व्यास के निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन रखा गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार सर्वप्रथम समस्त कांग्रेसजन ने पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं कांग्रेस की पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. गिरिजा व्यास की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की साथ ही दो मिनट का मौन धारण कर उन्हें याद किया गया।

श्रद्धांजलि सभा के पश्चात बेठक का आयोजन कर पीसीसी के निर्देशानुसार चलाये जा रहे संविधान बचाओ अभियान के तहत जालोर जिले आगामी दिनों में किये जाने वाले कार्यक्रमों को लेकर समस्त कांग्रेसजन से विचार विमर्श किया गया।

पूर्व अध्यक्ष जन अभाव निराकरण समिति पुखराज पाराशर, जिलाध्यक्ष भवरलाल मेघवाल, प्रदेश महासचिव नैन सिंह राजपुरोहित, जिला प्रवक्ता योगेंद्र सिंह कुम्पावत, मांगीलाल प्रजापत, आहोर ब्लॉक अध्यक्ष वीरेंद्र जोशी,सायला ब्लॉक अध्यक्ष सवाई सिंह चम्पावत, रमेश सोलंकी, लक्ष्मण सिंह सांखला, बसंत सुथार, कैलाश शर्मा, खसाराम मेघवाल, युवा नेता सुरेश मेघवाल सोनाराम मेघवाल, अनिल पंडत,भरत सुथार, कृष्ण कुमार वनिका,ओम प्रकाश चौधरी सहित कांग्रेसजन उपस्थित थे।

14.70 लाख पौधे बांटेंगे

जालोर, (कासं)। मिशन हरियालो राजस्थान के तहत जिले में वन विभाग द्वारा 14.70 लाख पौधे तैयार कर वितरण किए जाएंगे।

जिला कलैक्टर डॉ. प्रदीप के. गावंडे ने बताया कि मुख्यमंत्री बजट भाषण की घोषणा बिन्दु सं. 45(1) के अनुसार मल्टी सेक्टरल प्रोग्राम के रूप में मिशन "हरियालो राजस्थान" को साकार करने की घोषणा कर प्रदेश में प्रतिवर्ष 10 करोड़ पौध वितरण कर लगाये जाने का लक्ष्य रखा गया है जिसके तहत जालोर जिले में वन विभाग द्वारा 14.70 लाख पौधें तैयार किए जा रहे हैं जिसमें 12.65 लाख पौधे गोचर/ओचर/चारागाह, विभिन्न शहरी क्षेत्रों (नगर परिषद, नगरपालिका), संस्थागत एवं निजी भूमि पर तथा वन भूमि पर लगाए जाएंगे तथा शेष पौधे आमजन को उपलब्ध करवाये जायेंगे।

वन विभाग द्वारा जिले में कुल 14.70 लाख पौधों के वितरण की कार्ययोजना के तहत रणछोड़ नगर नर्सरी में 1.45 लाख, माण्डवला नर्सरी में 1.40 लाख, आहोर नर्सरी में 1 लाख, सायला नर्सरी में 1 लाख, आकोली नर्सरी में 50 हजार, हातिमताई नर्सरी में 75 हजार, जुंजाणी नर्सरी में 70 हजार, जसवंतपुरा नर्सरी में 2.55 लाख, रामसीन नर्सरी में 50 हजार, रानीवाड़ा नर्सरी में 2.55 लाख, सांकड़ नर्सरी में 60 हजार, सांचौर नर्सरी में 70 हजार, डेडवा में 50 हजार व पादरली नर्सरी में 50 हजार पौधें तैयार कर 1 जुलाई से वितरण किया जायेगा।

परिहार ने सहायक प्रशासनिक अधिकारी का कार्य संभाला

विक्रम सिंह परिहार ने महाराणा प्रताप राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पाली में सहायक प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्य ग्रहण किया। फोटो-राष्ट्रदूत

पाली, (नि.सं.)। संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा मंडल पाली की ओर से हाल मे मंत्रालयिक संवर्ग सहायक प्रशासनिक अधिकारी की सम्पन्न हुई डी.पी.सी. की अनुपालना में सोमवार को कार्मिकों ने कार्य ग्रहण किया।

इसी क्रम में विक्रम सिंह परिहार ने पाली के महाराणा प्रताप रा.बालिका उच्च.माध्यमिक विद्यालय में सहायक प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्यग्रहण किया। इससे पूर्व परिहार सेठ मुरलीधर जमनादास राजकीय उच्च माध्यमिक हाउसिंग बोर्ड मे वरिष्ठ सहायक के पद पर कार्यरत रहे।

पूर्व मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी पाली विजेन्द्र सिंह चौहान, प्रधानाचार्य रंजना कुलश्रेष्ठ, शान्ति चौहान, तेज सिंह पंवार, दीपक सिंह भाटी, राजश्री चौहान, रावणा राजपूत समाज जिला अध्यक्ष प्रमेन्द्र सिंह परिहार, महिला सुरक्षा सहयोगी समिति संस्थापक कुलदीप पंवार, प्रेम सिंह परमार, एडवोकेट विक्रम सिंह भैसाणा, बाबू सिंह परिहार, किषन सिंह पंवार, राजेन्द्र सिंह राजपुरोहित,विनोद कुमार शर्मा, अनिता सिसोदिया, जितेन्द्र गोस्वामी, प्रकाश सिंह सोलंकी, मीठालाल चांवरिया,मोहित वैष्णव, भगवानदास बाबानी, जया कर्मचंदानी, दिनेश मीणा, आकाश सिंह सिकरवार मौजूद रहे।

जिला पॉवर लिफ्टिंग 13 को

जालोर, (कासं)। जिला पावर लिफ्टिंग संघ के तत्वावधान में 13 मई को जिला स्तरीय जूनियर, सब जूनियर, सीनियर व मास्टर पुरुष व महिला प्रतियोगिता आर्य वीर दल वीरम व्यायामशाला में शाम 6 बजे होगी।

प्रतिभागी एंट्री दोपहर 12 बजे तक दे सकेंगे। जिला पावर लिफ्टिंग संघ के सचिव कांतिलाल आर्य ने बताया कि पुरुष वर्ग में 53, 59, 66, 74, 83, 93,105 120, 120 महिला वर्ग में43, 47, 52, 57, 63, 69,76,84, 84 भार वर्ग के मुकाबले होंगे। उन्होंने बताया कि सब जूनियर में सन 2008 से 2013 तक (12 से 18 आयु के),जूनियर मे 2003 से 2008(19से 23 आयु के) तथा मास्टर वर्ग सन 1985 से अधिक(40 वर्ष से अधिक) वाले भाग ले सकते है।

पाली में कलैक्टर ने कार्यों की समीक्षा की

पाली में कलैक्टर एल.एन. मंत्री की अध्यक्षता में जिला स्तरीय अधिकारियों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित हुई। फोटो-राष्ट्रदूत

पाली, (नि.सं.)। जिला कलैक्टर एल.एन. मंत्री की अध्यक्षता में सोमवार को जिला कलैक्टर कार्यालय के सभागार में जिला स्तरीय अधिकारियों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में जिला कलैक्टर मंत्री ने विभिन्न विभागों की गत सप्ताह में कामकाजों व प्रगति की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिये।

उन्होंने कहा कि आने वाले गर्मी के समय में और अधिक सक्रिय होकर कार्य करे जिससे आमजन से जुडी दैनिक जीवन पानी ,बिजली आदि की समस्याओं का तुरंत समाधान हा सके।

बैठक में उन्होंने बजट घोषणाओं में विभिन्न विभागवार प्रगति , भूखंड आवटन के बारे में , राज्य सरकार की महत्वपूर्ण फलैगशिप योजनाओं के बारे में चर्चा कर आगामी दिनों में होने वाली समीक्षा के लिये आवश्यक निर्देश दिये। साथ ही उन्होंने साथ ही ग्रीष्म ऋतु में हीटवेब, लू व तापघात से बचाव के लिए की तैयारीयों की जानकारी ली।

उन्होंने सार्वजनिक निर्माण विभाग से विभाग के प्रगतिरत व बकाया कामों की जानकारी , विद्युत विभाग से कनेक्शन व विधुत आपूर्ति की जानकारी पीएचईडी गर्मी के मौसम में पेयजल वितरण चिकित्सा विभाग की विभिन्न योजनाओं व गर्मी के मौसम की तैयारी की जानकारी व आवश्यक निर्देश दिये।

उन्होंने इसके साथ ही नगर निगम, यूआईटी व , बांगड चिकित्सालय की व्यवस्थाओं, जल संसाधन, सहकरिता विभाग, बागवानी, कृषि उपज मंडी, डेयरी विभाग व पशुपालन विभाग के कामों और प्रगति की जानकारी लेकर आवश्यक निर्देश दिये।

उन्होंने कृषि विभाग, हार्टीकल्चर, राजीविका लखपति दीदी ,सोलर दीदी, महिला अधिकारिता व महिला एवं बाल विकास, शिक्षा विभाग, खेल, उद्योग राईजिंग राजस्थान, खनन विभाग ,रसद विभाग में एनएफएसए के बारे में कामों की प्रगति की समीक्षा कर निर्देश दिये।

इस अवसर पर अतिरिक्त जिला कलक्टर अश्विनी के पंवार, यूआईटी सचिव डॉ पूजा सक्सेना , उपखंड अधिकारी पाली विमलेन्द्र सिंह, नगर निगम आयुक्त नवीन भारद्वाज सहित जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

पेयजल सप्लाई आज से बाधित

जालोर, (का.सं.)। जालोर शहर में आगामी दो-तीन दिवस तक पेयजल सप्लाई आंशिक रूप से बाधित रहेगी।

जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग उपखण्ड के सहायक अभियंता मुकेश कुमार ने बताया कि 4 व 5 मई को आंधी-तूफान के कारण मुख्य स्त्रोत नर्मदा परियोजना, मुख्य हैड वर्क्स सांफाड़ा, कुआबेर व सोनपुरा पर विद्युत व्यवधान होने के कारण सप्लाई दो से तीन दिवस तक आंशिक बाधित रहेगी।

रामलाल जाट ने निरीक्षण किया

पाली, (नि.सं.)। कृषि खंड जालोर के अतिरिक्त निदेशक कृषि रामलाल जाट ने सोजत तथा पाली में भ्रमण कर कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं का निरीक्षण कर प्रगति की समीक्षा की।

सहायक निदेशक कृषि पाली फूलाराम मेघवाल ने बताया कि निरीक्षण के दौरान जाट ने डीबीटी (डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर) योजनाओं के अंतर्गत तारबंदी, फार्म पॉण्ड, सिंचाई पाइपलाइन, गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड,जिप्सम वितरण तथा कृषि यंत्रों पर अनुदान जैसी योजनाओं के प्रभावी प्रचार-प्रसार के निर्देश दिए।

इस दौरान उन्होंने किसानों को इन योजनाओं का अधिकाधिक लाभ दिलाने पर जोर दिया।

सहायक निदेशक कृषि कार्यालय सोजत के निरीक्षण पश्चात फील्ड विजिट के दौरान ग्राम धीनावास में धर्मीचंद, दीपराज, रमेशकुमार के तारबंदी तथा धाकड़ी में कृषक भंवरलाल पन्नाजी के यहां स्थाई वर्मी कंपोस्ट तथा प्लास्टिक लाइनिंग फार्म पौंड का अवलोकन किया। कृषक कानाराम से मेंहदी की खेती तथा अधिकारियों से मेंहदी प्रोसेसिंग, गुणवत्ता तथा विपणन संबंधी जानकारी प्राप्त की।

इसके अतिरिक्त उन्होंने नेशनल मिशन ऑन एडिबल ऑयल्स, प्राकृतिक खेती की संभावनाएं तथा कैच द रेन अभियान की योजनाबद्ध प्रगति प्राप्त करने के निर्देश दिए और संबंधित अधिकारियों को निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु तत्परता से कार्य करने तथा संपर्क पोर्टल सहित किसानों की समस्याओं के समय पर निस्तारण के निर्देश दिए।

इस अवसर पर किसानों को जागरूक करने तथा योजनाओं की पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न सूचना माध्यमों के उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया गया।भ्रमण के दौरान सहायक निदेशक कृषि फूलाराम मेघवाल, कृषि अधिकारी डॉ रामलाल, सहायक प्रशासनिक अधिकारी राजकुमार,सहायक कृषि अधिकारी राजश्री श्रीमाली, दिलीपसिंह, कृषि पर्यवेक्षक सीमा कुड़ी आदि साथ रहे।

पाली जार कार्यकारिणी का विस्तार किया

पाली, (नि.सं.)। जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) प्रदेश अध्यक्ष, महामंत्री, संयोजक व चुनाव प्रभारी ओम चतुर्वेदी की सहमति से पाली जिलाध्यक्ष रविन्द्र सोनी ने जिला कार्यकारिणी का विस्तार किया।

जिला कार्यकारिणी में अमृतलाल कुमावत को संरक्षक बनाये गए, वे पूर्व में जिलाध्यक्ष रह चुके है। साथ कार्यकारणी विस्तार में तोषचंद्र चौहान को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, राजीव अठावाल को उपाध्यक्ष, मुकेश राजा को सचिव बनाए गए है। वही गिरादड़ा के दिनेश कुमार शर्मा व फालना के सुजाराम चौधरी को जिला संगठन मंत्री बनाये गए है।

पाली जिला कार्यकारिणी में जितेन्द्र कच्छवाह, ओम नारायण पराशर (सोजत), अजयसिंह तोमर (मारवाड़ जंक्शन), मुकेश सोनी, गोपाल भाटी, धर्मेंद्र वैष्णव व हिमांशु पलोड (रानी) को कार्यकारणी सदस्य बनाए गए है। प्रदेश अध्यक्ष संजय सैनी, महासचिव सुरेश पारीक व प्रदेश संयोजक राकेश शर्मा ने सभी नवनिर्वाचित जार सदस्यों को बधाई देते हुए आशा प्रकट की हैं कि सभी पदाधिकारी पत्रकारों के हित में काम करके जार संगठन के विस्तार, मजबूती के लिए सहयोग करेंगे।

प्रदेश के कई जिलों में आंधी-तूफान व बरसात ने तबाही मचाई

भीलवाड़ा, सिंघाना, जालौर के सायला, पाली, राजसमंद और उदयपुर सहित कई जिलों में आंधी के साथ बरसात हुई

भीलवाड़ा शहर में तेज आंधी के साथ दो घंटे तक हुई बारिश से सड़कों पर पानी भरा

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले में मौसम का बदला मिजाज प्रशासनिक लापरवाहियों के कारण आमजन के लिए परेशानी का सबब बन गया। सोमवार सुबह तीखी धूप के बाद चंद मिनटों में मौसम बदल गया और घटाएं छा गई। उसके बाद तेज अंधड़ चला और सवेरे आठ बजे से ही बरसात शुरू हो गई। करीब दो घंटे तक हुई बारिश से सड़कों पर पानी भर गया। शहर कुछ स्थानों समेत कई गांवों में आंधी- तूफान ने तबाही मचाई। गांवों में भी तेज बारिश हुई। मौसम में हुए बदलाव के बाद दोपहर में एक दिन में तापमान आठ डिग्री सेल्सियस गिर गया।

बारिश के चलते भीलवाड़ा कृषि मंडी में पड़ी हजारों टन फसल भीगने के कारण खराब हो गई।

- बरसाम होने से दिन में तापमान आठ डिग्री सेल्सियस गिर गया
- बेमौसम की बरसात के कारण किसानों को खेतों में पड़ी फसलें खराब होने की चिंता सताने लगी है

जानकारी के अनुसार शहर में सुबह की शुरुआत चिलचिलाती धूप से हुई थी, लेकिन चंद मिनटों के अचानक मौसम में बदलाव के बाद घटाएं छाने और धूलभरी आंधी चलने से अंधेरा छा गया। लोगों को वाहनों की हैड लाइट जलानी पड़ी। उसके बाद करीब दो घंटे तक तेज बरसात हुई। शहर में अधिकतम तापमान 32 डिग्री पर आ गया, जबकि रविवार को 40 डिग्री तक पहुंच गया था।

गर्मी छू-मंतर हो जाने से घरों में कूलर बंद हो गए। झमाझम बरसात से नालियां और नाले उफान पर आ गए। शहर में जगह-जगह पानी भर गया। बेमौसम की बरसात के कारण किसानों को खेतों में पड़ी फसलें खराब होने की चिंता सताने लगी। वहीं बारिश से शादी समारोह वालों को परेशानी उठानी पड़ी। तेज अंधड़ से कई मकान के चद्दर, त्रिपाल व टीनशेड तथा दुकानों के बाहर रखे कूलर व अन्य सामान उड़ गए।

अचानक आए अधंड़ से मची तबाही का मंजर देख कर हर कोई अचंभित रहा। ना सिर्फ खेत बल्कि प्रशानिक लापरवाही का खामियाजा किसानों को भीलवाड़ा कृषि मंडी में भी भुगतना पड़ा। बेमौसम की बारिश के चलते मंडी में पड़ी हजारों टन फसल भीगने के कारण खराब हो गई। यही नहीं शहर को दो हिस्से में बांटने वाले ओवरब्रिज भी ऐसी ही लापरवाही के कारण पानी से लबालब भर गए और लिंक रोड जाम से थम गई।

सिंघाना क्षेत्र में हुई बरसात से लोगों को राहत मिली

खेतड़ी, (निसं)। सिंघाना क्षेत्र में देर शाम को बारिश का दौर शुरू हो गया। पश्चिम विक्षोभ से हुई बरसात से आमजन को गर्मी से काफी राहत मिली तथा तापमान में भी आठ डिग्री तक गिरावट दर्ज की गई। बरसात होने के बाद मौसम सुहावना हो गया। करीब आधे घंटे तक मध्यम बरसात होने से सड़कें दरिया बन गई, जिससे राहगीरों को निकलने मे काफी परेशानी का सामना करना पड़ा।

- तापमान में भी आठ डिग्री तक गिरावट दर्ज, मौसम सुहावना हुआ

सिंघाना क्षेत्र में बरसात होने से कई जगह पर पानी भर गया।

जानकारी के अनुसार शाम को बादलों की काली घटा छा जाने सेवाहन चालकों को दिन में ही लाइट जलानी पड़ी। इस दौरान बरसातः के कारण आसपास के क्षेत्र के निचले इलाकों में पानी घुस गया, जिससे ग्रामीणों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। बरसात से कस्बे की सड़कें जलमग्न हो गई। खेतड़ी व आसपास के क्षेत्र में दोपहर को मध्यम बरसात का दौर शुरू हुआ। सिंघाना के ग्रामीणों ने बताया कि इंदिरा कॉलोनी, प्रभात कॉलोनी, मुख्य बाजार स्थित मुस्लिम बस्ती में पानी की सही निकासी नहीं होने के कारण ग्रामीणों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बरसात के समय में कस्बे का पानी तेज बहाव के साथ आने से नाले उफान पर हो जाते हैं। नालों की साफ-सफाई नियमित रूप से नहीं होने के कारण उनका पानी सड़क पर आ जाता है तथा घरों में घुस जाता है। नालों से निकलने वाला गंदा पानी सड़कों पर जमा हो जाने से राहगीरों को भी काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं व्यापारियों को भी आए दिन होने वाली गंदगी से परेशानी भुगतनी पड़ रही है।

सायला क्षेत्र में पचास किमी प्रति घंटा की रफ्तार से हवाएं चली

सायला में मौसम में हुए बदलाव से तेज हवा से पेड़ गिर गये।

- धूल भरी आंधी चलने से लोग दशहत में आ गए, तेज हवाओं से दर्जनभर बिजली के पोल गिरे
- तेज हवाओं से दुकानों के साईन बोर्ड गिर गए, खेतों में खड़ी फसलों में नुकसान पहुंचा

सायला, (निसं)। सायला उपखंड मुख्यालय सहित क्षेत्रभर में सोमवार अलसवेरे आसमान में 50 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से तेज हवाएं चलने से जनजीवन प्रभावित हो गया।

पश्चिमी विभोक्ष से क्षेत्र में अलसवेरे अचानक से मौसम का मिजाज बदलने के साथ तेज रफ्तार से हवा चलने लगी। जिससे पेड़ झूलने लगे। साथ ही धूल भरी आंधी चलने लगी, जिससे लोग दशहत में आ गए। तेज हवाओं से दर्जनभर बिजली के पोल गिर गए, जिसके कारण बिजली गुल हो गई, जो करीब आठ घंटे प्रभावित रही, जिसके चलते रोजमर्रा के कार्य में गृहणी महिलाओ को दिक्कतें झेलनी पड़ी। साथ ही ओटवाला रोड मुख्य सड़क पर पेड़ टूटकर गिरने से एक बार वाहनों की आवाजाही प्रभावित हो गई। घर आदि धूल से भर गए।

तेज हवाओं से दुकानों के साईन बोर्ड गिर गए। खेतों में खड़ी फसलों में काफी नुकसान पहुंचा है। दोपहर तक आसमान में बादल छा रहे। तापमान में गिरावट से मौसम में ठंडक रही।

आकाशीय बिजली गिरने से युवक व 24 भेड़ों की मौत

बीकानेर, (निसं)। यहां तेज गर्मी के बीच हुई बारिश ने बीकानेर में राहत की बरसात कर दी है। उधर आकाशीय बिजली गिरने से बज्जू के गोडू गांव में एक युवक की मौत हो गई।

वहीं बाड़े में खड़ी चौबीस भेड़ों की भी मौत हो गई। मौसम विभाग ने सुबह छह बजे जारी अलर्ट में बीकानेर में बारिश की चेतावनी देते हुए ओरेंज अलर्ट जारी किया था। इससे पहले ही बादल बरसना शुरू कर चुके थे। देर रात जैसे ही रिमझिम शुरू हुई, वैसे ही लाइट बंद हो गई। शहर से पहले गांवों में बादल बरसे। बीकानेर के कोलायत सहित कई क्षेत्रों में हल्की रिमझिम बारिश हुई। कुछ इलाकों में तेज बारिश से पानी भर गया। सड़कों पर भी पानी जमा हुआ। तापमान में न सिर्फ कमी आई है, बल्कि हवा भी ठंडी है। मौसम विभाग पिछले दो दिन से बीकानेर में बूंदाबांदी के साथ बारिश होने की उम्मीद जता रहा था।

जानकारी के अनुसार बज्जू के एक खेत में काम करते युवक पर आकाशीय बिजली गिरने से उसकी मौत हो गई। गोड की रोही में चक छह जीएसएमआर में राजाराम पुत्र नेनुराम गोदारा रात के समय मशीन से फसल काट रहा था। इस दौरान अचानक मौसम बदल गया। राजाराम अपने घर की तरफ रवाना हो गया था। इस बीच गिरी बिजली की चपेट में आ गया।

मौके पर ही उसने दम तोड़ दिया। उसे बज्जू के उप जिला अस्पताल ले जाया गया, लेकिन वहां उसने मृत घोषित कर दिया गया। बज्जू में ही एक और खेत में बिजली गिरने से छह केएचडी में गोपाल सिंह की ढाणी के पास 24 भेड़ों की मौत हो गई।

जालोर जिले में भारी बारिश की चेतावनी

जालोर, (कासं)। मौसम विभाग द्वारा 6 व 7 मई को जालोर व आसपास के क्षेत्रों में भारी बारिश होने की चेतावनी जारी की गई है। मौसम विभाग द्वारा जारी अनुमान के अनुसार जालोर जिले में 6 मई को 50-60 किमी प्रति घंटे तथा 7 मई को 40-60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलने के साथ ही भारी बारिश होने की संभावना है। तेज हवा व बरसात के समय पेड़ों के नीचे शरण नहीं लेने तथा ढीली संरचनाओं से दूर रहने की चेतावनी जारी की गई है।

पाली में तेज अंधड़ के साथ बारिश हुई

पुराने कचहरी स्थित आयुर्वेद अस्पताल में बरसों पुराना नीम का पेड़ जड़ से उखड़ कर गिर गया।

पाली, (नि.स.)। पाली शहर में गत रात और आज सुबह आये तेज अंधड़ के साथ बारिश के कारण शहर के धोला चौतरा क्षेत्र के भटवारा बास में पानी टंकी परिसर में एक पेड़ विद्युत पोल पर गिरने से इस क्षेत्र में दिन में लाइट बंद हो गई।

- विद्युत पोल और पेड़ गिरने से धोला चौतरा क्षेत्र में लाइट बंद रही

विद्युत कर्मचारियों द्वारा दिन भर कार्य कर वापस विद्युत पोल खड़ा किया गया उसके बाद शाम पांच बजे लाइट शुरू हुई, किसके कारण धोला चौतरा कुमार का बास, सोमनाथ रोड, भटवारा, लोढ़ा का बास इलाके में लाइट बंद रही। रविवार देर रात्रि के बाद सोमवार अल सुबह तेज हवाओं के साथ बारिश का दौर शुरू हुआ जो करीब एक घंटे तक चला। इससे सड़कों पर पानी बहने लगा। तेज हवा के कारण कई टीनशेड उड़ गए और विद्युत पोल, पेड़ गिर गए। इसी क्रम में पुराने कचहरी स्थित आयुर्वेद अस्पताल में बरसों पुराना नीम का पेड़ जड़ से उखड़ कर गिर गया। इससे करीब शहर में दो-तीन घंटे विद्युत सप्लाई बाधित रही। बारिश से मौसम में ठंडक हो गई। दिनभर आसमान में बादल छाए रहे।

राजसमंद में तेज अंधड़ के साथ हुई बारिश

राजसमंद, (निसं)। शहर सहित जिलेभर में रविवार देर रात मौसम ने अचानक करवट ली और तेज बारिश, अंधड़ और बिजली ने जमकर कहर बरपाया। राजसमंद, नाथद्वारा, केलवा, कुंवारिया, सरदारगढ़, आमेट सहित कई स्थानों पर जोरदार बारिश हुई। वहीं कई इलाकों में ओले भी गिरे। इस प्राकृतिक आपदा के कारण जिले में विद्युत विभाग को खंभे गिरने, डिपी के खंभे टूटने, विद्युत लाइनें टूटने से करीब 60 लाख रूपये से अधिक माल का भारी नुकसान हुआ है।

राजसमंद में बरसात होने व हवायें चलने से वाहन चालक परेशान हुये।

अजमेर विद्युत वितरण निगम के अधीक्षण अभियंता बीएस शर्मा ने बताया कि तेज हवाओं व अंधड़ के कारण शहर सहित जिलेभर में बिजली के खंभे टूट गए। इससे निगम को करीब 60 लाख रूपये का नुकसान हुआ है। बारिश और तेज अंधड़ के चलते जिले के कई हिस्सों में पेड़ उखड़ गए, जिससे यातायात के साथ विद्युत व्यवस्था बाधित हुआ और कई घरों को भी नुकसान पहुंचा। टीन शेड और बिजली के पोल भी धराशायी हो गए, जिससे बिजली आपूर्ति व्यवस्था चरमरा गई। नाथद्वारा और कांकरोली सहित कई स्थानों पर तेज बारिश के साथ ओले गिरने से फसलों के पडे भूंसे को भी नुकसान पहुंचने की आशंका है। प्रशासन नुकसान का आकलन करने में जुटा है और प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्य जारी है। लोगों को सतर्क रहने और मौसम विभाग की चेतावनियों का पालन करने की सलाह दी गई है। जिला मुख्यालय के अलावा कुंवारिया, आमेट, चारभुजा, रेलमगरा, केलवा, पीपरडा, खमनोर, कुंभलगढ़ और आसपास के गांवों में सोमवार सुबह अचानक मौसम में बदलाव आया। घने काले बादल छा गए और देखते ही देखते तेज मेघ गर्जन और जोरदार हवा के साथ बारिश शुरू हो गई। इस अप्रत्याशित बारिश से मौसम सुहावना हो गया और तापमान में भी गिरावट दर्ज की गई, जो करीब 2 डिग्री सेल्सियस तक लुढक गया। इस बेमौसम बारिश और तेज हवाओं ने जहां एक ओर लोगों को गर्मी से राहत दिलाई है, वहीं किसानों की मेहनत पर पानी फेर दिया।

उदयपुर में हल्की बारिश से मौसम खुशनुमा हुआ

तापमान में गिरावट से गर्मी से राहत, सुबह से ठंडी हवाओं का दौर जारी

उदयपुर, (का.सं)। लेकसिटी में सोमवार को सुबह हल्की बारिश के बाद मौसम खुशनुमा बना हुआ है। बीते तीन-चार दिन से मौसम में लगातार गिरावट दर्ज की गई है। बीती रात भी आंधी का दौर चला। सोमवार अलसुबह से ठंडी हवाएं चलने लगी। जिसके बाद बारिश शुरू हो गई। मौसम ठंडा हो गया। एकदम मौसम बदलने से लोगों को काफी राहत महसूस हुई लेकिन विवाह समारोह वाले घरों में चिंता बढ़ गई व आनन-फानन में अलग से व्यवस्थाएं करनी पड़ी।

- दिन के तापमान में 3.6 डिग्री की गई

मौसम विभाग के अनुसार दिन के तापमान में 3.6 डिग्री और रात के तापमान में इससे लोगों को गर्मी से राहत मिली है। मौसम विभाग के अनुसार दिन के तापमान में 3.6 डिग्री और रात के तापमान में एक डिग्री सेल्सियस की कमी दर्ज की गई। मौसम विभाग की माने तो वेस्टर्न डिस्टरबेंस के चलते मौसम में बदलाव देखने को मिला है। उदयपुर में बीते चार दिन से तापमान में लगातार गिरावट दर्ज की गई है। मौसम विभाग के अनुसार सोमवार को दिन का तामपान 33.5 डिग्री और रात का 20.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। रविवार को दिन का तापमान 37.1 डिग्री और रात का 21.0 डिग्री सेल्सियस था। वहीं एक दिन पहले दिन का 38.7 और रात का 22.7 डिग्री रहा था। इसी तरह शुक्रवार को दिन का तापमान 39.3 डिग्री और रात का 24.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था।

मौसम विभाग ने अगले तीन घंटे के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। बिजली की गरज के साथ बारिश की चेतावनी दी गई है। विभाग के अनुसार उदयपुर के साथ ही प्रदेश के अन्य जिलों में भी मेघगर्जन, हल्की से मध्यम बारिश,आकाशीय बिजली, ओलावृष्टि और तेज़ अंधड़ की संभावना है। अंधड़ की गति 40 से 60 किलोमीटर प्रति घंटा तक पहुंच सकती है।

रिश्वतखोर अधीशाषी अभियंता के चार लॉकरों से 59 लाख रूपये बरामद

पीडब्ल्यूडी बारां के अधीशाषी अभियंता अजय सिंह को पांच लाख की रिश्वत लेते 28 अप्रैल को गिरफ्तार किया था

कोटा, (निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरों कोटा टीम ने परिवादी से मिली शिकायत पर कार्रवाई करते हुए पीडब्ल्यूडी बारां के अधीशाषी अभियंता अजय सिंह को पांच लाख की रिश्वत लेते 28 अप्रैल को रंगे हाथों गिरफ्तार किया था। एसीबी कोटा के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विजय स्वर्णकार ने बताया कि पांच लाख की रिश्वत लेते पकड़े गये आरोपी के खिलाफ चल रही जांच के दौरान शेष चार लॉकरों को खुलवाने के लिये न्यायालय में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया, जिस पर न्यायालय के आदेशानुसार आरोपी को बारां जेल से कोटा लाकर आरोपी की उपस्थिति में लॉकरों की तलाशी ली गई तो आरोपी के दो लॉकर में प्रत्येक में 15-15 लाख रूपये एवं दो लॉकरों में से पुत्री के लॉकर मे 15 लाख तथा स्वयं एवं पुत्री के नाम संयुक्त लॉकर में 14 लाख रूपये कुल चार लॉकरों में 59 लाख रूपये बरामद किये गये।

- अधिशाषी अभियंता की अन्य सम्पत्तियों एवं निवेश के बारे में जांच जारी

एसीबी के एएसपी ने बताया कि अब तक आरोपी के मकान से 2 लाख नकद, आरोपी एवं उसके परिजनों के नाम एफ.डी. में निवेशित 76 लाख रूपये, बचत खाते में जमा 2 लाख रूपये, सोने की ज्वैलरी 7.5 लाख रूपये की, चांदी के 361 सिक्के, बीमा पॉलिसी में निवेशित 5 लाख रूपये, दो कार, एक स्कूटी तथा आठ लॉकर्स में से कुल एक करोड़ नौ लाख रूपये बरामद किये जा चुके हैं। आरोपी बारां के सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिशाषी अभियंता अजय सिंह की अन्य सम्पत्तियों एवं निवेश के बारे में जांच जारी है।

कृषि वि.वि. के कुलपति पर लगे आरोपों की होगी जांच

बीकानेर, (निसं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर के कुलपति प्रो. अरुण कुमार के खिलाफ वित्तीय अनियमितताओं की जांच के लिए राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने संभागीय आयुक्त जोधपुर की अध्यक्षता में हाईपावर कमेटी गठित की है।

- राज्यपाल ने संभागीय आयुक्त जोधपुर की अध्यक्षता में हाईपावर कमेटी गठित की

कुलपति के खिलाफ की गई शिकायतों पर बिंदुवार जांच के संबंध में गठित यह कमेटी बीकानेर पहुंचेगी। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरुण कुमार पर एसोसिएट प्रोफेसर भर्ती में घोटाला और रिटायर्ड प्रोफेसर को डीडीओ पावर देने जैसी शिकायतें हैं। आरोप है कि कुलपति ने एसोसिएट प्रोफेसर भर्ती में धांधली के साथ-साथ कई वित्तीय अनियमितताएं भी की हैं। इन्हीं मुद्दों पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की ओर से कुलपति के खिलाफ शिकायतों की उच्च स्तरीय जांच की मांग को लेकर पिछले महीने 23 दिन तक विश्वविद्यालय परिसर में अनिश्चितकालीन धरना भी दिया गया था। मामला राजभवन तक पहुंचने के बाद कुलपति के खिलाफ कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर और कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर से संबंधित शिकायतों की जांच के लिए कमेटी गठित की गई है। राज्यपाल की ओर से गठित जांच कमेटी में संभागीय आयुक्त जोधपुर के अलावा अतिरिक्त संभागीय आयुक्त जोधपुर सहित पांच सदस्य शामिल हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति सचिवालय के सभागार में शिकायतकर्ताओं का पक्ष भी सुना जाएगा और दस्तावेजों की जांच होगी।

दहेज हत्या के आरोपी पति को सात साल की सजा सुनाई

कोटा, (निसं)। दहेज हत्या के करीब साढ़े चार साल पुराने मामले में महिला उत्पीड़न क्रम-2 न्यायालय ने पकड़े गये आरोपी पति को दोषी मानते हुए सात साल की सजा सुनाई। महिला उत्पीड़न क्रम-2 न्यायालय के न्यायाधीश ने आरोपी पति धनराज उर्फ दिनेश को दोषी मानते हुए सात साल की सजा से दंडित किया।

विशिष्ट लोक अभियोजक रामेत कुमार सैनी ने बताया कि मामले में मृतका के पिता प्रभुलाल ने 3 नवम्बर 2020 को न्यायालय में परिवाद पेश किया था जिसमें कहा था कि उसकी पुत्री मन्नीबाई की पांच साल पहले शादी हिरियाखेड़ी निवासी धर्मराज उर्फ दिनेश के साथ की थी। फरियादी ने परिवाद में कहा कि शादी के कुछ समय बाद उसकी पुत्री को कम दहेज लाने का ताना देते हुए मारपीट करते थे। परिवादी की पुत्री के पति का बनाया एक मकान था जिसे खाली करने को लेकर अन्नु बाई, बिरधीबाई लगातार उसके पीछे पड़ते थे। पति धर्मराज मोटरसाईकिल व 50 हजार रूपये की मांग कर परिवादी की पुत्री के साथ मारपीट करता था और उसकी पुत्री को घर से बार-बार भगा देता था। परिवादी ने परिवाद में कहा कि उसकी पुत्री उसके घर पर पीहर में रहने लगी 11 जून 2020 को उसके पति ने एक शपथ पत्र लिखकर दिया कि वह अगर उसकी पुत्री के साथ मारपीट करता है तो उसकी पुत्री व उसके परिवार के लोग उस पर कानूनी कार्यवाही कर सकते हैं। फरियादी ने परिवाद में कहा कि रक्षाबंधन के तीन दिन पहले उसकी पुत्री मुन्नीबाई ने फोन पर अपनी बड़ी बहन फूलाबाई से प्रताड़ना के चलते ससुराल में नही रहने की बात कही। परिवाद में कहा कि दो दिन बाद थाना मोड़क से पुलिस वालों का फोन आया कि मुन्नी बाई के साथ घटना घटी है यहां आ जाओ। पुलिस वालों के फोन के बाद जब वह उसकी पुत्री के ससुराल पहुंचा तो उसकी पुत्री उसको मृत अवस्था में मिली और उसकी पुत्री की गर्दन टूटी हुई थी। पुलिस मामले में कोई कार्यवाही नहीं कर रही। परिवादी के परिवाद पर पुलिस ने मामला दर्ज कर मामले में अनुसंधान करते हुए धारा 304-बी के तहत आरोपी हिरियाखेड़ी निवासी धर्मराज उर्फ दिनेश को गिरफ्तार किया। पुलिस ने मामले में अनुसंधान करते हुए आरोपी के खिलाफ न्यायालय में चालान पेश किया। मामले में 16 गवाहों के बयान एवं 25 दस्तावेज पेश किये गये।

अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति के उत्थान के लिए कार्य कर रही राज्य सरकार : भजनलाल शर्मा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को गुजरात के वडोदरा में राजस्थानी समाज की ओर से आयोजित सम्मान समारोह को संबोधित किया।

- 'विश्वभर में प्रवासी राजस्थानियों ने प्रदेश को किया गौरवान्वित'
- ''आपणो अग्रणी राजस्थान'' की संकल्प सिद्धि में प्रवासी राजस्थानी निभाएं अपनी भूमिका

वडोदरा/जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि विश्वभर में राजस्थान के प्रवासी प्रदेश का नाम गौरवान्वित कर रहे हैं। प्रवासी राजस्थानी अपनी कर्मभूमि के साथ-साथ मातृभूमि से भी जुड़े रहते हैं। उन्होंने कहा कि हमारे राजस्थान के प्रवासी विश्वभर में चिकित्सा, शिक्षा, पेयजल सहित विभिन्न सामाजिक सरोकार से जुड़े हुए कार्य कर रहे हैं। उन्होंने प्रवासी राजस्थानियों से आव्हान किया कि 'आपणो अग्रणी राजस्थान' के संकल्प को पूरा करने में अपना अहम योगदान दें। शर्मा सोमवार को गुजरात के वडोदरा में राजस्थानी समाज द्वारा आयोजित सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राजस्थान शक्ति और भक्ति की धरती है। इस भूमि पर महाराणा प्रताप, महाराजा सूरजमल, त्याग और तप की पर्याय पन्नाधाय, भक्ति की मूर्ति मीराबाई और पर्यावरण संरक्षिका मां अमृता देवी जैसी महान विभूतियों ने जन्म लिया था। इन सभी के महान कार्यों से आज तक हम सभी प्रेरणा ले रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य सरकार के 'कर्मभूमि से मातृभूमि' अभियान के तहत भामाशाहों और प्रवासी भाई-बहनों का भरपूर सहयोग मिल रहा है। इसके तहत राज्य में लगभग 45 हजार जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह अभियान वर्षा जल की एक-एक बूंद को सहेजकर जल उपलब्धता बढ़ाने तथा भूजल स्तर को बढ़ाने में भी मददगार बनेगा।शर्मा ने कहा कि प्रदेश की पानी की जरूरत को प्राथमिकता देते हुए रामजल सेतु लिंक परियोजना, यमुना जल समझौता, देवास परियोजना सहित अन्य जल परियोजनाओं को पूरा किया जा रहा है। शर्मा ने कहा कि गुजरात तथा राजस्थान दोनों राज्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। गुजरात की धरती पर महात्मा गांधी तथा सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे महापुरुष पैदा हुए, जिन्होंने देश की एकता और अखण्डता के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान के औद्योगिक क्षेत्र के विकास के लिए पिछले साल दिसंबर में राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट का आयोजन किया गया। उन्होंने कहा कि इस समिट में लगभग 37 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए, जिनमें से 3 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्तावों की ग्राउंड ब्रेकिंग की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के विजन को आधार मानकर राज्य सरकार गरीब, युवा, महिला और किसानों का कल्याण सुनिश्चित कर रही है।शर्मा ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार के समय में पेपरलीक की घटनाओं के कारण युवाओं के साथ विश्वासघात हुआ। हमारी सरकार भर्ती परीक्षाओं का आयोजन पूर्ण पारदर्शिता के साथ करवाने के साथ ही, युवाओं को समय पर रोजगार उपलब्ध करवा रही है। हम 5 वर्ष में युवाओं को 4 लाख सरकारी नौकरी देने के लक्ष्य के साथ काम कर रहे हैं तथा हमारी सरकार में एक भी पेपर लीक नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार पं. दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय के लक्ष्य के साथ अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति के उत्थान के लिए कार्य कर रही है तथा हम संकल्प पत्र के प्रत्येक वादे को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है।

गहलोत, बाड़ाबंदी व प्रशिक्षण शिविर में नहीं कर पा रहे अंतर : राजेंद्र राठौड़

भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रेसवार्ता के दौरान मंच पर वरिष्ठ नेता राजेन्द्र राठौड़, पूर्व केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी, प्रदेश मीडिया संयोजक प्रमोद वशिष्ठ और प्रदेश प्रवक्ता लक्ष्मीकांत भारद्वाज उपस्थित रहे।

- 'भाजपा के प्रशिक्षण शिविरों में विशेषज्ञों द्वारा गुड गवर्नेंस, शुचिता की राजनीति और नीतिगत निर्णयों पर आयोजित होते हैं सत्र'

जयपुर। भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने अशोक गहलोत के बयानों को खारिज करते हुए कहा कि गहलोत साहब बाड़ाबंदी और प्रशिक्षण में अंतर नहीं कर पा रहे हैं। शायद गहलोत पैरामाउंट और सूर्यमहल होटल भी भूल गए, जहां से उन्होंने 34 दिनों तक सरकार चलाई। अब सरकार चले जाने के बाद गहलोत को अपने पुराने घाव याद आ रहे है, जब षड्यंत्र करके उनकी सरकार गिराने की कोशिश की गई थी, कहीं पर निगाहें कहीं पर निशाना। गहलोत अपने राष्ट्रीय महासचिव सचिन पायलट से चर्चा कर लेते तो उनके पंसदीदा शब्द नकारा और निकम्मा नहीं बोलते।

राठौड़ ने कहा कि भाजपा में प्रशिक्षण प्रकोष्ठ बना हुआ है, भारतीय जनता पार्टी में प्रशिक्षण एक सतत प्रक्रिया है, जो देशभर में जिन जिन राज्यों में भाजपा सरकार है, वहां प्रशिक्षण शिविर चलते रहते हैं। ऐसे में गहलोत द्वारा मौज-मस्ती जैसे शब्दों का इस्तेमाल करना सरासर गलत है। भजनलाल सरकार लगातार जनहित में नीतिगत फैसले कर रही है। फिर चाहे बिजली की समुचित व्यवस्था हो या फिर पानी की व्यवस्था। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अल्प कार्यकाल में इस बार भीषण गर्मी के दौर में भी ना तो बिजली कटौति की जा रही है और ना ही पानी की समस्या आ रही है। यह सब हो पाया है भजनलाल सरकार की नीतियों के चलते। उन्होंने कहा कि मौज-मस्ती के बारे में राहुल गांधी से सवाल पूछना चाहिए, इनके राजकुमार हर तीसरे माह में मौज मस्ती करने के लिए विदेश भ्रमण पर जाते हैं और विदेश में जाकर भारत के खिलाफ अनर्गल बयानबाजी करते हैं। भाजपा के प्रशिक्षण में अलग-अलग क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा गुड गवर्नेंस के लिए और पारदर्शी शुचिता के साथ तथा नीतिगत निर्णय कैसे करें, किस प्रकार से जनप्रतिनिधि का आचरण हो, इस पर विभिन्न सत्रों में विचार-विमर्श होता है। कांग्रेस में प्रशिक्षण के नाम पर बाड़ाबंदी होती थी, केवल विमान यात्रा पर 3 करोड़ रूपए खर्च कर दिए जाते थे।

प्रेसवार्ता के दौरान मंच पर पूर्व केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी, भाजपा प्रदेश मीडिया संयोजक प्रमोद वशिष्ठ और भाजपा प्रदेश प्रवक्ता लक्ष्मीकांत भारद्वाज उपस्थित रहे।

सर्व समाज के समूह विवाह में हुआ 54 जोड़ों का पाणिग्रहण संस्कार

सेवा भारती समिति की ओर से जानकी नवमी पर सोमवार को अम्बावाड़ी स्थित उच्च माध्यमिक बालिका आदर्श विद्या मंदिर में सर्वजातीय चतुर्दशम सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन संपन्न हुआ।

जयपुर। सेवा भारती समिति की ओर से जानकी नवमी पर सोमवार को अम्बावाड़ी स्थित उच्च माध्यमिक बालिका आदर्श विद्या मंदिर में सर्वजातीय चतुर्दशम सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन संपन्न हुआ। घर जैसे माहौल में एक ही मंडप में सोलह समाजों के 54 जोड़ों ने एक दूसरे को जीवनसाथी के रूप में स्वीकार किया। इनमें दस अंतर्जातीय जोड़े भी थे। एक वधू के माता-पिता दोनों ही नहीं थे। उनके विवाह का संपूर्ण दायित्व सेवा भारती ने निभाया। पंडितों ने वैदिक विधि से पाणिग्रहण संस्कार संपन्न करवाया। सेवा भारती के सदस्य ऐसे उत्साहित थे जैसे कि घर में विवाह हो रहा हो। सेवा भारती की महिलाएं एक ही रंग की साड़ी पहने नजर आई और फेरों से पूर्व की रस्में करवाई। सोलह श्रृंगार कर बरी के बेस में दुल्हनों ने अपने-अपने दूल्हे राजा के संग फेरे लिए।

इस दौरान सामाजिक समरसता की मिसाल देखने को मिली। सालासर बालाजी मंदिर के विष्णु पुजारी, गायत्री चेतना केन्द्र मुरलीपुरा के मनु महाराज, महंत हरिशंकरदास वेदांती, अकिंचन महाराज सहित अनेक संतों-महंतों ने दलित दूल्हों के पैर धोए। भावपूर्ण दृश्य देखकर वर-वधु के परिजनों की आंखे सजल हो उठी। इससे पूर्व गाजेबाजे और लवाजमे के साथ विद्याधर महादेव मंदिर से बारात रवाना हुई। सभी 54 दूल्हे सजधज कर अलग-अलग घोड़ी पर बैठ कर विवाह स्थल पहुंचे और तोरण मारा। तोरण की रस्म के बाद स्टेज पर वरमाला कराई गई।

समिति की ओर से दूल्हा-दुल्हन को अपने जीवन की नई शुरुआत करने के लिए अनेक सामान उपहार स्वरूप दिए गए। इसमें सोने-चांदी के आभूषणबैड, अलमारी, पंखा, सिलाई मशीन, बक्सा, बर्तन, कपड़े सहित करीब दो दर्जन आयटम थे। सीतारामजी तस्वीर, तुलसी का पौधा, तुलसी माला, पुस्तक भी उपहार स्वरूप दी गई। इतना अधिक सामान के आगे लोडिंग वाहन भी छोटा पड़ गया। आनन फानन में बड़े लोडिंग वाहन मंगवाने पड़े।

खोजी द्वारचार्य रामरिछपाल दास महाराज, नारायण धाम के रामरतन दास महाराज, सिद्धेश्वर हनुमान मंदिर के महंत अवधेशाचार्य, अकिंचन महाराज, मोतीडूंगरी गणेश मंदिर के महंत पं. कैलाश शर्मा, खोले के हनुमान मंदिर के महामंत्री बृजमोहन शर्मा,राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक निंबाराम, प्रांत प्रचारक बाबूलाल, मूलचंद सोनी, शिव लहरी , विधायक बालमुकुंदाचार्य सहित अनेक विशिष्टजनों ने नव विवाहित जोड़ों को सुखद दाम्पत्य जीवन का आशीर्वाद प्रदान किया। समिति ने सभी को शॉल ओढ़ाकर, नारियल तथा माला पहनाकर सम्मान किया।

मुख्यमंत्री ने की जनसुनवाई

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर नियमित जनसुनवाई की। इस दौरान उन्होंने आमजन की प्रत्येक समस्या को सुना और अधिकारियों को इनके शीघ्र समाधान के निर्देश दिए। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार अपनी जवाबदेहिता सुनिश्चित करते हुए आमजन की परिवेदनाओं के त्वरित निस्तारण के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जनसुनवाई में आए प्रत्येक फरियादी को उसकी समस्या के निस्तारण के लिए चल रही प्रक्रिया के बारे में नियमित रूप से अवगत कराया जाए। जिससे पारदर्शिता सुनिश्चित हो तथा आमजन को राहत मिले।

अंता विधायक मीणा को कोर्ट में सरेंडर पर छूट मिली

जयपुर। सुप्रीम कोर्ट ने लोक सेवक पर हमला करने और सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने से जुडे मामले में अंता विधायक कंवरलाल मीणा को अंतरिम राहत दी है। अदालत ने मीणा को हाईकोर्ट के निर्देश पर ट्रायल कोर्ट में सरेंडर करने के संबंध में छूट दी है। सुप्रीम कोर्ट ने यह आदेश कंवरलाल मीणा की एसएलपी पर सुनवाई करते हुए दिए।

मीणा की ओर से अधिवक्ता नमित सक्सेना ने बताया कि एसएलपी में राजस्थान हाईकोर्ट के उस आदेश को चुनौती दी है, जिसमें मीणा को ट्रायल कोर्ट से मिली तीन साल की सजा को रद्द करने से मना कर दिया था। वहीं उन्हें ट्रायल कोर्ट के समक्ष तत्काल सरेंडर करने का निर्देश दिया था। हाईकोर्ट ने कहा था कि यदि अभियुक्त सरेंडर नहीं करे तो ट्रायल कोर्ट उसके गिरफ्तारी वारंट जारी करे। एसएलपी में कहा गया कि अभियोजन पक्ष के पास ठोस सबूत ही नहीं थे। कथित घटना में 300 से 400 लोग मौजूद थे, लेकिन इनमें से एक भी व्यक्ति से अभियोजन पक्ष के गवाह के तौर पर पूछताछ नहीं हुई। ट्रायल कोर्ट में भी किसी स्वतंत्र गवाह के बयान दर्ज नहीं कराए गए। इसके अलावा कथित रिवॉल्वर की कोई बरामदगी नहीं हुई है। ऐसा कोई रिवॉल्वर कभी था ही नहीं और इस तथ्य को भी किसी ठोस सबूत से साबित नहीं किया गया है। इसे हाईकोर्ट ने भी गलत तरीके से माना है। इसलिए हाईकोर्ट के आदेश पर रोक लगाई जाए। दरअसल हाईकोर्ट ने बारां जिले के अंता विधानसभा क्षेत्र के विधायक कंवरलाल मीना को 2005 में एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी को धमकाने और रिवाल्वर तानने के आपराधिक मामले में निचली अदालत की ओर से दी सजा को बरकरार रखा था।

ब्रोंकोम : माइक्रोप्लास्टिक जनित फेफड़ों की समस्याओं का आयुर्वेदिक समाधान

- पतंजलि का शोध प्रकाशन के अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल में प्रकाशित

हरिद्वार। आज पूरा विश्व प्लास्टिक के कारण होने वाली स्वास्थ्य संबंधी गंभीर समस्याओं से ग्रसित है। यह प्लास्टिक के छोटे-छोटे कण जिन्हें माइक्रोप्लास्टिक कहा जाता है,अब हवा,पानी और भोजन में भी पाए जा रहे हैं। और हम बिना जाने हर रोज़ इनका सेवन कर रहे हैं।

जब ये कण मानव शरीर में प्रवेश करते हैं, खासकर फेफड़ों में, तो यह कण, सूजन, जलन और कोशिकीय क्षति जैसी समस्याएं उत्पन्न करते हैं। इससे गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं।

पतंजलि के वैज्ञानिकों द्वारा चूहों पर किए गए नवीनतम शोध ने यह पुष्टि की है कि माइक्रोप्लास्टिक के कारण होने वाले फेफड़ों की कार्यक्षमता में कमी को आयुर्वेदिक औषधि ब्रोंकोम से काफी हद तक रोका जा सकता है।

इस अनुपम अनुसन्धान से पुष्टि हुई कि ब्रोंकोम के उपचार ने माइक्रोप्लास्टिक से होने वाले फेफड़ों के इन्फ्लेमेशन से जुड़ें मार्कर्स जैसे, तथा इसके साथ-साथ कम किया। यह शोध विश्व प्रतिष्ठितप्रकाशन के अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल में प्रकाशित हुआ है। इस अवसर पर आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि पतंजलि का उद्देश्य आयुर्वेद को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित करना और विश्व की स्वास्थ्य से जुड़ी वर्तमान समस्याओं का समाधान प्रदान करना है। यह शोध प्रमाणित करता है कि सनातन ज्ञान,लक्षित अनुसंधान और साक्ष्य-आधारित औषधियों के माध्यम से पर्यावरणीय कारकों द्वारा जनित बीमारियों का भी समाधान संभव है।

पतंजलि अनुसन्धान संस्थान के उपाध्यक्ष और प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. अनुराग वार्ष्णेय ने इस अवसर पर कहा कि सनातन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के इस अद्भुत संगम में पूरे विश्व को निरोगी बनाने की अपार क्षमता है। हमारा प्रयास है कि आयुर्वेद के इस प्राचीन ज्ञान को वैज्ञानिक प्रमाणों के साथ प्रस्तुत किया जाए।

वनरक्षक भर्ती परीक्षा पेपर लीक मामले में 18 आरोपियों का आरोप पत्र दाखिल

जयपुर। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने वन रक्षक भर्ती परीक्षा 2020 पेपर लीक मामले में गिरफ्तार शुदा अठारह आरोपियों का एडीजे न्यायालय बांसवाड़ा में आरोप पत्र (चार्जशीट) दाखिल कर दिया है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एटीएस और एसओजी वीके सिंह ने बताया कि वन रक्षक भर्ती परीक्षा 2020 पेपर लीक मामले में गिरफ्तार शुदा छगन पारगी निवासी सज्जनगढ, जिला बांसवाड़ा, सूर्यकान्ता निवासी बांसवाड़ा हाल वनरक्षक बांसवाड़ा, फिरोज निनामा निवासी सज्जनगढ जिला बासवाडा, समुएल निनामा निवासी भूगड़ा जिला बांसवाड़ा हाल वनरक्षक बांसवाड़ा, प्रताप बामनिया निवासी सज्जनगढ जिला बांसवाड़ा, हीराराम सारण उर्फ हरीश निवासी गुडामालानी जिला बाड़मेर हाल तृतीय श्रेणी अध्यापक उदयपुर ,रमेश कुमार जाणी निवासी भीनमाल जिला जालौर ,शारदा निवासी बागपुरा जिला उदयपुर, कमलेश कुमार निवासी करडा जिला जालौर हाल कांस्टेबल उदयपुर, रेशमी निवासी करडा जिला जालौर, सांवलाराम जाट निवासी गुडामलानी जिला बाड़मेर, कंवराराम निवासी गुड़ामलानी जिला बाड़मेर, भीयाराम निवासी गुडामालानी जिला बाड़मेर हाल कांस्टेबल उदयपुर, देवाराम निवासी करडा जिला जालौर हाल कांस्टेबल उदयपुर, सीमा कुमारी निवासी सिवाना जिला बालोतरा हाल वनरक्षक रेंज बालोतरा, टिमो निवासी बीजड़ा जिला बाड़मेर हाल वनरक्षक रेंज चौहटन, कंवरा राम चौधरी निवासी सिणधरी जिला बालोतरा हाल स्टेशन मास्टर पालनपुर गुजरात और लिखमाराम निवासी बिजराड जिला बाड़मेर हाल पुलिस कांस्टेबल ट्रेफिक पुलिस चौहटन के खिलाफ एडीजे न्यायालय बांसवाड़ा में आरोप पत्र (चार्जशीट) दाखिल किया है।

एडीजी एटीएस और एसओजी वीके सिंह ने बताया कि 30 जून 2024 को पुलिस थाना राजतलाब जिला बांसवाड़ा की ओर से 13 नवम्बर 2022 की दोनों पारियों में हुई वनरक्षक भर्ती परीक्षा-2020 का पेपर लीक होने की जानकारी होने पर एसओजी में मामला दर्ज हुआ था। इस मामले में उप महानिरीक्षक पुलिस एसओजी राजस्थान जयपुर परिस देशमुख के पर्यवेक्षण में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भवानी शंकर मीणा की ओर से गिरफ्तार शुदा आरोपियों की अपर जिला एवं सेशन न्यायालय बांसवाड़ा में सोमवार को आरोप पत्र (चार्जशीट) दाखिल की गई।

भजनलाल शर्मा ने किए मां नर्मदा के दर्शन

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अपने गुजरात प्रवास के पहले दिन सोमवार को केवड़िया में केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जे.पी. नड्डा के साथ पावन नर्मदा नदी के तट पर स्थित मां नर्मदा केदैवीय स्वरूप के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। शर्मा ने इस दौरान मां नर्मदा से प्रदेशवासियों का जीवन सुख-समृद्धि और खुशहाली से परिपूर्ण होने की कामना की।

ग्रेट इंडियन ट्रैवल बाज़ार एग्जीबिशन का उद्घाटन

ग्रेट इंडियन ट्रैवल बाजार के दूसरे दिन सीतापुरा स्थित नोवोटेल जयपुर कन्वेंशन सेंटर में ओडिशा की उपमुख्यमंत्री, प्रावती परिदा, भारत सरकार के अतिरिक्त सचिव एवं पर्यटन महानिदेशक, सुमन बिल्ला और फिक्की की पूर्व अध्यक्ष एवं ललित सूरी हॉस्पिटैलिटी ग्रुप की सीएमडी, डॉ. ज्योत्सना सूरी ने एग्जीबिशन का उद्घाटन किया।

जयपुर। ग्रेट इंडियन ट्रैवल बाजार (जीआईटीबी) के 14वें संस्करण के दूसरे दिन सीतापुरा स्थित नोवोटेल जयपुर कन्वेंशन सेंटर में एग्जीबिशन की रिबन कटिंग सेरेमनी के साथ भव्य शुरुआत हुई। ओडिशा की उपमुख्यमंत्री, प्रावती परिदा; भारत सरकार के अतिरिक्त सचिव एवं पर्यटन महानिदेशक, सुमन बिल्ला और फिक्की की पूर्व अध्यक्ष एवं ललित सूरी हॉस्पिटैलिटी ग्रुप की सीएमडी, डॉ. ज्योत्सना सूरी ने एग्जीबिशन का उद्घाटन किया। इस पूरे दिन के दौरान बायर्स और सैलर्स के बीच पूर्व निर्धारित बी2बी बैठकों का सिलसिला उत्साहपूर्वक चला।

इस इंटरनेशनल मार्ट का आयोजन पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार; पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार और फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) द्वारा किया जा रहा है। इस आयोजन को होटल एंड रेस्टोरेंट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (एचआरएआर), इंडियन हेरिटेज होटल्स एसोसिएशन (आईएचएचए) और राजस्थान एसोसिएशन ऑफ टूर ऑपरेटर्स (राटो) जैसे प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और क्षेत्रीय एसोसिशंस का सहयोग प्राप्त है।

इस आयोजन में 53 देशों से आए कुल 270 फॉरेन टूर ऑपरेटर्स (एफटीओ) और 10 राज्यों के पर्यटन बोर्ड प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं। भाग लेने वाले राज्यों में राजस्थान, ओडिशा, मध्य प्रदेश, गोवा, झारखंड, जम्मू-कश्मीर, अंडमान और निकोबार, गुजरात, तमिलनाडु के साथ-साथ दिल्ली भी शामिल है।

आवास प्लस सर्वेक्षण की सूची में अब कोई भी प्रतीक्षारत परिवार शेष नहीं रहेगा

- केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण में राजस्थान को 2 लाख 73 हजार 752 घरों का लक्ष्य आवंटित कर दिया है
- प्रदेश के ग्रामीण विकास विभाग ने भी जिला कलेक्टर्स को पत्र लिखकर सभी पात्र परिवारों को स्वीकृति मय प्रथम किश्त जारी करने के निर्देश दे दिए हैं

जयपुर। राज्य सरकार की गरीबी मुक्त गांव बनाने की मुहिम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अथक प्रयासों से बड़ी सफलता मिली है। 6 साल से भी अधिक समय से अपने पक्के घर का इंतजार कर रहे परिवारों का सपना अब साकार होने जा रहा है। वर्ष 2018 के आवास प्लस सर्वे में शामिल प्रदेश के 2 लाख 73 हजार 752 परिवारों को शीघ्र ही पक्के आवासों की सौगात मिलेगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सरकार बनने के बाद से ही केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय से समन्वय बनाकर लगातार प्रदेश के गांवों को गरीबी मुक्त बनाने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं। हाल ही में उन्होंने दिल्ली जाकर केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात कर प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा), दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) सहित अन्य योजनाओं का अधिकाधिक लाभ प्रदेश को दिलवाने के संबंध में सार्थक चर्चा की थी।

इस पर सकारात्मक रुख दिखाते हुए केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) के अंतर्गत राजस्थान को 2 लाख 73 हजार 752 घरों का लक्ष्य आवंटित कर दिया है। इस तरह राज्य सरकार के प्रयासों से वर्ष 2018 के आवास प्लस सर्वेक्षण की सूची में अब कोई भी प्रतीक्षारत परिवार शेष नहीं रहेगा। इससे पहले राजस्थान में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के अंतर्गत लगभग 22 लाख 23 हजार आवास बनाने के लक्ष्य का आवंटन किया गया था, जिनमें से करीब 20 लाख आवासों का काम लगभग पूरा हो चुका है। प्रदेश के ग्रामीण विकास विभाग ने भी जिला कलक्टर्स को पत्र लिखकर सभी पात्र परिवारों को स्वीकृति मय प्रथम किश्त जारी करने के निर्देश दे दिए हैं। उल्लेखनीय है कि देश के ग्रामीण क्षेत्रों में 'सभी के लिए आवास' के उद्देश्य से प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) क्रियान्वित की जा रही है। इस योजना का लक्ष्य बुनियादी सुविधायुक्त पक्के घरों के निर्माण के लिए बेघर और जीर्ण-क्षीर्ण मकानों में रहने वाले पात्र ग्रामीण परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान करना है।

योजना के अंतर्गत प्रदेश में मकानों के निर्माण के लिए पात्र परिवारों को 1 लाख 20 हजार रुपये की सहायता दी जा रही है। लाभार्थियों के खातों में राशि का प्रत्यक्ष लाभ अंतरण किया जाता है। इसके अतिरिक्त स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण के अंतर्गत आवास में शौचालय के लिए 12 हजार रुपये की सहायता दी जाती है। साथ ही, मनरेगा में 90 श्रम दिवस का पारिश्रमिक भी देय है।

अवैध रूप से रहने वाले सात बांग्लादेशी नागरिकों को हिरासत में लिया

भारत का नागरिक होने के संबंध में कोई वैध दस्तावेज नहीं पाये गये

खेतड़ी, (निसं)। पचेरीकलां पुलिस ने थाना क्षेत्र में अवैध रूप से रह रहे सात बांग्लादेशियों को हिरासत में लिया है। पुलिस की ओर से यह कार्रवाई गृह मंत्रालय के निर्देश पर की गई है।

थानाधिकारी राजपाल सिंह ने बताया कि पहलगाम हमले के बाद सीमा पर चल रहे तनाव को लेकर गृह मंत्रालय की और से अवैध रूप से रहने वाले लोगों को चिन्हित कर वापस भेजने के निर्देश दिए गए थे। जिस पर अवैध रूप से रहने रोहिंग्या बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान करने उन्हें हिरासत में लेने और निर्वासित करने हेतु झुंझुनूं जिले में सघन अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के दौरान थाना पचेरीकलां क्षेत्र के एचडी ईंट-भट्ठा को पर रहने वाले लोगों के बारे में जांच की गई। जांच करने पर यहां पर 7 अवैध बांग्लादेशी नागरिक पाए गए, जिनमें तीन पुरूष, दो महिला व दो बच्चे मिले। इनके पास भारत का नागरिक होने के संबंध में कोई वैध दस्तावेज नहीं पाये गये तथा पूछताछ पर स्वयं को बांग्लादेश के नागरिक होना बताया है। जिस पर उक्त सभी नागरिकों को दस्तयाब किया गया। पुलिस द्वारा पूछताछ करने पर बांग्लादेशी नागरिकों ने बिना वैध दस्तावेज के भारत में प्रवेश करना बताया है, जिनको थाना पचेरी कलां पर लाकर सदिंग्धता के आधार पर पूछताछ करने पर इनके पास किसी प्रकार के यात्रा दस्तावेज नहीं मिले हैं।

पचेरीकलां पुलिस ने थाना क्षेत्र में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशियों को हिरासत में लिया।

- 'हिरासत में लिए गए लोगों को उच्च अधिकारियों के निर्देश पर वापस भेजने की कार्रवाई की जाएगी'

थानाधिकारी ने बताया कि हिरासत में लिए गए लोगों को उच्च अधिकारियों के निर्देश पर वापस भेजने की कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान टीम में एएसआई फतेहसिंह, एचसी राजवीर सिंह, कांस्टेबल कैलाश चंद, कमलेश, घनश्याम आदि शामिल थे।

रोडवेज बस स्टैंड पर युवक ने युवती को गोली मारी

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के सुभाष नगर थाना क्षेत्र स्थित रोडवेज बस स्टैंड पर युवती को गोली मारने के मामले में हिरासत में लिए गए आरोपी ने पुलिस पूछताछ में खुलासा किया है। इसके साथ ही गंभीर घायल युवती को हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया गया है। वहीं बड़ी संख्या में समाज के लोग एमजी हॉस्पिटल में जमा हो गए, जिनसे समझाइश कर पुलिस ने मामले को शांत करवाया।

- युवक एक अन्य युवती को मारने की नीयत से उसका पीछा करते हुए भीलवाड़ा पहुंचा था
- गोली मारने के दौरान निशाना चूकने की वजह से गोली अन्य युवती को जा लगी

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पारस जैन ने बताया कि मूलत: कोटा शहर की रहने वाली रूमाना खान भीलवाड़ा से कोटा के लिए रोडवेज बस पहुंची, जहां बस में बैठने के दौरान पीछे से एक युवक ने उसे गोली मार दी। बताया जा रहा है कि उक्त युवक दौसा का रहने वाला लोकेश शर्मा है जो कि रानी नामक एक अन्य युवती को मारने की नीयत से उसका पीछा करते हुए भीलवाड़ा पहुंचा था और उसे गोली मारने के दौरान निशाना चूकने की वजह से गोली रूमाना को लगी जो कि उसकी पीठ पर जा लगी और अटक गई। जिसके चलते उसे उपचार के लिए हायर सेंटर रेफर किया गया है।

पुलिस ने भीड़ द्वारा पकड़े गए आरोपी को हिरासत में ले लिया और उसका उपचार कराया।

वहीं पुलिस ने भीड़ द्वारा पकड़े गए आरोपी को हिरासत में लेकर मामले की गहनता से जांच शुरू कर दी है। वहीं दूसरी और जिला पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह ने घटनास्थल का निरीक्षण कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

बीकानेर की मशहूर फली सांगरी को जीआई टैग मिला

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर की मशहूर फली सांगरी को अब वैश्विक मान्यता मिल गई है। इसे जीआई टैग मिल गया है। इससे अंतरराष्ट्रीय बाजार में इसकी कीमत में दो से तीन गुना हो जाएगी। दुनिया में पहचान भी बनेगी। पश्चिमी राजस्थान के बीकानेर, बाड़मेर और जैसलमेर में ही इसकी पैदावार ज्यादा होती है।

अब तक राजस्थान के 16 उत्पादों को जीआई टैग मिल चुका है। 17वें उत्पाद एसकेआरएयू ने सांगरी को जीआई टैग दिलाने में महती भूमिका निभाई। जीआई टैग मिलने के बाद इसके उत्पादों का निर्यात मूल्य वर्तमान 1500 से 3000 रुपये प्रति किलोग्राम मिलने की उम्मीद है। जीआई टैग का लेबल लगने से उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण सांगरी मिलेगी। खेजड़ी का संरक्षण होगा। जैव प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख डॉ. सुजीत कुमार यादव के नेतृत्व में विश्वविद्यालय की टीम के प्रयासों की ओर किए गए प्रयासों से ये सफलता मिली। यादव ने लगभग 700 पेज का व्यापक दस्तावेज तैयार किया।

- अंतरराष्ट्रीय बाजार में इसकी कीमत में दो से तीन गुना हो जाएगी

डॉ. सुजीत यादव के अनुसार भारत में लगभग 600 जीआई टैग वाली वस्तुएँ हैं। जिनमें से लगभग 200 कृषि क्षेत्र में हैं। राजस्थान में सोजत मेहंदी जीआई टैग वाला एकमात्र कृषि उत्पाद है। खाद्य उत्पादों में बीकानेरी भुजिया को यह टैग मिला है। कोलायत के गोविंदसर गांव में खेजड़ी उत्पादों पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक पंजीकृत किसान समिति की स्थापना की गई। यादव ने कहा विश्वविद्यालय ने इस समिति की ओर से जीआई टैग के लिए आवेदन किया। सफलता मिलते ही जिम्मेदारी सांगरी को जीआई टैग दिलाने में सफलता हासिल करने के बाद सरकार ने यादव को नई जिम्मेदारी दे दी। आनुवांशिक एवं पादप प्रजनन विभाग एसकेआरएयू बीकानेर के हैड डॉ. सुजीत यादव और कृषि महाविद्यालय नागौर के कृषि अर्थशास्त्री डॉ. विकास पावड़िया को राज्य स्तर पर सलाहकार नियुक्त किया है। ये दोनों राजस्थान के उत्पादों को जीआई टैग दिलाने में मदद करेंगे। कृषि आयुक्त चिन्मयी गोपाल ने इन दोनों के सलाहकार बनाने के आदेश 24 अप्रैल को किए थे।

अज्ञात युवक की पन्द्रह दिन पुरानी लाश मिली

मृतक का चेहरा जानवर खा चुके थे

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के सुभाष नगर थाना क्षेत्र स्थित डंपिंग यार्ड में एक अज्ञात युवक की जानवरों द्वारा नौंची हुई पन्द्रह दिन पुरानी लाश मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। मृतक की शिनाख्त के पुलिस लगातार प्रयास कर रही है।

सुभाष नगर थाना प्रभारी शिवराज गुर्जर के अनुसार, सांगानेर क्षेत्र में सिंदरी के बालाजी से आगे आकोला रोड पर स्थित डंपिंग यार्ड क्षेत्र में लोगों ने सोमवार सुबह एक लाश पड़ी देखी। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची, जहां करीब 40 वर्षीय युवक की 15 दिन पुरानी लाश पड़ी थी। वह काले रंग के जिंस और टी शर्ट पहने है। मृतक का चेहरा जानवर नौंचकर खा चुके थे। पुलिस ने आसपास के लोगों से मृतक की पहचान के प्रयास किये, लेकिन फिलहाल उसकी पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर एमजी अस्पताल की मोर्चरी में सुरक्षित रखवा दिया। पुलिस मृतक की शिनाख्त के प्रयास कर रही है। उधर, अभी यह साफ नहीं हो पाया कि इस अज्ञात व्यक्ति की मौत हत्या है या आत्महत्या। मृतक की पहचान और पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही यह स्पष्ट हो पाएगा।

- पुलिस मृतक की शिनाख्तगी के प्रयास कर रही है

पति पर झूठा मामला दर्ज कराने का आरोप

पीड़िता ने पति के साथ अनहोनी होने की आंशका जताई

अजमेर, (कासं)। अजमेर आरपीएससी कॉलोनी वैशाली नगर निवासी युवती ने एसपी वंदिता राणा को शिकायत पत्र देकर कहा है कि चटाईगंज निवासी एक महिला ने उसके पति पर झूठा मुकदमा दर्ज करवाया है। पीड़िता ने उक्त मामले में निष्पक्ष जांच की मांग की है। मामले में क्रिश्चियनगंज थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर अनुसंधान शुरू कर दिया है।

पीड़िता द्वारा पुलिस को दी गई रिपोर्ट में आरोप लगाया कि चटाईगंज निवासी महिला मेरे पति को अपने प्रेम जाल में फंसाकर जयपुर ले गई और एक होटल में अपनी मर्जी से रूकी, जहां उसने मेरे पति के साथ अश्लील फोटो व वीडियो बना लिए और वीडियो व फोटो के जरिए ब्लैकमेल कर रही है और कई बार मेरे पति को धमकी देकर रूपए ऐंठ लिए। महिला द्वारा मेरे पति व परिवार वालों को बार-बार परेशान व धमकी देने से परेशान मेरा पति दो माह से घर नहीं आ रहा है। पीड़िता ने अपने पति के साथ अनहोनी होने की आंशका भी व्यक्त की है।

- पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है

पीडिता का आरोप है कि महिला ने मेरे पति से करीब चार चेक भी ले लिए, नोटिस आने के बाद परिवादिया को पता चला, पीड़िता ने बताया कि उक्त महिला ने 60 लाख रूपए चेक में भरकर लगाए है।

पीड़िता का आरोप है कि अभियुक्ता पूर्व में भी कई लोगों के विरूद्ध झूठे मुकदमे कर पैसे ऐंठ चुकी है और कई लोगों के साथ छेड़छाड़ व बलात्कार जैसे झूठे मुकदमे दर्ज करवाकर पैसे ऐंठने का काम करती है और इसी प्रकार मेरे पति को भी अपने प्रेम जाल में फांसकर एवं ब्लैकमेल कर मोटी रकम ऐंठने का प्रयास कर रही है। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पॉक्सो का आरोपी जिला आरबीएम अस्पताल के जेल वार्ड से फरार

भरतपुर, (निसं)। जिले के जिला आरबीएम अस्पताल के जेल वार्ड से आजीवन कारावास की सजा भुगत रहा पॉक्सो का आरोपी रात को फरार हो गया है। जैसे ही आरोपी के फरार होने की सूचना पुलिस को मिली तो पुलिस विभाग की टीम आरोपी की तलाश में जुट गई है।

जानकारी के अनुसार करौली जिले के सदर थाना क्षेत्र के नहारगढ़ गांव के रहने वाले राजवीर सिंह पुत्र बलराम (28) को पॉक्सो एक्ट के तहत दोषी मानते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी। राजवीर को 1 -10 - 2023 को भरतपुर की सेन्ट्रल जेल सेवर में भेजा गया था। राजवीर तभी से जेल में था। बीमार होने पर आरोपी राजवीर को 3 मई 2025 सुबह 11 बजकर 25 मिनट पर जिला अस्पताल के जेल वार्ड में भर्ती कराया गया था लेकिन आज रात को आरोपी राजवीर जेल वार्ड से फरार हो गया। जेल वार्ड के इंचार्ज नेकराम ने बताया है की मेरी ड्यूटी सुबह 8 बजे से शुरू होती है रात को जेल वार्ड के इंचार्ज जय सिंह रहते है। में सुबह जब 8 बजे ड्यूटी पर आया तो पता लगा की एक कैदी फरार हो गया है। हमने उच्च अधिकारियों को सूचना भिजवा दी है। पुलिस की टीम गठित कर आरोपी की तलाश की जा रही है।

सेंट्रल जेल सेवर के अधीक्षक परमजीत सिंह ने बताया कि जिला करौली के सदर थाना क्षेत्र के गांव नाहरगढ़ निवासी राजवीर सिंह को लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम की धारा के तहत दोषी ठहराया गया था। करौली कोर्ट द्वारा आरोपी राजवीर को दोषी करार किये जाने और आजीवन कारावास की सजा सुनाए जाने के बाद आरोपी राजवीर को 1 अक्टूबर 2023 को सेंट्रल जेल सेवर लाया गया था।

24 लाख की स्मैक बरामद, दो जने गिरफ्तार

टोंक, (निसं)। मेहंदवास थाना क्षेत्र में पुलिस ने सोमवार को कार्रवाई करते हुए 24 लाख की स्मैक के साथ दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों से 80 हजार की नकदी और कार भी जब्त की है।

मेहंदवास थाना अधिकारी ओमप्रकाश चौधरी के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम ने गश्त के दौरान देव माता क्षेत्र से कार सवार दो बदमाशों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से करीब 24 लाख रुपए की लागत की 112.5 ग्राम स्मैक बरामद की है। इसके अलावा पुलिस ने कार, इलेक्ट्रॉनिक कांटा, लेनदेन के 80 हजार रुपए भी बरामद किए हैं। वहीं कार सवार आरोपी युवक राजेश सांसी (35) पुत्र किशन सांसी निवासी रतवाई थाना मोर और मोहनलाल (52) पुत्र भूरालाल तंवर से कार तलाशी ली गई तो कार के डैश बोर्ड में 112.5 ग्राम स्मैक मिली। इसके साथ ही एक इलेक्ट्रॉनिक कांटा भी मिला, जिससे यह संदेह और पुख्ता हुआ कि आरोपी नशे की तस्करी में लिप्त हैं, जिनको गिरफ्तार कर मामला दर्ज कर अनुसंधान जारी है।

'धरातल पर भौतिक रूप से स्वच्छता, पर्यावरण और जल संरक्षण के कार्य दिखना चाहिए'

नई दिल्ली/जयपुर/उदयपुर। राजस्थान सरकार के स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के प्रदेश समन्वयक और नगर निकाय झुंझूनू, नवलगढ़, मंडावा, बांसवाड़ा तथा उदयपुर के लिए न्यायालय द्वारा नियुक्त न्याय मित्र के के गुप्ता ने केन्द्र सरकार को सुझाव दिया है कि भारत में स्वच्छता की स्थिति को बेहतर बनाने और सुधारने के लिए केन्द्र और राज्य सरकार को स्वच्छता कार्यक्रम से जुड़े और सकारात्मक परिणाम दिलाने वाले सक्रिय व्यक्तियों को केन्द्र, राज्य और जिला स्तरीय बैठकों में आवश्यक रूप से आमंत्रित करने के लिए संबंधित सभी विभागों के अधिकारियों को पाबंद करने के निर्देश जारी करने चाहिए। न्याय मित्र के के गुप्ता ने प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, मुख्यमंत्री सहित उच्च अधिकारियों को पत्र लिखे हैं।

गुप्ता ने कहा कि हमारे प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के दूरगामी विजन के साथ उनके नेतृत्व में पिछले वर्षों देश में स्वच्छ भारत अभियान का सफल क्रियान्वयन किया गया जो कि काफी सफल भी रहा। स्वच्छ भारत मिशन की क्रियान्वित के बावजूद आज भी भारत में स्वच्छता की स्थिति चिंताजनक है। गुप्ता ने कहा है कि स्वच्छता, पर्यावरण और जल संरक्षण के नाम पर देशभर में अधिकारियों और कर्मचारी की नियुक्ति की गई है जिसके तहत स्वच्छ भारत मिशन शहर और ग्रामीण में भारत सरकार के संबंधित मंत्रालय द्वारा समय-समय पर जारी किए जाने वाले दिशा निर्देश पर कार्य करना होता है लेकिन अधिकारी और कर्मचारी इसे गंभीरता से नहीं ले रहे हैं और स्वच्छता जैसे एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियान में असंवेदनशीलता बरती जा रही है। हमें सिर्फ भाषणबाजी और कागजों और दस्तावेजों में झूठ आंकड़ों की हवाबाजी करने के कृत्य से बाहर आना होगा और वास्तविकता में मौके पर धरातल पर स्वच्छता के सभी मापदंड पर कार्य होने चाहिए।

के.के. गुप्ता

- न्याय मित्र के के गुप्ता ने प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, मुख्यमंत्री सहित उच्च अधिकारियों को पत्र लिखे

गुप्ता ने बताया कि उनके डूंगरपुर नगरपरिषद के कार्यकाल में स्वच्छता, जल संचय और पर्यावरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हुए हैं जिनकी स्वयं प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने सराहना की और डूंगरपुर नगर परिषद को प्रदेश, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार मिले। इसी प्रकार केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के संसदीय क्षेत्र गाँधी नगर की पाँच ग्राम पंचायतों में किये गए कार्यों और देश भर की पाँच अग्रणी पंचायतों के पुरस्कार मिलने के लिए भी स्वयं गृह मंत्री ने उनके कार्यों की प्रशंसा की। इसके अलावा तत्कालीन केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने संसद में डूंगरपुर के जल संचय मॉडल को सराहा गया है। साथ ही दिल्ली सरकार से मंत्री और अधिकारियों की समिति ने डूंगरपुर आकर डूंगरपुर के जल संचय मॉडल और जल संरक्षण प्रणाली का अवलोकन किया था। डूंगरपुर में उनके कार्यकाल के पाँच वर्षों में पच्चीस हजार पौधे लगाने से नगर में पर्यावरण के इंडेक्स आदर्श मापदंडों से भी बेहतर हुए हैं। गुप्ता ने सुझाव दिया कि इन अनुभवों के आधार पर स्वच्छता, जल संचय और पर्यावरण से जुड़ी बैठकों में उन जैसे व्यक्तियों को स्थाई रूप से शामिल करने और आमंत्रित करने से राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन और सम्बद्ध कार्यक्रमों को बढ़ावा मिलेगा तथा राष्ट्रीय मिशन धरातल पर उतरेगा।

एक तरफा प्रेम के चलते दूल्हे पर चाकू से हमला किया

कोटा, (निसं)। देवली मांझी थाना इलाके में युवती से एक तरफ प्यार के चलते एक जने ने अपने साथियों के साथ मिलकर दूल्हे पर चाकू से हमला कर उसे घायल कर दिया। पुलिस टीम ने मामले में कार्रवाई करते हुए हमलावर सहित तीन जनों को गिरफ्तार किया है।

ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि देवली मांझी के सातीखेड़ा में एक बारात में घोड़ी पर सवार दूल्हा इन्द्रपुरिया निवासी लक्ष्मीनारायण पर चाकू से हमला कर उसे घायल करने के मामले में आरोपियों की गिरफ्तारी के लिये पुलिस उपअधीक्षक सांगोद अभय कुमार के सुपरविजन में देवली मांझी थाने के उपनिरीक्षक थानाधिकारी सुरेश मीणा के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि गठित टीम ने साईबर सेल के सहयोग से मामले का खुलासा करते हुए सातीखेड़ा निवासी विष्णु (22), बृजलिया निवासी रोहित (20) एवं बृजलिया निवासी सोनू (26) को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की।

- पुलिस ने हमलावर सहित तीन जनों को गिरफ्तार किया

देवली मांझी थाने के उपनिरीक्षक थानाधिकारी सुरेश मीणा ने बताया कि पकड़े गये आरोपी विष्णु ने पूछताछ में बताया कि युवती से एकतरफा प्यार करता था। जिसके चलते विष्णु ने अपने दो साथी रोहित और सोनू के साथ मिलकर लक्ष्मीनारायण पर हमले का प्लान बनाया।

थानाधिकारी ने बताया कि बारात जब दूल्हन के घर पहुंचने वाली थी उससे पहले विष्णु ने अपने दोनों साथी रोहित और सोनू के साथ बैठकर शराब पी और बाद में बारात में घुसकर घोड़ी पर सवार दूल्हा लक्ष्मीनारायण पर चाकू से हमला कर उसे घायल कर दिया। पकड़े गये आरोपियों से अनुसंधान जारी है।

यह था मामला :-देवली मांझी इलाके के सातलखेड़ी में दो मई को बूंदी के इन्द्रपुरिया गांव से बारात सातीखेड़ी आई थी। बारात दूल्हन के घर पहुंचने वाली थी कि अचानक से घोड़ी पर सवार दूल्हे लक्ष्मीनारायण की पीठ पर चाकू से वार कर दिया जिससे वह घोड़ी से नीचे गिर गया और अचानक हुई घटना से बारात में भगदड़ मच गई। हमले में घायल लक्ष्मीनारायण को उपचार के लिये कोटा के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। हमले में घायल की रिपोर्ट पर पुलिस ने हमलावरों के खिलाफ मामला दर्ज किया और मामले में कार्यवाही करते हुए हमलावर सहित तीन जनों को गिरफ्तार कर लिया।

आपसी विवाद में गोली मारकर युवक की हत्या

उदयपुर, (निसं)। आपसी विवाद के चलते तीन युवकों ने एक युवक पर बंदूक से फायर कर हत्या कर दी और फरार हो गए।

जानकारी के अनुसार होमाराम पुत्र लाला गरासिया निवासी बोरली माण्डवा अपने पुत्र बसुरा गरासिया व मीठा पुत्र समा गरासिया निवासी बारली तीनों 3 मई को सुबह 11 बजे भैरूजी मंदिर जा रहे थे, जहां पर भूता पुत्र धूला गरासिया निवासी बोरली, सुबिया पुत्र धूला गरासिया निवासी बोरली ने बसुरा व मीठा के साथ विवाद किया। वहां से ये तीनों अलग हो गए। बाद में बसुरा को अकेला देख 6 बजे शाम को भूता गरासिया, धुला गरासिया सुबिया गरासिया और इनका पिता धुला पुत्र थावरा निवासी बोरली माण्डवा बसुरा के पीछे पड़े व अचलाराम पुत्र थावरा, अग्रेस पुत्र धुला व अम्बिया पुत्र हमीरा, वागा पुत्र हमीरा गरासिया ने पिछा कर बसुरा पर बंदूक से फायर किया।

पावटा में ट्रैफिक जाम से व्यापारी, आमजन परेशान

पावटा, (निसं)। कस्बे के उप जिला अस्पताल के सामने कट को बंद करने के बाद से सर्विस रोड़ों पर हर दिन जाम की स्थिति से वाहन चालकों एवं राहगीरों को काफी परेशानी हो रही है। जाम की वजह से कई घंटे छोटे से बड़े वाहन जाम में फंसे रहते हैं, जिससे यात्रा करने वाले लोगों व व्यापारियों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। रविवार को इस जाम में कोटपुतली-बहरोड़ जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल की गाड़ी भी जाम में फंस गई, लेकिन रोड पर अव्यवस्थित खड़े कोई भी वाहन नहीं हटे। कलेक्टर की गाड़ी इस जाम में फंसी रही और धीरे-धीरे रेंगते हुए निकाली गयी।

वहीं ग्रामीणों का मानना है कि पावटा कस्बे के बड़े फ्लाईओवर से लेकर उप जिला अस्पताल तक सर्विस रोड़ों पर बाइक जैसे छोटे-छोटे वाहनों व चौपहिया वाहनों को जहां-तहां खड़ा करने से ही जाम लगता है। पुलिस प्रशासन द्वारा वाहन चालकों से कहा गया था कि वे अपने वाहन को सड़क से हटाकर पार्किंग में लगायें, लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ। जाम की समस्या को लेकर वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजावत, प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण, ईओ फतेह सिंह मीणा ने पहले भी बाजारों व सर्विस रोड़ों पर घूम-घूमकर वाहन चालकों को अपनी सीमा में रहकर वाहन खड़ा लगाने की हिदायत दी थी। साथ ही चेतावनी दी गई थी कि यदि स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो कार्यवाही की जाएगी। इसके बावजूद जाम की समस्या जस की तस बनी हुई है।

- जाम की वजह से कई घंटे छोटे से बड़े वाहन जाम में फंसे रहते हैं
- यात्रा करने वाले लोगों व व्यापारियों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है

इस संदर्भ में प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण सिंह ने कहा कि जाम हटाने के लिए यातायात पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है और बल लगाकर हमेशा जाम को हटाया जाता है।

सर्विस रोड़ों पर व मुख्य बाजार में बड़े वाहन का प्रवेश होते ही जाम की समस्या उत्पन्न हो जाती है, जिस कारण लंबी दूरी तय करने वाले वाहन चालकों को भारी परेशानी झेलनी पड़ती है, लेकिन इस जाम की समस्या से कोई निजात नहीं दिला पा रहा है। कस्बे में ट्रैफिक व्यवस्था सुधारने के लिए यातायात पुलिस द्वारा किया गया तमाम प्रयास विफल होता नजर आ रहा है। कस्बे को जाम से मुक्त कराने तक हर योजना मात्र औपचारिकता बन कर रह गयी है। स्थिति यह है कि कस्बे के सर्विस रोड़ों पर दिन भर लंबा जाम लगा रहता है। जिससे न केवल लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, बल्कि उच्च अधिकारियों एवं एंबुलेंस व अन्य आपातकालीन सेवाओं को भी काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

बालक से कुकर्म का प्रयास

श्रीगंगानगर, (निसं)। नगर परिषद के एक रेन बसेरे में अपनी मां के साथ रह रहे 8 वर्षीय बालक के साथ एक युवक द्वारा कुकर्म किए जाने का मामला सामने आया है। घटना 29 अप्रेल की है। पीड़िता मां की ओर से कोतवाली में युवक पर मुकदमा दर्ज करवाया गया है। पीड़ित बालक के पुलिस और मजिस्ट्रेट बयान दर्ज करवा लिए गए हैं। बालक का स्वास्थ्य परीक्षण भी करवाया जा चुका है।

उबेश्वरी मंदिर के तालाब में हजारों मछलियां मृत मिली

उदयपुर, (का.स.)। उदयपुर शहर से करीब 25 किमी दूर प्राचीन उबेश्वरजी महादेव मंदिर के तालाब में बड़ी संख्या में मछलियों में मरने का मामला सामने आया है। सोमवार को पानी की सतह पर सैकड़ों रंग-बिरंगी मछलियां मृत मिली। इतनी बड़ी संख्या में मछलियों को देखकर ग्रामीण भी हैरान रह गए। उन्होंने वन विभाग को इसकी सूचना दी।

- सुबह ग्रामीणों ने मृत मछलियां देखकर वन विभाग को सूचना दी, पानी के सैंपल लिए

बताया जा रहा है कि उबेश्वर जी महादेव मंदिर के निचले हिस्से में बड़े एनीकेट का निर्माण करवाया जा रहा है। निर्माण के लिए उबेश्वरजी के तालाब से पानी लिया गया। तालाब में पानी की कमी आने के कारण मछलियों में मरने की संभावना जताई जा रही है। हालांकि ठेकेदार का कहना है कि पानी नहीं लिया गया। क्योंकि एनीकेट निर्माण के लिए पास से गुजर रहे नाले के पानी की व्यवस्था है। मामले में उदयपुर डीएफओ अजय चित्तौड़ा का कहना है कि मछलियों के अचानक मरने की सूचना मिली है। टीम ने मौके पर पहुंचकर पानी के सैंपल लिए है। जांच के बाद ही मछलियों के मरने के कारण की स्थिति स्पष्ट हो पाएगी।

ये मेल रविवार को दोपहर 2-3 बजे के आसपास आया और उन्होंने तुरंत अमरोह पुलिस को इसकी सूचना दी। पुलिस फिलहाल भारतीय तेज गेंदबाज को ईमेल के जरिए भेजी गई धमकी के मामले की जांच कर रही है। - मो. शमी

भारतीय गेंदबाज, जान से मारने की धमकी पर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — उर्विल पटेल

गुजरात के विकेटकीपर बल्लेबाज उर्विल पटेल को इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के लिए अपनी टीम में जगह दी है। सीएसके ने उर्विल को 30 लाख के बेस प्राइस में टीम में शामिल किया है। बेदी को सीएसके ने 55 लाख में खरीदा था, लेकिन उन्हें एक भी मैच में अवसर नहीं मिला और वह अब बाएं टखने में चोट के कारण आईपीएल से बाहर हो गए हैं। उर्विल इससे पहले 2023 में गुजरात टाइटंस टीम का भी हिस्सा थे। कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ के बाहर होने के बाद सीएसके ने मिड ट्रायल के लिए आयुष म्हात्रे के साथ उर्विल को भी बुलाया था।

क्या आप जानते हैं ?... आईपीएल में बतौर कप्तान सीजन में सबसे ज्यादा बार 400 प्लस रन बनाने का रिकॉर्ड विराट कोहली के नाम दर्ज है।

प्लेऑफ में जगह पक्की करने उतरेगी मुंबई

मुंबई, 5 मई। लगातार छह जीत से उत्साहित पांच बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस मंगलवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 56वें मैच में गुजरात टाइटंस के खिलाफ जीत दर्ज कर प्लेऑफ में जगह पक्की करने वानखेड़े स्टेडियम के मैदान में उतरेगी। अंक तालिका के अनुसार गुजरात 10 मैचों में से सात मैच में जीत हासिल कर 14 अंक के साथ चौथे नंबर पर है, वहीं मुंबई इंडियंस 11 मैचों में से सात जीत के साथ 14 अंक के साथ तीसरे नंबर पर है। गुजरात का रनरेट 0.867 है, वहीं मुंबई का रनरेट गुजरात से बेहतर होने के साथ 1.274 है। दोनों टीमों के बीच प्लेऑफ में जगह पक्की करने के लिए कड़ा मुकाबला होने की उम्मीद है। हार्दिक पंड्या की अगुवाई वाली मुम्बई इंडियंस ने टूर्नामेंट में अपनी चैंपियनशिप लय फिर से हासिल कर ली है, उन्होंने अपने पिछले मैच में राजस्थान रॉयल्स को 100 रनों से हराया था और अपने पिछले पांच मैचों में से चार में जीत के साथ अपने घरेलू मैदान पर दबदबा बनाया है। इसके विपरीत कमजोर गेंदबाजी आक्रमण से जूझ रही शुभमन गिल की अगुवाई वाली गुजरात टाइटंस अपने पिछले मैच में सनराइजर्स हैदराबाद पर 38 रन की जीत के बावजूद प्रमुख गेंदबाजों की अनुपस्थिति और सीनियर तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज की खराब फॉर्म के कारण मुंबई की मजबूत बल्लेबाजी लाइनअप के सामने कमजोर दिख रही है।

सनराइजर्स हैदराबाद बनाम दिल्ली कैपिटल्स मैच बारिश के कारण रद्द

हैदराबाद, 5 मई। सनराइजर्स हैदराबाद और दिल्ली कैपिटल्स के बीच सोमवार को इंडियन प्रीमियर लीग के 55वें मैच को एक पारी के बाद आई बारिश के कारण रद्द कर दोनों टीमों के बीच एक-एक अंक बांट दिये गये है। पहली पारी में दिल्ली ने बल्लेबाजी करते हुए सात विकेट पर 133 रन का स्कोर बनाया था। इसके बाद बारिश शुरु हो गई। बारिश रूकने के बाद अम्पायरों और दोनों टीमों के कप्तानों ने मैदान का निरीक्षण किया। जिसके बाद अम्पायरों ने मैच को रद्द घोषित करते हुए दोनों टीमों के बीच एक-एक अंक बांट दिये। इसी के साथ सनराइजर्स हैदराबाद प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो गई है।

इससे पहले आज यहां सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस ने टॉस जीतकर दिल्ली कैपिटल्स को पहले बल्लेबाजी के लिये आमंत्रित किया। बल्लेबाजी करने उतरी दिल्ली कैपिटल्स पर हैदराबाद सनराइजर्स के गेंदबाज कहर बने टूटे। पैट कमिंस ने दिल्ली के तीन शीर्ष बल्लेबाज करुण नायर (शून्य), फाफ डुप्लेसी (तीन) और अभिषेक पोरेल (आठ) को अपना शिकार बनाकर मैच पर दबाव बनाया। इसके बाद हर्षल पटेल ने कप्तान अक्षर पटेल (छह) को आउट कर दिल्ली को चौथा झटका दिया। आठवें ओवर की पहली गेंद पर ए एल राहुल (10) को जयदेव उनादकट ने आउटकर सनराइजर्स हैदराबाद को पांचवी सफलता दिलाई। ऐसे संकट के समय ट्रिस्टन स्टब्स और विप्रज निगम ने पारी को संभालने का प्रयास किया। दोनों बल्लेबाजों ने संभलकर खेलते हुए छठे विकेट के लिए 33 रन जोड़े। 13वें ओवर में विप्रज निगम (18) के रनआउट होने पर यह साझेदारी टूटी। इसके बाद आशुतोष शर्मा ने स्टब्स के साथ सातवें विकेट के लिए 66 रन जोड़कर दिल्ली को संकट से निकाला। आशुतोष शर्मा ने 26 गेंदों में तीन छक्के और दो चौके लगाते हुए (41) रन बनाये। ट्रिस्टन स्टब्स 36 गेंदों में (नाबाद 41) रन बनाये।

दौसा प्रीमियर लीग : आरसीए या जिला क्रिकेट संघ दौसा का अधिकृत टूर्नामेंट नहीं : बृजकिशोर उपाध्याय

जयपुर, 5 मई। जिला क्रिकेट संघ दौसा के सचिव बृजकिशोर उपाध्याय ने बताया कि बीसीसीआई और आरसीए का अधिकृत टूर्नामेंट आईपीएल और आरपीएल है, इसके अलावा बीसीसीआई और आरसीए किसी भी टूर्नामेंट को अनुमति नहीं देते है लेकिन आजकल लोग अपने स्वार्थपूर्ति और धन कमाने और खेलो का व्यवसायीकरण करने के लिए नए नए हथकंडे अपना रहे है। किसी भी खेल में खिलाड़ियों की बोली या टीम की बोली या ऑक्शन जैसा होना दुर्भाग्यपूर्ण है। बीसीसीआई और आरसीए की गाइडलाइन और आदेशानुसार आरसीए से अनुबंधित खिलाड़ियों को किसी भी व्यवसायिक टूर्नामेंट में खेलना या उससे जुड़ना अवांछनीय और दंडनात्मक श्रेणी में माना गया है। सभी आरसीए और डीसीए से अनुबंधित खिलाड़ियों को यह सूचित किया जाता है की आरसीए और डीसीए टूर्नामेंट के अलावा किसी भी व्यावसायिक टूर्नामेंट से जुड़ना या उसमें खेलना अवांछनीय और गलत है। और फिर भी कोई खिलाड़ी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से शामिल पाया जाता है तो आरसीए और डीसीए उसके खिलाफ कठोर कार्यवाही करेगा और उन खिलाड़ियों को बैन किया जाएगा। सचिव उपाध्याय ने बताया कि डीसीए दौसा जिले में क्रिकेट के बढ़ावा देने वाले खिलाड़ियों और खेलप्रेमियों के लिए हमेशा साथ और सहयोग देने को तत्पर है अभी हाल में दौसा पुलिस लीग दौसा लीग एवम पूरे जिले में विभिन्न टूर्नामेंट में जिला क्रिकेट संघ ने यथा संभव मदद की है और आगे भी जारी रहेगी परंतु निजी स्वार्थों की पूर्ति और खेल का व्यवसायीकरण कर धन लाभ अर्जित करने वाले लोगों से हमेशा दूरी रहेगी है।

पूर्व आईपीएल खिलाड़ी शिवालिक गिरफ्तार

जोधपुर, 5 मई। राजस्थान के जोधपुर के कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड पुलिस ने पूर्व इंडियन प्रीमियर लीग क्रिकेटर शिवालिक शर्मा को दुष्कर्म के एक मामले में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। थानाधिकारी हमीर सिंह भाटी ने सोमवार को बताया कि एक युवती की ओर से दर्ज कराई रिपोर्ट के बाद पुलिस ने शिवालिक शर्मा को गुजरात में वडोदरा के अटलादरा थाना क्षेत्र से शनिवार को गिरफ्तार किया और जोधपुर अदालत में पेश किया। जहां उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। शिवालिक वडोदरा का रहने वाला है और मुंबई की आईपीएल टीम से खेलता था। रिपोर्ट में पीड़िता ने बताया कि शिवालिक शर्मा पर कुड़ी भगतासनी के सेक्टर दो में रहने वाली एक युवती ने संगीन आरोप लगाते हुए एफआईआर दर्ज कराई है।

पीड़ित युवती ने अपनी शिकायत के दौरान पुलिस को बताया कि वह फरवरी 2023 में गुजरात के वडोदरा घूमने गई थी, जहां उसकी मुलाकात शिवालिक शर्मा से हुई। उस मुकाबले के बाद से दोनों अच्छे दोस्त बन गए थे। धीरे-धीरे उनकी दोस्ती गहरी हो गई और फोन पर बातचीत के दौरान वे करीब आए। इसके बाद दोनों ने अपने परिवार के अपने बारे में बताया। दोनों के परिजनों ने आपस में मुलाकात की और दोनों की सगाई कर दी। युवती का आरोप है कि सगाई के बाद जब शिवालिक जोधपुर आया तो उसने शादी का झांसा देकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। वे राजस्थान में कई जगहों पर घूमने भी गए, लेकिन अगस्त 2024 में उसे और उसके परिवार को बड़ौदा बुलाया गया, जहां शिवालिक के माता-पिता ने हम दोनों की शादी पर एतराज जताते हुए सगाई तोड़ दी। सगाई टूटने के बाद युवती ने जोधपुर के कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड थाना में शिवालिक शर्मा के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है। एसीपी आनंद सिंह राजपुरोहित ने बताया कि पीड़िता ने जोधपुर के कुड़ी थाने में शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने का आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया है।

लवमीत कटारिया होंगे सीनियर भारतीय वॉलीबाल टीम के सलेक्टर

जयपुर, 5 मई। भारतीय वॉलीबॉल फेडरेशन की एडहॉक कमेटी के चेयरमैन रोहित राजपाल और एडहॉक कमेटी की सदस्य अलख नंदा अशोक ने भारतीय वॉलीबॉल की चयन ट्रायल की चयन कर्ताओं की 7 सदस्यों की कमेटी बनाई है जिसमें अंतरराष्ट्रीय वॉलीबॉल खिलाड़ी एवं भारतीय वॉलीबॉल के कप्तान रह चुके जयपुर के लवमीत कटारिया को भारतीय टीम की चयन समिति का सदस्य नियुक्त किया है।

लवमीत बैंगलोर पहुंच गए है और कल सीनियर भारतीय वॉलीबॉल टीम का सलेक्शन करेंगे। चयन ट्रायल कल 6 मई को बैंगलोर के साईं सेंटर में सुबह ली जावेगी। लवमीत के चयन पर अर्जुन अवॉर्डी सुरेश मिश्रा, बलदेव सिंह गोदारा, अंतरराष्ट्रीय कोच जयनारायण चौधरी ने लवमीत को बधाई प्रेषित कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

पिस्तौल स्पर्धा में राजस्थान के खिलाड़ियों को मेडल

जयपुर, 5 मई। राजस्थान राइफल एसोसिएशन को अपने प्रतिभाशाली एथलीटों पर गर्व हो रहा है जो की नई दिल्ली में आयोजित 07 वी खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2025 पिस्तौल स्पर्धा में राजस्थान का प्रतिनिधित्व कर रहे है। इस प्रतिष्ठित आयोजन में देश भर के शीर्ष निशानेबाजों की भागीदारी होगी और राजस्थान का दल अपनी छाप छोड़ने के लिए तैयार है। इस आयोजन में 10 मीटर एयर पिस्तौल मिक्स्ड यूथ टीम इवेंट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे राज्य के प्रतिभाशाली निशानेबाज मयंक चौधरी और प्राची ने भाग लिया राजस्थान की इस जोड़ी ने मिलकर 570-16 अंको के साथ स्वर्ण पदक हासिल किया। खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2025 द्वारा आयोजित इस प्रकार के आयोजन पूरे भारत में खेल भावना को बढ़ावा देने और प्रतिभा के पोषण के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है।

द्वितीय अतिया परवीन स्मृति महिला क्रिकेट प्रतियोगिता

जयपुर, 5 मई। मैत्री क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित द्वितीय अतिया परवीन स्मृति महिला क्रिकेट प्रतियोगिता के अन्तर्गत आज खेले गए मैचो मे डायमण्ड क्रिकेट क्लब, मे नीतू शर्मा 72 रन की अर्द्ध शतकीय पारी तथा फोरा गुर्जर 10 रन पर 4 विकेट, माहिरा खान हेट्रिक सहित 9 रन 3 विकेट, जानवी डागर हेट्रिक सहित 7 रन पर 3 विकेट की घातक गेंदबाजी की बदौलत संस्कार क्रिकेट एकेडमी को 108 रन से हराकर फाइनल में प्रवेश किया।

आज खेले गए दूसरे मैच मे एमएनपीएस गर्ल्स क्रिकेट एकडमी ने मेघा सैनी 37 रन, निवेदिता कविया 20 रन तथा प्रिया सामोता 14 रन पर 2 विकेट, सीमा जाट 3 ओवर में 6 रन देकर 1 विकेट, चिन्टू राठौड़ 9 रन पर 1 विकेट की शानदार गेंदबाजी की बदौलत लो स्कोरिंग मैच मे जयपुरिया क्रिकेट एकडमी को 6 विकेट से हराकर फाईनल में प्रवेश किया। कल फाईनल मे एमएनपीएस एकेडमी तथा डायमण्ड क्लब के मध्य फाईनल खेला जायेगा। जबकि संस्कार क्रिकेट एकेडमी व जयपुरिया क्रिकेट एकडमी के मध्य हार्ड लाईन फाईनल तीसरे एवं चौथे स्थान के लिए खेला जायेगा।

टॉस जीतकर डायमण्ड क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए नीतू शर्मा 72 रन, स्नेहा उबाना 33 रन की मदद से निर्धारित 20 ओवर मे 4 विकेट खोकर 162 रन बनाए। गैदबाजी मे संस्कार एकेडमी की ओर से रीदिमा शेखावत 27 रन पर 2 विकेट तथा प्रिया यादव व तनिष्का राठौड़ प्रत्येक 1-1 विकेट रहकर सफल गेंदबाज रहे।

जवाबी पारी मे संस्कार क्रिकेट एकेडमी की ओर से तनिष्का राठौड़ 15 रन व सरगम मीणा 13 रन को छोड़कर कोई भी बल्लेबाज डायमण्ड क्लब के गेंदबाजो फोरा गुर्जर 10 रन पर 4 विकेट, माहिरा खान हेट्रिक सहित 9 रन पर 3 विकेट एवं जानवी डागर हेट्रिक सहित 7 रन पर 3 विकेट की घातक गेंदबाजी के समक्ष संस्कार की पूरी टीम 18.3 ओवर में 54 रन पर सिमट गई। इस मैच का वुमन ऑफ द मैच फोरा गुर्जर डायमण्ड क्लब रही।

दूसरे मैच मे जयपुरिया एकेडमी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए तनीका शर्मा 18 रन व संजना सोनी 35 रन, सोनम सैनी 17 रन, की बल्लेबाजी के बावजूद जयपुरिया की टीम निर्धारित 20 ओवर मे 82 रन ही बना सकी। गेंदबाजी मे एमएनपीएस एकेडमी की ओर से प्रिया सामोता 14 रन पर 2 विकेट, सीमा जाट 6 रन पर 1 विकेट, चिंटू राठौड़ 9 रन पर 1 विकेट ने कसी हुई गेंदबाजी करते हुए जयपुरिया की पारी को कन्ट्रोल करके 82 रन तक सीमित कर दिया। जवाबी पारी मे एमएनपीएस एकेडमी ने मेघना सैनी 37 रन, निवेदिता कविया 20 रन की मदद से विजय लक्ष्य 83 रन, 4 विकेट खोकर 15.5 ओवर में हासिल कर 6 विकेट से जीत हासिल कर ली। वुमैन ऑफ द मैच मेघना सैनी एमएनपीएस एकेडमी रही।

जेरठी फुटबाल क्लब सीकर ने सिटी वालव्स फुटबाल क्लब को 4-0 से शिकस्त दी

जयपुर, 5 मई। रॉयल फुटबॉल क्लब ग्राउंड, मानसरोवर जयपुर व चौगान स्टेडियम जयपुर में मैच खेले गए राजस्थान फुटबॉल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत ने बताया कि आज के दिन 4 मैच खेले गए जिसमें अभी तक 57 मैच खेले जा चुके है। आज रॉयल फुटबाल क्लब के मैदान में खेले गए मैच।

प्रथम मैच : सनराइस फुटबाल क्लब और राजस्थान राइजिंग फुटबाल क्लब के बीच खेला गया मैच 11/0 से शानदार जीत हासिल की। पहले हॉफ में सनराइज ने 8/0 से आगे रहा दूसरे हॉफ में 3 और गोल करके सनराइज ने मैच जीत लिया। पहला गोल विशल ने 4, 9, 40, मिनट पर तीन गोल किए, भीम सिंह ने तीन गोल 5, 53, 90, मिनट पर, दिव्यांशु ने 29, 37 मिनट पर दो गोल किए। 33, एक गोल गौरव 45, मिनट में यशराज ने 66, मिनट पर विकास ने गोल किए।

दूसरा मैच : सिटी वालव्स फुटबाल क्लब जयपुर ओर जेरठी फुटबाल क्लब सीकर के बीच खेला गया ने मैच जेरठी फुटबाल क्लब ने 4/0 से जीत लिया। अमन ने दूसरे ही मिनट में गोल किया। रोहित ने 33, 54, 57 मिनट पर गोल किए।

नार्दन स्लैम स्क्वैश : अमेरिका, मलेशिया और केन्याई खिलाड़ी भी आगे बढ़े सानवी और ईशा ने किए उलटफेर, राजस्थान के 9 खिलाड़ी अंतिम 8 में

जयपुर, 5 मई। दिल्ली की गैर वरीयता की सानवी बाटर ने सोमवार को यहां नार्दन स्लैम 2025 स्क्वैश चैंपियनशिप के महिला वर्ग में बड़ा उलटफेर करते हुए टॉप सीड महाराष्ट्र की अंजली सेमवाल को 3-1 से पराजित कर दिया। वहीं एक और अनसीडेड खिलाड़ी महाराष्ट्र की ईशा श्रीवास्तव ने उत्तर प्रदेश की 5वीं वरीयता की नव्या सुन्दराजन को 3-2 से पराजित कर दिया। इन उलटफेर के बीच राजस्थान के नौ खिलाड़ियों ने अपने-अपने वर्ग के क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली।

राजस्थान की दिव्यांशी जैन ने अंडर-13 गर्ल्स के प्री क्वार्टर फाइनल में शरण्या ठाकुर को 3-0 से पराजित किया। बॉयज अंडर-11 कैटेगरी में राजस्थान के वीर श्रृंगी ने विहान कोहली को 3-0 से हरा अंतिम आठ में जगह बनाई। बॉयज अंडर-13 के प्री क्वार्टर में राजस्थान के प्रभव बाजोरिया ने ओम ठाकुर को 3-0 से और धैर्य गोगिया ने रोहन खुराना को 3-0 से पराजित किया।

गर्ल्स अंडर-15 में राजस्थान की गौरी जायसवाल ने एकम गुमान को 3-0 से हरा क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई

लेकिन इसी आयु वर्ग के बॉयज में राजस्थान का फरीद अन्द्रावी प्री क्वार्टर फाइनल में दूसरी वरीयता के हर्षल राणा से 0-3 से हार गए। अंडर-17 बॉयज के प्री क्वार्टर में सुभाष चौधरी ने सहर्ष सहारा को 3-0 से पराजित किया, जबकि अयान कुच्छल को पार्थवीर सिंह से 1-3 से हार का सामना करना पड़ा। बॉयज अंडर-19 में राजस्थान के उदित मिश्रा ने दुष्यंत सिंह को 3-0 से हरा अंतिम आठ में जगह बनाई। वहीं संस्कृति चतुर्वेदी ने दिक्षा को 3-0 से हरा क्वार्टर फाइनल का रुख किया।

ये विदेशी खिलाड़ी भी आगे बढ़े

मुख्य ड्रॉ के पहले दिन मलेशिया की शशाना इस्ट्रीथन ने भारत की नव्या आनन्द को 3-0 से हरा क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया। अन्य कैटेगरी के प्री-क्वार्टर फाइनल मैचों में गर्ल्स अंडर-17 में मलेशिया की रश्मिका श्री रघु ने प्राची चन्देल को 3-0 से, बॉयज अंडर-13 में अमेरिका के श्यान समतानी ने रिधान गुप्ता को 3-0 से, मलेशिया के कोविन सुन्दरन ने कृषिव मित्तल को 3-0 से और पुरुषों के वर्ग में केन्या के मुक्तदिर निम्जी ने वर्चस्व अग्रवाल को 3-0 से और बॉयज अंडर-11 में मलेशिया के वरेस्वर ने नक्षत्र गंगवानी को 3-0 पराजित कर अंतिम आठ में जगह बना ली।

रणविजय सिंह खेलों इंडिया यूथ गेम्स में राज्य दल के चीफ डे मिशन

जयपुर, 5 मई। 7वें खेलों इंडिया यूथ गेम्स 4 से 15 मई 2025 तक बिहार के 5 शहरों पटना, गया, राजगीर, बेगूसराय एवं भागलपुर तथा दिल्ली में आयोजित हो रहे है, इस यूथ गेम्स में कुल 27 खेलों का आयोजन होगा, जिसमें राजस्थान के 315 खिलाड़ी 23 खेलों में भाग ले रहे हैं। राजस्थान दल के चीफ डे मिशन रणविजय सिंह चंपावत को बनाया गया है। राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद के सचिव राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने बताया कि राजस्थान का 315 खिलाड़ियों का दल आर्चरी, एथलेटिक्स, बैडमिंटन, बास्केटबाल, बॉक्सिंग, साईक्लिंग रोड, तलवारबाजी, फुटबाल, गटका, जिम्नास्टिक, जूडो, कबड्डी, कलारिपयट्टू, मलखम्भ, रग्बी, सेपक तकरा, शूटिंग, तैराकी, थांगा, वालीबॉल, भारोत्तोलन, कुश्ती और योगासना की स्पर्धाओं में भाग ले रहा है। उन्होंने बताया कि शूटिंग, जिम्नास्टिक और साईक्लिंग ट्रैक स्पर्धा नई दिल्ली में होगी जबकि शेष स्पर्धाए बिहार के विभिन्न शहरों में आयोजित हो रही है।

19वीं सबजूनियर राज्य स्तरीय वुशू प्रतियोगिता में जयपुर टीम ने जीता प्रथम स्थान का खिताब

जयपुर, 5 मई। राजस्थान वुशु संघ व बीकानेर वुशु संघ के तत्वाधान में दिनांक 02 से 05 मई 2025 तक डॉ. करणी सिंह स्टेडियम, बीकानेर में आयोजित 19वीं सबजूनियर राज्य स्तरीय (बालक/बालिका) वुशु प्रतियोगिता के समापन समारोह के मुख्य अतिथि गोकुल जोशी, शहर अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी बीकानेर, व कार्यक्रम की अध्यक्षता विकास हर्ष, युवा उपनिदेशक, जनसंपर्क विभाग राजस्थान सरकार, विशिष्ट अथिति अनिल बोडा, उपनिदेशक शारीरिक राजस्थान सरकार, करण प्रताप सिंह सिसोदिया, प्रदेशाध्यक्ष करनी सेना व राजेश कुमार टेलर, कोच, भारतीय वुशु टीम रहे। हीरानन्द कटारिया, अध्यक्ष राजस्थान वुशु संघ ने बताया की प्रतियोगिता में जयपुर टीम ने 14 स्वर्ण 11 रजत व 14 कांस्य पदक सहित कुल 126 अंको के साथ प्रथम स्थान व जोधपुर टीम ने 8 स्वर्ण, 5 रजत पदक व 8 कांस्य पदक सहित कुल 71 अंको के साथ दुसरे स्थान व कोटा टीम ने 6 स्वर्ण, 6 रजत व 4 कांस्य पदक सहित कुल 52 अर्को साथ तीसरे स्थान पर रही। प्रतियोगिता में बेस्ट बालक खिलाडी का खिताब हनुमानगढ़ के विक्की व बेस्ट बालिका का खिताब जालोर की आराध्या को मिला। प्रतियोगिता में बेस्ट अनुशासन टीम का खिताब बीकानेर टीम को मिला।

फेडरेशन इक्वेस्ट्रियन इंटरनेशनल द्वारा जयपुर की दिव्यकृति ने एशिया में फिर से शीर्ष रैंकिंग हासिल की

जयपुर, 5 मई। जयपुर की दिव्यकृति सिंह ने एशिया में फिर से नंबर 1 रैंक हासिल की है। यह रैंकिंग उन्हें 2024-25 के ग्लोबल ड्रेसाज रैंकिंग में दी गई है, जिसे इक्वेस्ट्रियन खेल की वैश्विक संस्था, फेडरेशन इक्वेस्ट्रियन इंटरनेशनल (एफईआई) द्वारा जारी किया गया है। दिव्यकृति सिंह ने इक्वेस्ट्रियन खेल की दुनिया में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। वर्ष 2023 में उन्होंने एशिया में नंबर 1 रैंक प्राप्त की और चीन में हुए 19वें एशियाई खेलों में गोल्ड मेडल जीता। उनके बेहतरीन प्रदर्शन को सम्मानित करते हुए उन्हें जनवरी 2024 में प्रतिष्ठित अर्जुन पुरस्कार से नवाजा गया। यह गौरव पाने वाली वह इक्वेस्ट्रियन खेल की पहली और एकमात्र महिला हैं। इसके अतिरिक्त, भारत निर्वाचन आयोग ने उन्हें स्टेट आइकन के रूप में भी नामित किया है।

इस उपलब्धि पर दिव्यकृति ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, मैं एशिया में शीर्ष रैंक पाकर बेहद गौरवांवित महसूस कर रही हूं। मेरा

लक्ष्य है कि मैं लगातार अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाऊं और पूरी मेहनत के साथ कोशिश करूं कि 2028 के लॉस एंजेलेस ओलंपिक में भारत के लिए पदक जीत सकूं।

दिव्यकृति सिंह इस समय नीदरलैंड्स में रहकर प्रशिक्षण ले रही हैं। वह एशियन चैंपियनशिप 2025 (थाईलैंड), एशियन गेम्स 2026 (जापान), वर्ल्ड गेम्स 2026 (जर्मनी) और ओलंपिक 2028 (लॉस एंजेलेस, यूएसए) की तैयारी में जुटी हैं। 2023 में एशियन गेम्स में गोल्ड मेडल जीतने के बाद से ही वह अंतरराष्ट्रीय ड्रेसाज प्रतियोगिताओं में लगातार शानदार प्रदर्शन कर रही हैं। हाल ही में उन्होंने सऊदी अरब के रियाद में आयोजित एक प्रतियोगिता में व्यक्तिगत सिल्वर और ब्रॉन्ज मेडल भी जीते। गौरतलब है कि इक्वेस्ट्रियन एकमात्र जेंडर-न्यूट्रल ओलंपिक स्पोर्ट है, क्योंकि इसमें पुरुषों और महिलाओं के लिए कोई अलग-अलग श्रेणियां नहीं हैं। वे समान रूप से प्रतिस्पर्धा करते हैं।

राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय
सेक्टर-18, कुम्भा मार्ग, प्रताप नगर, जयपुर-302033, दूरभाष: 0141-279515, 0141-2795508, 2795536
Email: registrar@ruhsraj.org, ruhsstore@gmail.com

No. F.6 ( ) RUHS/Store/2025-26/3738 Dated :- 02/05/2025

Notice Inviting Bids

Single Stage Two envelope online bids are invited up to 02.00 pm of 08/05/2025 for Event Management work as per scope of work for the 10th Convocation of RUHS, Jaipur. (Total Approx. Cost Rs. 30.00.000.00) Details may be seen in the Bidding Documents at the Website **sppp.raj.nic.in** or **www.ruhsraj.org. UBN No. : RUH2526SLOB00003**

Registrar
Raj.Samwad/C/25/1720 Rajasthan University of Health Sciences, Jaipur

कार्यालय नगर परिषद शाहपुरा -जयपुर ग्रामीण
Ph. 01422-272066 Email- shahpura.jaipur@gmail.com

क्रमांक :-न0प0शा0 / 2025-26 / 276 दिनांक :- 01.05.2025

निविदा सूचना वर्ष 2025-26

नगर परिषद शाहपुरा जयपुर द्वारा निम्नानुसार कार्य की निविदा आमंत्रित की जाती है विस्तुत विवरण वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in तथा http://eproc.rajasthan.gov.in कार्यालय समय सूचना बोर्ड पर देखा जा सकता है।

SPPP UBN
DLB2526WSOB03284, DLB2526WSOB03285

आयुक्त
राज.संवाद / सी / 25 / 1776 नगर परिषद शाहपुरा जयपुर

कार्यालय नगरपालिका मण्डल, सुमेरपुर, जिला - पाली

क्रमांक : न.पा.सु / विकास / ई-निविदा / 2025-26 / 913 दिनांक : 01.05.2025

-: ई-निविदा 04/2025-26 सूचना :-

नगरपालिका मण्डल, सुमेरपुर की ओर से स्वच्छ भारत मिशन योजनान्तर्गत नालो की सफाई हेतु श्रमिक आपूर्ति कार्य हेतु दर अनुबन्ध मान्यता प्राप्त पंजीकृत संवेदको से निविदा लागत 25 लाख रूपये की निविदा आमंत्रित की जाती है। आंशिक अथवा पूर्णतः निविदा स्वीकृत / अस्वीकृत करने का अधिकार ई-निविदा स्वीकृत अधिकारी को होगा। ई-निविदा की विस्तृत जानकारी व शर्ते कार्यालय में एवं विभाग की वेब साईट www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखी व पढी जा सकती है।
जिनके UBN No. निम्नलिखित है:-
1-DLB2526SLOB03391

Bid Selling Last Date	15/05/2025 / 10.00 AM

राज.संवाद / सी / 25 / 1757 प्रशासक नगरपालिका, सुमेरपुर अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका, सुमेरपुर

राजस्थान सरकार
कार्यालय अधिशाषी अभियंता चिकित्सा एवं स्वास्थ्य
राजकीय जनाना चिकित्सालय परिसर, मोरी चार बाग भरतपुर 321 001 (राज.)
eemhbharatpur@gmail.com ee-mh-bharatpur@gov.in, Mob. 9602097030
क्रमांक-M&H/2025-26/396 दिनांक 04/04/2025.

निविदा सूचना संख्याः 02/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत विभिन्न कार्य जिला भरतपुर / धौलपुर / करौली में रू. 612.10 लाख के निर्माण कार्य हेतु राजस्थान सरकार के समकक्ष उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में विद्युत कार्यों हेतु पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो. से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट निविदायें आमंत्रित की जाती हैं। निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेब साईट www.dipronline.Org, http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वेब साईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता है।

UBN No.	
SITC of Electric Sub Station and DG Set (External Electrical Work) for Construction of Distt. Hospital Hindaun, Karauli	MHS2526WSOB00108
SITC of Fire Fighting & Fire Detection work for Construction of Distt. Hospital Hindaun, Karauli	MHS2526WSOB00109
SITC of CCTV Surveillence System work for Construction of Distt. Hospital Hindaun, Karauli	MHS2526WSOB00110
Internal Electrification Work at SDH Nagar Distt. Deeg	MHS2526WSOB00111

(एल.के. अग्रवाल)
अधिशाषी अभियन्ता
DIPR/C/5517/2025 चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, भरतपुर

कृषि अनुसंधान केन्द्र
(महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय)
दाहोद रोड़, बोरवट फार्म, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
मो. 8112207969, 9414389929 Mail ID: zdr_arsb@yahoo.com, Visit us : www.mpuat.ac.in
क्रमांक : एफ( )/कृअके/स्टोर/2025/96-106 दिनांक 02.05.2025

आम फलों की नीलामी

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता हैं कि इस केन्द्र के बोरवट फार्म लगभग 7.0 हैक्टर में आम के फलित देशी एवं कलमी पेड़ों (दशहरी, केसर, लगड़ा, मल्लिका, आम्रपाली, बोम्बे ग्रीन, चोसा एवं अन्य) के फलों की खुली नीलामी दि. 12/05/2025 को प्रात: 11.30 बजे, कृषि अनुसंधान केन्द्र, बोरवट फार्म, बांसवाड़ा पर जहाँ है जैसे है की स्थिति में की जानी है। अत: इच्छुक क्रेता समय पर उपस्थित होकर नीलामी में भाग लेवें। बोली लगाने से पूर्व धरोहर राशि रू. 14,000/- नगद जमा करवानी होगी। साथ ही बोली दाता द्वारा कार्यालय द्वारा तय नियम एवं शर्तों की सहमति रू. 100/- के स्टाम्प पर मुद्रित एवं नोटरी करवाकर एवं आधार कार्ड की छायाप्रति तथा एक ब्लेंक चैक (खाली चैक) धरोहर राशि के साथ दिनांक 12.05.2025 को प्रात: 11.30 बजे जमा करावें। अन्तिम बोली जिस व्यक्ति के नाम होगी उसे बोली की राशि की आधी राशि (50 प्रतिशत) तुरन्त जमा करवानी होगी एवं शेष राशि 7 दिन के भीतर जमा करवानी होगी। सम्पूर्ण राशि जमा करवाने के पश्चात ही बगीचे में फल तुड़ाई की स्वकृति मिलेगी। नियम एवं शर्तों की विस्तृत जानकारी एवं बगीचों के अवलोकन हेतु कार्यालय समय (प्रात: 07.30 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक) में सम्पर्क कर सकते हैं।

संभागीय निदेशक अनुसंधान

'नीतीश व चन्द्रबाबू की बैसाखी पर टिकी है दिल्ली की सरकार'

सचिन पायलट ने कहा कि एक भी बैसाखी खिसक गई तो सरकार धराशायी हो जायेगी

- पायलट ने उदयपुर में रघुवीर मीणा के आवास पर प्रेस कॉन्फ्रेंस की। रघुवीर मीणा अशोक गहलोत के नज़दीकी रहे हैं। सलुम्बर उपचुनाव में टिकट नहीं मिलने पर वे गहलोत से नाराज हैं। अब वे पायलट के साथ नज़र आ रहे हैं।
- पायलट ने कहा, कांग्रेस पार्टी पूरे देश में जिलाध्यक्षों को ताकतवर बनाने जा रही है, इसलिए जिलाध्यक्षों को दिल्ली बुलाया गया था।

कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और राजस्थान के पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट सोमवार को उदयपुर दौरे पर रहे। उन्होंने गहलोत के नज़दीकी रहे पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा के आवास पर प्रेस कॉन्फ्रेंस की और भाजपा सरकार पर जमकर निशाना साधा।

उदयपुर, (कासं), 5 मई। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और राजस्थान के पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि चुनावों में 300 और 400 पार की बात करने वाले 240 पर अटक गए। नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू की दो बैसाखियों में से एक बैसाखी खिसक गई, उसी दिन सरकार धराशायी हो जाएगी।

उदयपुर प्रवास पर आये पायलट ने सोमवार को गहलोत के नजदीकी रहे पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा के आवास पर प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि राजस्थान में भाजपा सरकार डेढ़ साल से राज कर रही है लेकिन राजस्थान में नौकरियों और भर्तियों में जो फर्जीवाड़े हुए हैं, उनमें कितने लोगों को अब तक पकड़ा है। छोटे-मोटे लोगों को पकड़कर छोड़ दिया है। प्रभावी कार्रवाई नहीं कर पाए। पायलट बोले, यहां पर अफसरशाही हावी है। जो वायदे किए हैं, भर्तियों के करप्शन को लेकर और आरपीएससी से जुड़े हुए, उनमें से एक भी पूरा नहीं कर पाए। लगता है कि सरकार पर भी दबाव होगा। बता दें कि पूर्व सीएम अशोक गहलोत के नजदीकी रहे रघुवीर मीणा सलूम्बर उप चुनाव में टिकट नहीं मिलने पर नाराज हुए थे। इसके बाद अब वे पायलट के साथ नजर आए हैं।

सरकार पर निशाना साधते हुए पायलट ने कहा कि भाजपा को जुमला देने की बहुत पुरानी आदत है। पहले जुमला दिया था महिला आरक्षण का, लेकिन कब लागू होगा, पता किसी को नहीं। बाप विधायक के रिश्वत लेते पकड़े जाने पर पायलट ने कहा कि राजस्थान में पहली बार इस तरह की घटना हुई है।

पायलट ने कहा कि कांग्रेस की स्थिति कहीं कमजोर नहीं है। हर गांव, ढाणी में कांग्रेस का समर्थक वोटर मौजूद है। उदयपुर संभाग में कांग्रेस का विशेष ध्यान है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी देश में जिलाध्यक्षों को ताकतवर बनाने जा रही है। कांग्रेस पार्टी ने देश में कांग्रेस जिलाध्यक्षों को दिल्ली बुलाया था। पार्टी पूरे देश में जिलाध्यक्षों को और ताकत देना चाहती है।

जातिगत जनगणना के सवाल पर पायलट ने कहा कि कांग्रेस इस मांग को बहुत लंबे समय से उठा रही है। हम चाहते हैं कि समय सीमा बांधकर जातिगत गणना के कार्यक्रम को तैयारी से लेकर आएं।

पहलगाम हमले पर सचिन बोले कि बिना समय गंवाए सरकार को पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए। पहलगाम हमले को लेकर आज भी खड़गे और राहुल गांधी ने कहा कि सरकार जो कदम उठाए, उसको पूरा समर्थन है।

सी.बी.आई. के नए निदेशक के चयन के लिए मीटिंग

नयी दिल्ली, 05 मई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के नये निदेशक का नाम तय करने के लिये सोमवार को यहां चयन समिति की बैठक हुई।

प्रधानमंत्री कार्यालय में आयोजित इस बैठक में उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी

- प्र.मंत्री की अध्यक्षता में हुई बैठक में सी.जे.आई. संजीव खन्ना व नेता प्रतिपक्ष राहुल गाँधी भी शामिल हुए।

शामिल हुये। सीबीआई निदेशक प्रवीण सूद का कार्यकाल 25 मई को समाप्त हो रहा है।

केन्द्रीय सतर्कता आयोग और उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के अनुसार, सीबीआई निदेशक का कार्यकाल कम से कम दो वर्ष का होना अनिवार्य है और न्यायालय ने यह भी व्यवस्था दी है कि इस पद पर उसी अधिकारी के नाम पर विचार किया जा सकता है, जिसका सेवाकाल कम से कम छह माह जरूर बचा हो।

गृहमंत्रालय ने राज्यों से 7 मई को सिविल डिफैंस मॉक ड्रिल करने को कहा

पिछली बार ऐसी मॉकड्रिल 1971 में हुई थी, तब भारत-पाक युद्ध हुआ था

- इस मॉक ड्रिल में लोगों को हवाई हमले से अपना व अन्य लोगों का बचाव करना सिखाया जाएगा और हमले के समय सायरन बजने तथा ब्लैक आउट के बारे में भी अभ्यास कराया जाएगा।
- रविवार की रात को पंजाब के फिरोज़पुर में ब्लैक आउट प्रैक्टिस की गई, गांवों व मोहल्लों में रात 9 से 9.30 बजे बिजली बंद रही।

नई दिल्ली, 05 मई। पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद पाकिस्तान के साथ बढ़ ते तनाव के बीच गृह मंत्रालय ने राज्यों से, हमले की स्थिति में बचाव की तैयारियों के बारे में लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से सिविल डिफेंस मॉक ड्रिल करने को कहा है।

सूत्रों के अनुसार.मंत्रालय ने राज्यों से परसों, यानी सात मई को यह मॉक ड्रिल करने को कहा है।

मॉक ड्रिल में लोगों को, विशेष रूप से हवाई हमले के समय, अपना और अन्य लोगों का बचाव करने की जानकारी देने के साथ-साथ, अभ्यास कराया जाएगा। लोगों को हमले के समय सायरन बजने और ब्लैक आउट के बारे में बताया जाएगा। यह ड्रिल नागरिक सुरक्षा को प्रभावी बनाने के लिए की जाएगी, जिसका उद्देश्य किसी भी हमले की स्थिति में नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

उल्लेखनीय है कि पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद से पाकिस्तान के साथ तनाव बढ़ा हुआ है। इस हमले में आतंकवादियों ने 26 लोगों की जघन्य हत्या कर दी थी। भारत ने कहा है कि इस हमले के दोषी आतंकवादियों और उनकी सहायता तथा समर्थन करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

देश में पिछली बार ऐसी मॉक ड्रिल 1971 में हुई थी। तब भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ था। यह मॉक ड्रिल युद्ध के दौरान हुई थी।

रविवार-सोमवार रात पंजाब के फिरोजपुर छावनी में ब्लैकआउट की प्रैक्टिस की गई। इस दौरान गांवों और मोहल्लों में रात 9 बजे से 9:30 बजे तक बिजली बंद रही।

मॉक ड्रिल के दौरान सबसे पहले, एयर रेड वार्निंग सायरन को चालू किया जाएगा। इसका मतलब है कि हमले की चेतावनी देने वाला सायरन बजाया जाएगा। नागरिकों और छात्रों को सिविल डिफेंस के बारे में प्रशिक्षित किया जाएगा। उन्हें ट्रेनिंग दी जाएगी कि हमले की स्थिति में खुद को कैसे बचाएं। इसके साथ ही क्रैश ब्लैक आउट के उपाय किए जाएंगे। अर्थात्, हमले के दौरान रोशनी बंद करने, यानी क्रैश ब्लैक आउट की व्यवस्था की जाएगी। महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों को जल्दी से छिपाने की व्यवस्था की जाएगी। प्लांट्स और जरूरी जगहों को दुश्मनों से बचाने के लिए उन्हें कैसे जल्द से जल्द छिपाया जाए, यह बताया जाएगा।

निकासी योजना, अर्थात इवैकुएशन प्लान क्या होगा, इस बारे में लोगों को अपडेट किया जाएगा। इसके साथ ही, इवैकुएशन अभ्यास भी किया जाएगा। इवैकुएशन प्लान का मतलब है कि लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाने की योजना, अर्थात युद्ध की स्थिति में कैसे आम लोगों को सुरक्षित जगह ले जाएं, इसकी तैयारी की जाएगी।

'जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रही है।

विशेषज्ञों का मानना है कि नई दिल्ली जिसे सीमा पार से स्थायी आतंकी अभियान के रूप में देखती है, उसे पूरी तरह निष्प्रभावी कर देने के लिए, विभिन्न मोर्चों और विकल्पों को खंगाल रही है, जिनमें शामिल हैं - कूटनीति दबाव, आर्थिक प्रतिबंध, साइबर वॉरफेयर क्षमताएं तथा क्रॉस-बॉर्डर इनटेलिजेंस ऑपरेशन।

विदेश मंत्रालय के सूत्रों ने भी संकेत दिया है कि वैश्विक ताकतों, खासतौर से अमेरिका, फ्रांस तथा रूस, के साथ कूटनीतिक सम्पर्क तेज किए जा रहे हैं, ताकि पाकिस्तान को अलग-थलग किया जा सके तथा अंतर्राष्ट्रीय प्लेटफॉर्म पर उसे जवाबदेह ठहराया जा सके।

चूंकि इस समय तनाव चरम पर है, इसलिए जम्मू-कश्मीर में सीमावर्ती चौकियों पर सेना चुस्त-दुरूस्त कर दी गई है तथा सैनिकों की तादाद बढ़ा दी गई है तथा किसी प्रकार की घुसपैठ के प्रयासों या हमलों को निष्फल करने के लिए खुफिया एजेंसियां हाई अलर्ट पर कर दी गई हैं।

जहां जनता की भावनाएं तत्काल बदले की मांग कर रही हैं, वहीं भारतीय नेतृत्व दूरगामी प्रभाव वाला खेल खेलता प्रतीत हो रहा है तथा किसी संभावित सैन्य टकराव में उलझने के बजाय, सीमा-पार के आतंकवाद के मूल कारणों को ध्वस्त करने पर फोकस कर रहा है।

इस समय, भारत प्रतीक्षा की मुद्रा में है, लेकिन अटल संकल्प के साथ। साउथ ब्लॉक का स्पष्ट संकेत है : अगर, और जब भी, प्रतिशोध लिया जायेगा, वह भारत की शर्तों पर लिया जायेगा और वह सुविचारित, व्यापक और अधिकतम प्रभावी होगा।

विधायक पटेल के रिश्तेदार ने 20 लाख रुपये जमीन में गाड़ दिये थे

ए.सी.बी. ने प्रताप नगर इन्दिरा गांधी नगर के मकान में जमीन में दबी राशि बरामद की

- वकीलों की हड़ताल के कारण पुलिस विधायक को पैदल लेकर कोर्ट पहुंची।

जयपुर, 5 मई। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने बागीदौरा विधानसभा जिला बांसवाड़ा के भारत आदिवासी पार्टी (बाप) विधायक जयकृष्ण पटेल के रिश्वत में लिए बीस लाख रुपए बरामद कर लिए। जानकारी में सामने आया कि विधायक ने पैसा भांजे को दे दिया था और भांजे ने पैसे रिश्तेदार को दे दिए। रिश्तेदार ने यह पैसे जमीन में गाड़ दिए। एसीबी टीम ने जमीन में दबे रुपए निकाल लिए।

एसीबी पुलिस महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहरडा ने बताया कि एसीबी जांच में सामने आया है कि विधायक पटेल ने रिश्वत की यह रकम अपने भांजे रोहित को सौंपी थी। जिसने रकम को आगे रिश्तेदार जसवंत को सौंप दिया। जसवंत ने रकम को अपने परिचित जगराम को सौंप दिया और पैसे को जमीन में छिपाने के लिए कहा। जहां एसीबी की टीम ने मोबाइल सर्विलांस के आधार पर जसवंत को ट्रेस कर हिरासत में लिया। करीब ढाई घंटे की पूछताछ में जसवंत ने खुलासा किया कि रकम जगराम के पास है। इसके बाद एसीबी टीम जगराम के प्रतापनगर, इंदिरा गांधी नगर स्थित घर पहुंची और वहां से जमीन में दबे हुए 20 लाख रुपए बरामद कर लिए।

पूछताछ में यह भी सामने आया कि रिश्वत की यह राशि एक प्रॉपर्टी डीलिंग के बहाने ली गई थी। लेकिन सौदा नहीं हुआ। इसलिए जगराम को पैसे छिपाने के निर्देश दिए गए थे। एसीबी की टीम विधायक जयकृष्ण को लेकर एसीबी कोर्ट पहुंची। वकीलों की हड़ताल होने के कारण विधायक को पैदल लाया गया था। इधर विधायक जयकृष्ण पटेल को एसीबी ने कोर्ट में पेश किया। कोर्ट ने विधायक और उसके चचेरे भाई को दो दिन की रिमांड पर सौंप दिया। इसके बाद एसीबी टीम विधायक को मुख्यालय लेकर चली गई। वहीं दूसरी तरफ एसीबी ने विधायक आवास के सभी सीसीटीवी फुटेज को सीज कर लिया है। सर्वर रूम की एफएसएल से जांच करवाई जाएगी।

गौरतलब है कि एसीबी ने रविवार को कार्रवाई करते हुए बागीदौरा विधानसभा जिला बांसवाड़ा से भारत आदिवासी पार्टी (बाप) के विधायक जयकृष्ण पटेल और दलाल विजय कुमार पटेल को बीस लाख रूपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया था। भारत आदिवासी पार्टी (बाप) के विधायक जयकृष्ण ने विधानसभा में खनन विभाग से संबंधित उठाए गए सवालों को वापस लेने के लिए 10 करोड़ की डिमांड की थी और बाद में 2.5 करोड़ रुपए में सौदा हुआ था। जब एसीबी टीम विधायक के आवास पर पहुंची थी तो एक व्यक्ति ये रुपए लेकर भाग गया था।

ए.सी.बी. कोर्ट ने विधायक और दलाल को सौंपा दो दिन के रिमांड पर

जयपुर, 5 मई। एसीबी मामलों की विशेष अदालत ने विधानसभा में लगाए गए सवाल को वापस लेने की एवज में रिश्वत लेने के मामले में गिरफ्तार बांसवाड़ा के बागीदौरा से भारत आदिवासी पार्टी के विधायक जयकृष्ण पटेल और उसके चचेरे भाई व दलाल विजय कुमार उर्फ विक्की को दो दिन के पुलिस रिमांड पर एसीबी को सौंप दिया है। एसीबी की ओर से दोनों आरोपियों को विशेष अदालत में पेश किया गया। एसीबी ने रिश्वत की बीस लाख रुपए की राशि बरामद करने सहित अन्य बिंदुओं पर आरोपियों की चार दिन की पुलिस रिमांड मांगी। इस पर अदालत ने दोनों को सात मई तक पुलिस रिमांड पर भेजा है। एसीबी ने रविवार 4 मई को विधायक जयकृष्ण पटेल को गिरफ्तार किया था। मामले के अनुसार शिकायतकर्ता रविन्द्र सिंह ने गत चार अप्रैल को एसीबी अधिकारियों को विधायक के बारे में शिकायत दी थी। शिकायत में कहा गया कि विधायक ने खनन को लेकर विधानसभा में कुछ सवाल लगाए थे। इन्हें वापस लेने की एवज में विधायक ने पहले उससे दस करोड रुपए मांगे, वहीं बाद में सौदा 2.5 करोड रुपए में तय हुआ। शिकायत पर एसीबी ने उसका सत्यापन कराया, जिसमें विधायक बार-बार शिकायतकर्ता को फोन कर पैसा देने को कहा रहा था। वहीं 3 मई रात को विधायक ने फोन कर शिकायतकर्ता को 4 मई सुबह जयपुर में मिलने को कहा। सुबह करीब 11.30 बजे शिकायतकर्ता पैसा लेकर विधायक आवास पहुँचा। शिकायतकर्ता ने कार में ही विधायक को रुपए दिए, जिनको विधायक ने कार में बैठकर गिना। इसके बाद विधायक ने पैसा किसी अन्य व्यक्ति को दिया, जो पैसा लेकर निकल गया। एसीबी ने विधायक को उसी दौरान डिटेन कर उनके हाथ धुलाए गए तो उसके हाथ लाल हो गए।

मुख्यमंत्री भजनलाल विधायकों के साथ गुड गवरनैंस कैंप के लिए गुजरात पहुँचे

इस प्रशिक्षण शिविर को राष्ट्रीय अध्यक्ष नड्डा व गृहमंत्री अमित शाह संबोधित करेंगे

- नर्मदा जिले में प्रवेग टेंट सिटी में राजस्थान के सभी विधायक व सांसद भाग ले रहे हैं। कैंप में सत्ता-संगठन समन्वय, जनता से संवाद तथा पार्टी की रीति-नीति के अनुरूप कार्यशैली सिखायी जायेगी।

जयपुर, 5 मई। राजस्थान के सभी भाजपा सांसद और विधायक अब सुशासन का पाठ पढ़ेंगे। इसके लिए गुजरात के नर्मदा जिले में स्थित प्रतिष्ठित प्रवेग टेंट सिटी में तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर की शुरुआत आज से होगी। जिसे भाजपा ने "सुशासन कांफ्रेंस" नाम दिया है। यह शिविर 5 मई से 7 मई तक चलेगा। पहले दिन पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा विधायकों और सांसदों को संबोधित करेंगे। प्रशिक्षण शिविर का मकसद जनप्रतिनिधियों को सत्ता-संगठन समन्वय, सुशासन की अवधारणा, जनता से संवाद और पार्टी की नीति के अनुरूप कार्यशैली सिखाना है।

कांफ्रेंस में भाग लेने के लिए प्रदेश के सभी सांसद और विधायक गुजरात पहुंच रहे हैं। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा चार्टर्ड प्लेन से, 40 से ज्यादा विधायक सांसद फ्लाइट से और शेष सांसद और विधायक अपने निजी वाहनों से कॉन्फ्रेंस से भाग लेने के लिए पहुंच रहे हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ एक दिन पहले ही अहमदाबाद पहुंच गए हैं। कॉन्फ्रेंस 7 मईशाम 5 बजे समाप्त होगी।

बताया जा रहा है समापन सत्र को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह संबोधित कर सकते हैं। तीन दिन चलने वाली सुशासन कांफ्रेंस में विभिन्न सत्र आयोजित किए जाएंगे। प्रस्तावित कार्यक्रम के अनुसार 5 मई को शाम 6 बजे सबसे पहले स्वागत सत्र होगा। जिसे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा संबोधित करेंगे। इस कार्यशाला के सभी सत्रों में विधायकों का रहना अनिवार्य किया गया है।

कार्यशाला में सभी सांसद-विधायकों को सुशासन का पाठ पढ़ाया जाएगा। राजस्थान के जनप्रतिनिधियों को गुजरात में ट्रेनिंग मिलेगी। पार्टी की रीति-नीति के अनुरूप कार्यशैली का पाठ सिखाया जाएगा।

कैंप में तीन दिन तक सत्ता संगठन समन्वय, जनता समन्वय, सुशासन की अवधारणा, पार्टी की रीति-नीति के तहत जनता की सेवा आदि विषय पर राष्ट्रीय नेता अपना अपना संबोधन देंगे। कॉन्फ्रेंस में राजस्थान के 139 सांसद और विधायकों में से 137 विधायक और सांसद भाग लेने के लिए पहुंच रहे हैं।

पंचायत और निकाय चुनाव संभावित हैं। सत्ता में रहते हुए भाजपा की रणनीति है कि ग्रामीण स्तर पर पकड मजबूत की जाए। इसके लिए जनप्रतिनिधियों को योजनाओं के प्रचार-प्रसार और पात्र लाभार्थियों तक योजनाएं पहुंचाने की जिम्मेदारी दी जाएगी। माना जा रहा है कि इस कॉन्फ्रेंस के जरिये पार्टी राजस्थान में आगामी पंचायत और निकाय चुनावों की तैयारी भी करेगी।

एस.आई.भर्ती ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

से अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल राज दीपक रस्तोगी ने कहा कि मामले में ईडी प्रारंभिक जांच कर रही है। जेल में बंद दो आरोपियों के भी जल्द ही बयान दर्ज किए जाएंगे। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता हरेन्द्र नील ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने समान मुद्दे पर बंगाल शिक्षक भर्ती को रद्द किया है। अदालत ने एसआई भर्ती पर निर्णय करने के लिए राज्य सरकार को पहले ही दो माह का समय दे दिया है। सरकार को अब और समय नहीं दिया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने भर्ती पर निर्णय करने के लिए राज्य सरकार को 15 मई तक का समय दिया है।

वक्फ मामलों की सुनवाई नए सी.जे.आई. की खंडपीठ करेगी

नयी दिल्ली, 05 मई। उच्चतम न्यायालय ने वक्फ संशोधन अधिनियम की वैधता को चुनौती देने वाली विभिन्न याचिकाओं के कुछ विवादास्पद मुद्दों को सुनवाई के लिए स्वीकार करते हुए कहा कि पूरे मामले की मनोनीत मुख्य न्यायाधीश जस्टिस बी आर गवई की अध्यक्षता वाली पीठ 15 मई को सुनवाई करेगी।

मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति संजय कुमार तथा न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की अध्यक्षता वाली पीठ ने विवादास्पद मुद्दे को स्वीकार करते हुए कहा कि सरकार द्वारा देश की वक्फ संपत्तियों के रूप में पेश किए गए 3921236.459 एकड़ भूमि के आंकड़े पर सर्वोच्च न्यायालय विचार करेगा, जिस पर दूसरे पक्षों द्वारा आपत्ति की जा रही है। हालांकि, 13 मई को सेवानिवृत्त होने वाले न्यायमूर्ति खन्ना ने कहा कि वह अंतरिम चरण में भी इस मामले में फैसला सुरक्षित नहीं रखना चाहेंगे, इसलिए मामले की सुनवाई 15 मई को होगी। नामित मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति गवई की अध्यक्षता वाली पीठ मामले की सुनवाई करेगी।

पीठ ने वक्फ संशोधन अधिनियम, 2025 की वैधता को चुनौती देने वाले मामलों पर सुनवाई शुरू करते हुए कहा, हमने जवाबी दलीलों पर गौर किया है। हां, पंजीकरण और कुछ आंकड़ों पर कुछ मुद्दों पर सवाल उठाए गये हैं, और याचिकाकर्ताओं ने आपत्तियां दर्ज की हैं। इन पर विचार किए जाने की जरूरत है।

मुख्य न्यायाधीश ने कहा, इस मामले की सुनवाई किसी भी उचित दिन होनी चाहिए। यह मेरे समक्ष नहीं होगा। हम इसे जस्टिस गवई की पीठ के समक्ष रखेंगे।

'अपने चैनल पर पाकिस्तानी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लेकर भी मीडिया के उस वर्ग में सवाल उठ रहे हैं, जो सरकार के बढ़ते हस्तक्षेप को लेकर आशंकित है। एक अन्य वरिष्ठ पत्रकार ने नाम नहीं बताने की शर्त पर बताया कि यह एडवायज़री एक तरह से सैंसरशिप का संकेत है, खासकर पहलगाम हमले में हुई सुरक्षा चूक के बाद। प्रैस की आज़ादी व कूटनीति पर एडवायज़री के परिणामों पर बारीकी से नज़र रखी जा रही है।

'राजनीतिक आधार पर सरकारी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रखते हुए की जाए तो इससे न्याय में तेजी आएगी। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से पेश महाधिवक्ता से अदालत ने पूछा कि क्या समान मामले में पूर्व में कोई याचिका पेश हुई थी? इस पर एजी ने कहा कि एक प्रकरण जोधपुर मुख्यपीठ और एक प्रकरण जयपुर पीठ में लंबित चल रहा है। इस पर अदालत ने दोनों प्रकरणों में दिए आदेशों की कॉपी पेश करने के आदेश देते हुए मामले की सुनवाई दो सप्ताह के लिए टाल दी है।

आई.एम.एफ. के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आया है, उसको धक्का लगेगा।

इसका असर वित्तीय बाजारों की मौजूदा तेजी पर भी पड़ सकता है, जिससे भारत में विदेशी निवेश की आवक धीमी हो सकती है। ट्रंप की "चीन को अलग-थलग करने" की नीति और चीन केन्द्रित सप्लाई चेन को अन्यत्र स्थानांतरित करने के प्रयासों के कारण भारत को बड़ा लाभ मिल रहा है। वास्तव में, अब भारत में मैन्युफैक्टरिंग केन्द्र स्थापित करने में देशों की रुचि बढ़ रही है, और भारत, चीन और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों की तुलना में उत्पादन के लिए बेहतर विकल्प बन रहा है।

रिपोर्ट्स ये भी हैं कि अमेरिका और पश्चिमी देश चाहते हैं कि भारत कश्मीर के पहलगाम हमलों के बाद युद्ध और आंतरिक अशांति में उलझ जाए। भारतीय सेना सीमाओं पर सैन्य कार्रवाई करने में सक्षम है, लेकिन आंतरिक गृह युद्ध की स्थिति को संभालना उसके लिए कठिन होगा।

प्रदेश में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कहा कि लू को राष्ट्रीय आपदा घोषित किया जा चुका है। इसके साथ ही लू सहित जलवायु संरक्षण को लेकर एक्शन प्लान बनाया गया है। गौरतलब है कि हाईकोर्ट की एकलपीठ ने गत वर्ष तीस मई को मामले में स्वप्रेरणा से प्रसंज्ञान लेते हुए कई अंतरिम निर्देश दिए थे। इसके साथ ही मामले को सुनवाई के लिए खंडपीठ में भेजा गया था। वहीं समान एकलपीठ ने गत दिनों एक बार फिर से इसी मुद्दे पर पुन: स्वप्रेरित प्रसंज्ञान लेकर मामले को जनहित याचिका के तौर पर सूचीबद्ध करने को कहा था।

राज्य भंडारण निगम ने श्री शुभम लॉजिस्टिक और सहायक ...

- जैसा कि विदित है कि पिछली गहलोत सरकार के दौरान राज्य भंडारण निगम और श्री शुभम लॉजिस्टिक तथा उसकी सहायक कंपनी के बीच कृषि उपज के भंडारण और रख-रखाव के अनुबंधन में भारी अनियमितताओं के आरोप हैं। इस मामले में कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने सीएजी की रिपोर्ट को उद्धृत करते हुए मुख्यमंत्री को शिकायती पत्र लिखा था।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भी लिखा था जिसमें आरोप लगाए गए थे कि श्री शुभम लॉजिस्टिक अशोक गहलोत के करीबियों की कंपनी है, और इसी वजह से इस कंपनी को भण्डारण निगम से अनुबंधन कराकर 120 करोड़ से भी अधिक का फायदा पहुंचाया गया, दूसरी ओर इस अनुबंधन की वजह से राज्य भण्डारण निगम को 202 करोड़ रूपए का नुकसान हुआ। कृषि मंत्री ने यह भी आरोप लगाया था शुभम लॉजिस्टिक और ओरिगो कमॉडिटीज़ इण्डिया ने अनुबंधन की शर्तो के विरूद्ध जाते हुए

भण्डारण निगम के गोदामों पड़ी 3000 करोड़ मूल्य की कृषि उपज को सुरक्षित करने के लिए बीमा नहीं करवाया था, जिससे खराबे या काला बाजारी की वजह से आम किसान और राज्य सरकार को भारी नुकसान उठाना पड़ा, क्योकि अधिकतर कृषि उपज न्यूनतम मूल्य पर खरीदी गई थी।

राजस्थान राज्य भण्डारण निगम ने वाणिज्यिक कोर्ट के समक्ष दायर याचिका में कहा है कि करणी सिंह राठौड़, जो शुभम लॉजिस्टिक/ओरिगो कमॉडिटीज़ बनाम राजस्थान राज्य भण्डारण निगम के बीच 2023 में चल रहे दो अलग-अलग विवाद में 'सोल आरबिट्रेटर' नियुक्त किये गए थे, यानि के.एस. राठौड़ को भली भांति पता था कि उन्हे नीति के विरूद्ध, एक ही वर्ष में, एक ही मसले में उलझी हुई पार्टियों के समक्ष दो अलग-अलग बार मध्यस्थता के लिए नियुक्त किए गए।

हैरानी की बात है कि मध्यस्थता करने के लिए नियुक्ति से पहले दिये गये 'डैक्लेरेशन" में भी के.एस. राठौड़ ने यह तथ्य उजागर नहीं किया, जो नियम-कायदों के विरूद्ध है।

हैरानी की बात है कि दो मामलों में के.एस. राठौड़ ओरिगो और शुभम लॉजिस्टिक के पक्ष में फैसला दिया और दूसरी ओर राजस्थान राज्य भण्डारण निगम को 202 करोड़ रूपए की हानि पहुंचाने के दावे के मामले में दो वर्षों से फैसला नहीं दिया है, जबकि मुख्य सचिव की अध्यक्षता में हुई बैठकों, सी.ए.जी. की रिपोर्ट और विभागीय जांचों में यह स्पष्ट हो चुका है कि श्री शुभम लॉजिस्टिक तथा ओरिगो कमॉडिटीज़ इंडिया ने राज्य भण्डारण निगम के साथ हुए अनुबंधन की शर्तों का उल्लंघन किया, जिससे भण्डारण निगम को भारी हानि हुई और दोनों कंपनियों को 120 करोड़ रूपये का अवांछनीय लाभ हुआ और साथ-साथ 3000 करोड़ से भी अधिक की कृषि उपज का बीमा नहीं कराकर किसानों की फसल और राज्य सरकार की संपत्ति को जोखिम में डाला गया।

उल्लेखनीय है कि पिछली गहलोत सरकार के अन्तिम वर्ष में के.एस. राठौड़ राज्य भण्डारण निगम और शुभम लॉजिस्टिक/ओरिगो कॉमोडिटिज से जुड़ सात मामलो में सोल आरबिट्रेटर नियुक्त किये गये थे। जिसमें उन्होंने राजस्थान राज्य भण्डारण निगम को किसी भी आदेश में कोई राहत नहीं दी है, बल्कि उनके राज्य भण्डारण निगम के खिलाफ कुछ आदेशों को वाणिज्यिक कोर्ट ने खारिज किया है और अपील में सुप्रीम कोर्ट ने भी उनके आदेशों को पूर्णतया सही नहीं पाया।

महाकाल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर बना है। इसी कंट्रोल रूम में अचानक आग लग गई और कुछ ही देर में आग बड़े क्षेत्र में फैल गयी। आग शार्ट सर्किट की वजह से लगी बतायी जा रही है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908